हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

27 मार्च, 1982

खण्ड 1, अंक 11

अधिकृत विवरण

भानिवार, 27 मार्च, 1982

विशय सूची

	पृश्ठ संख्या
विभिन्न विशयों का उठाया जाना	(11)1
वाक आउट	(11)6
वर्श 1982–83 के बजट पर सामान्य चर्चा (पुनरारम्भ)	(11)7
वाक आउट	(11)24
वर्श 1982–83 के बजट पर सामान्य चर्चा (पुनरारम्भ)	(11)24
बैठक का समय बढ़ाना	(11)59
वर्श 1982–83 के बजट पर सामान्य चर्चा (पुनरारम्भ)	(11)60

हरियाणा विधान सभा

भानिवार, 27 मार्च, 1982

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन, सैक्टर–1, चण्डीगढ़ मे प्रातः 9.30 बजे हुई। अध्यक्ष (कर्नल राव राम सिंह)

ने अध्यक्षता की।

विभिन्न विशयों का उठाया जाना

श्री अध्यक्षः मैम्बर साहेबान, अब वर्श 1982–83 के बजट पर जनरल डिस्क ान डिज्यूम होगी। (ाोर एवं विघ्न)

श्री कंवल सिंहः स्पीकर साहब, मेरी एक सबमि ान है। स्पीकर साहब, मैं आपका ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं कि श्री बलदेव तायल की जो वन मैन इन्क्वायरी कमेटी की रिपोर्ट की लीकेज के बारे मे आपने राव रामनारायण की चेयरमैन ाीप मे एक स्पे ाल कमेटी इंस्टीच्यूट की थी उसकी रिपोर्ट 23 तरीख को हाउस मे पे ा होनी चाहिए थी लेकिन वह रिपोर्ट हाउस मे नही आई है। वह रिपोर्ट हाउस मे कब तक पे ा कर दी जायेगी ?

श्री अध्यक्षः मैं इस बारे मे सोमबार को 4.00 बजे अपनी रूलिंग दूंगा।

चौधरी उदय सिंह दलालः स्पीकर साहब, मैं आपसे प्रार्थना करूंगा और आपकी रूलिंग को चाहूंगा। मैं किसी बूरी भावना से किसी सदस्य के खिलाफ कुछ भी नही कहूंगा। स्पीकर साहब, हाउस की जितनी भी कमेटियों बनी हुई है। उनकी रिपोर्ट जो आपके पास आ चुकी है उनको हाउस मे पे ा किया जाये। मैं आपके माध्यम से सरकार से प्रार्थना करूंगा कि लीडर आफ दि हाउस इस मामले के बीच मे न आये। किसी भी कमेटी ने पता नही क्या रिपोर्ट लिखी है। लेकिन स्पीकर साहब, जिन कमेटियों की रिपोर्ट आपके पास आ चुकी है। उनको आप हाउस के सामने पे ा कर दें। जो भी रिपोर्ट आपके पास आ चुकी है यदि आप उनको 30–3–82 से पहले हाउस मे पे ा नही करेंगे तो हम यह समझेंगे कि सरकार उन रिपोर्टो को हाउस मे पे ा होने मे रूकावट डाल कर आपकी कुर्सी का मिसयूज करने की कोि ाश मे लगी हुई है।

श्री अध्यक्षः मेरे पास मिस्टर गर्ग से संबंधित प्रिविलेज कमेटी की एक रिपोर्ट आई थी मैंने उसको ब्लोक कर दिया है।

चौधरी उदय सिंह दलालः स्पीकर साहब, मेरी आपसे बार बार प्रार्थना है कि आपके पास जो रिपोर्ट आ चुकी है उनको हाउस मे पे ा कर दिया जाये।

श्री हीरा नंद आर्यः स्पीकर साहब, हम यह जानना चाहते है कि प्रिविलेज कमेटी की तरफ स्वामी आदित्यवे ा और चौधरी संत कंवर के बारे मे रिपोर्ट आपके पास आ चुकी है या नही ? अगर आ चुकी है तो वह रिपोर्ट हाउस मे कब तक पे ा की जायेगी?

श्री अध्यक्षः प्रिविलेज कमेटी की तरफ से मेरे पास एक रिपोर्ट आई हे यह मुझे ध्यान नही है कि वह किस मामले से संबंधित है।

श्री हीरा नंद आर्यः स्पीकर साहब, जिन कमेटियों की रिपोर्ट आपके पास आ चुकी है वे कम से कम हाउस मे तो पे ा हो जानी चाहिए। (ाोर व विघ्न)

चौधरी उदय सिंह दलालः स्पीकर साहब, जिन कमेटियों का बिजनैस पूरा हो गया है ओर अपनी रिपोर्ट आपको दे दी है, वे रिपोर्टस हाउस मे पे ा होनी चाहिए। जिन जिन कमेटियों की रिपोर्ट आपके पास आ चुकी है वे हाउस मे पे ा की जाये।

श्री अध्यक्षः प्रिविलेज कमेटी की तरफ से एक रिपोर्ट मेरे पास कल या परसों आई है मैं उसको एग्जामिन करूंगा। (ाोर व विघ्न)

श्री हीरा नंद आर्यः स्पीकर साहब, मेरी आपसे प्रार्थना है कि प्रिविलेज कमेटी की रिपोर्ट आपके पास आ चुकी है । अतः वह रिपोर्ट हाउस मे कब तक आ जायेगी।

श्री अध्यक्षः आर्य साहब, मेरे पास एक रिपोर्ट आई है। मुझे ध्यान नही है कि वह रिपोर्ट किसके बारे मे है। Every report that has been sent tome will come before the House.

श्री हीरा नंद आर्यः स्पीकर साहब, बहुत सी कमेटियों की रिपोर्टें तैयार हो चुकी है और आपके पास आ चुकी है। लेकिन सरकार उन रिपोर्टों को हाउस मे पे ा होने मे डिले करवाना चाहती है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि सारी रिपोर्टों को हाउस मे पे ा किया जाये ताकि उन पर बहस हो सके।

श्री अध्यक्षः आर्य साहब, सरकार को यह पता भी नही होगा कि कौन सी रिपोर्ट आ चुकी है और कौन सी रिपोर्ट नही आई है।

चौधरी राम लाल वधवाः स्पीकर साहब, मैने आपकी सेवा मे एक प्रिविलेकज मो ान का नोटिस दिया था। वह नोटिस आपकी सेवा मे मैंने 17 तारीख को दिया था । मैने उसमे कहा है कि स्वामी आदित्यवे ा ने अपने दौरे मे डबल ट0ए0, डी0ए0 लिया है। लेकिन आज 10 दिन हो गये है वह मो ान अभी तक हाउस मे पे ा नही हुआ है।

Mr. Speaker: I had referred it for detailed examination of position about ot alleged claiming of T.A. & D.A. by Swami Aditya Vesh. उसमे बड़ा लैंथी काम है। इस बारे मे, मैं अपनी रूलिंग मंडे को 4.00 बजे दूंगा।

चौधरी राम लाल वधवा: स्पीकर साहब, सबोर्डीनेट लैजिस्ले ान कमेटी की रिपोर्ट आपको बहुत पहले दे दी गई थी। वह हाउस मे आ जानी चाहिए थी। वह रिपोर्ट हाउस मे कब तक आ जायेगी?

Mr. Speaker: It will come on the 30th.

स्वामी आदित्यवे ा: स्पीकर साहब, मेरा व्यवस्था का प्र न है और मैं आपकी रूलिंग भी चाहूंगा। अध्यक्ष महोदय, हरियाणा विधान सभा का जितना भी कार्य है वह सारे का सारा पहले अंग्रेजी मे किया जाता है ओर उसके बाद मे उसका अनुवाद हिन्दी मे किया जाता है। अध्यक्ष महोदय, आपकी तरफ से भी लगातार यह कोि ा ा रही है कि हरियाणा विधान सभा का ज्यादा से ज्यादा कार्य हिन्दी मे हो। मैं इस बात की भी सराहना करता हूं कि मुख्य मंत्री जी ने भी इसकाम मे अपना सहयोग दिया हैं। लेकिन आज तक हरियाणा राज्य के सभी विभागों का तमाम काम अंग्रेजी मे ही होता है। जितने भी हिन्दी भाशी राज्य है उन्होंने अपना सारा काम मूलतः लीगल कार्य भी हिन्दी मे करना भाुरू कर दिया है लेकिन उसका अनुवार अंग्रेजी मे हो जाता है। अध्यक्ष महोदय, मैं चाहता हूं आप अपने आदे ा के द्वारा सरकार को इस बात के लिये प्रेरित करें कि वह अपना मूल कार्य हिन्दी मे करे और उसका अनुवाद बे ाक अंग्रेजी मे कर दे लेकिन मूल कार्य हिन्दी मे होना चाहिए। मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि आप

इस काम के लिये 15 अगस्त तय कर दे और उसके बार हरियाणा राज्य का सारा काम हिन्दी मे होना चाहिए।

श्री अध्यक्षः स्वामी जी इस बारे मे मेरी रूलिंग यह है कि यहां पर हिन्दी, इंगलि ा और पंजाबी तीन जुबानों का इस्तेमाल हो सकता है। मैं आपकी तरफ से हिन्दी भाशा को सबसे ज्यादा महत्व देने की कोि ा ा करता हूं। जहां तक लीडर आफ दि हाउस का सवाल है, उन की तरफ से गवर्नमैंट को डायरेक ांज है कि हिन्दी भाशा को ज्यादा से महत्व दिया जाये । यह बात तो लीडर आफ दि अपोजी ान भी मानते है कि मैंने हिन्दी भाशा को ज्यादा से ज्यादा महत्व दिया है। लेकिन मेरा एक और भी विचार है कि इस काम मे ज्यादा जल्दवाजी नही करनी चाहिए। इस काम को ज्यादा फोर्स करने से कोई और रूकावट भी पैदा हो सकती है।

श्री जय नारायण वर्माः महर्शि दयानंद यूनिवर्सिटी के बी0ए0, एम0एस के विद्यार्थियों ने नवम्बर, 1981 मे एकेडेमिक डिग्री पूरी कर ली थी। उन्हे 6 महीने के लिये हाउस जौब (इनटर्न ाप) के लिये भेजा जाता है । लेकिन अभी तक यूनिवर्सिटी और सरकार के विवाद के कारण उन्हें हाउस जौब पर नही भेजा गया । सभी छात्र परे ाान है। वे न तो सर्विस कर सकते है और न ही अपनी प्रैक्टिस कर सकते है। सरकार इस मामले को तुरंत तय करें ताकि उन्हें परे ाानियों से बचाया जा सके।

श्री अध्यक्षः आप लिख कर दीजिये। मैं उसको एग्जामिन करूंगा।

श्री मूल चंद जैनः स्पीकर साहब, मैं आपके माध्यम से सी0एम0 साहब का और सदन का ध्यान एक महत्वपूर्ण बात की तरफ दिलाना चाहता हूं कि परसों डिमांडज फारा ग्रांटस पर बहस भाुरू होगी। लेकिन स्पीकर साहब, आप यह सुन कर हैरान होंगे कि चंद डिपार्टमैंटस के अलावा किसी भी डिपार्टमैंट की तरफ मार्च 1981 तक की एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट भााया नही हुई है। मै। इस मामले मे यह गलती एडमिनिस्ट्रे ान की तरफ से कहूं या किसी और की तरफ से कहूं लेकिन मैं इतना जरूर कह सकता हूं कि किसी भी डिपार्टमैंट की तरफ से मार्च 1982 तक की एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट भााया नही हुई है। स्पीकर साहब, यह लापरवाही इसी साल से नही हो रही पिछले साल भी यह लापरवाही हुई थी। पिछले साल मैंने चीफ सेक्रेटरी साहब को इस बारे मे चिट्ठी लिखी थी कि किसी भी डिपार्टमैंट की तरफ से एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट भााया नही हुई है। इसके लिये कायदा कानून यह है कि सैक्रेटरीज आफ डिपार्टमैंटस की तरफ से साल खत्म होने के 6 महीने के अंदर रिपोर्ट आ जानी चाहिए थी। जो साल 31–3–81 को खत्म हुआ उस साल की रिपोर्ट सितम्बर तक आनी चाहिए थी। लेकिन स्पीकर साहब, आप हैरान होंगे कि 1978–79 की रिपोर्ट अब आ रही है और 1979–80 की रिपोर्ट भी अब आ रही है। स्पीकर साहब, मैं पार्लियामैंट का मैंबर रहा हूं।

पार्लियामैंट ने मिनिस्टर को रिपोर्ट दे दी हो और मिनिस्टर उस रिपोर्ट को दबा कर बैठ गये हो। मैंने इस साल भी चीफ सैक्रेटरी साहब को चिट्ठी लिखी लेकिन उन्होंने उसका कोई जवाब चीफ सैक्रेटरी मुझे देंगे इस बात का भी मुझे भाक है। स्पीकर साहब, इसके अलावा अभी हाउस के सामने यह मामला आया कि सरकार कमेटियों की मुख्तलिफ किस्म की रिपोर्टों को हाउस मे पे ा होने मे रूकावट डाल रही है। स्वाभाविक बात तो यह होती है कि प्रजातंत्र प्रणाली मे जो भी रिपोर्ट है, वह हाउस के सामने पे ा होनी चाहिए। उदाहरण के तौर पर प्रिविलेज कमेटी की रिपोर्ट है, सर्बोडीनेट लैजिस्ले ान कमेटी की रिपोर्ट है या दूसरी कमेटियों की रिपोर्टस है, वे सभी हाउस मे पे ा होनी चाहिए। यह बात बहुत महत्वपूर्ण है इसलिये मैं इस तरफ आपका ध्यान आकर्शित करना चाहता था।

मुख्य मंत्री (चौधरी भजल लाल): स्पीकर साहब, अभी बाबू जी ने बोलते समय सरकार पर यह इल्जाम भी लगा दिया कि सरकार जान बूझकर रिपोर्ट पे ा नही होने दे रही । जैन साहब काफी सीनियर मैंबर है, कई बार मंत्री मंत्री भी रह चुके है। मैं जैन साहब से पूछना चाहता हूं कि क्या आप लोगों ने कभी ठीक समय पर कोई रिपोर्ट पे ा की थी। ऐसे कामों मे समय तो लगता ही है।

श्री मूल चंद जैन: यदि हमने चोरी की है तो क्या आप भी वही चेरी करेंगे?

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, मुझे बड़ा दुख होता है जब ये बीच मे बोलते है। किस समय बाबू जी या इनके दूसरे साथी बोलते है तो उस समय हमारा कोई साथी नही बोलता लेकिन जब भी मैं बोलने के लिये खड़ा होता हूं तो ये बीच मे बोलने लग जाते है। (ाोर) मैं तो आपसे जानना चाहता हूं कि क्या आपके समय मे ठीक समय पर रिपोर्ट आ जाती थी ? किसी भी रिपोर्ट को पे ा करने मे क्या आपको समय नही लगता था?

श्री मूल चंद जैनः मैं तो सिर्फ यही पूछना चाहता हूं कि क्या यह हकीकत नही है कि रिपोर्ट हाउस मे पे ा होनी चाहिए । (ाोर)

चौधरी भजन लालः हम कब कहते है कि रिपोर्ट हाउस मे पे ा नही होनी चाहिए।

श्री मूल चंद जैनः जिस समय मैं फाईनैंस मिनिस्टर था, मेरे से पहले भी आप मिनिस्टर रहे है और बाद मे भी रहे है। यदि आप मेरी जगह होते है तो क्या आप वाक आउट नही करते?

चौधरी भजन लालः बाबू जी मैं तो आपकी गाईडैंस पर ही चलता हूं। (ाोर)

श्री अध्यक्षः बाबू जी का यह कहना कि जो रिपोर्टस है वह हाउस मे आनी चाहिए। लेकिन सी0 एम0 साहब तो हयूमन नेचर कम्पेयर कर रहे थे। मुख्य मंत्री जी तो यह कह रहे थे कि क्या बाबू जी के समय मे रिपोर्ट समय पर हाउस मे आया करती

थी। सी0 एम0 साहब रिपोर्टो को पे ा करने की अपनी तरफ से पूरी कोि ा ा कर रहे है। (ाोर) मैं भी मानता हूं कि यह डिमांड की डिस्क ान के लिये बहुत जरूरी है। इस संबंध मे, मैं गवर्नमैंट से रिकवैस्ट करता हूं कि इस प्रकार से सभी रिपोर्ट हाउस मे सर्कूलेट होनी चाहिए ताकि मैंबर साहेबान को डिमांडज की डिस्क ान करने के लिये मौका मिल सके।

चौधरी भजन लालः हम पूरी पूरी कोि ा ा कर रहे है कि सभी प्रकार की रिपोर्ट हाउस मे पे ा हों।

डा. मंगल सैनः अभी स्पीकर साहब, आपने बजा फरमाया है कि मनुश्य का स्वभाव तुलना करना होता है। स्पीकर साहब, आप तुलना चाहे बे ाक कर ले। (ाोर एवं विघ्न)

श्री अध्यक्षः डाक्टर साहब, मैं तुलना नही कर रहा। सी0 एम0 साहब कर रहे है।

डा. मंगल सैनः स्पीकर साहब, मेरे कहने का मतलब यह है कि सभी प्रकार की रिपोर्टें हाउस मे पे ा होनी चाहिए।

श्री सुरेन्द्र सिंहः स्पीकर साहब, आपनु फरमाया है कि जितनी भी रिपोटें आ चुकी है वे सभी हाउस मे पे ा हो जायेगी। स्पीकर साहब, मेरी आप से एक रिकवैस्ट बहुत जरूरी है कि डिमांड की डिस्क ान के लिये जब तक पूरे फैक्टस और फिगर्ज नही आ जाते तब तक उन पर डिस्क ान करने का कोई फायदा नही है। इसलिये आप सरकार को आदे ा दे कि डिमांडज प

डिस्क ान से पहले पहले रिपोर्टस हाउस मे आ जानी चाहिए। रिपोर्टस आने के बाद ही उन पर डिस्क ान होनी चाहिए। इसलिये आप से मेरी रिकवैस्ट है कि इन रिपोर्टस को साइकलोस्टाईल कापी या प्रिटिंग कापी हाउस मे डिस्क ान से पहले पहले पे ा हो जानी चाहिए।

श्री अध्यक्षः सरकार की तरफ से यह आ वासन दिया गया है कि वे सर्कूलेट करने की पूरी पूरी कोि ा ा करेंगे।

श्री हीरा नंद आर्यः स्पीकर साहब, इनमे धांधली करने के सिर्फ चार ही दिन रह गये है। इनसे रिपोर्टस पे ा नही होग, ये सभी रिपोर्टस पे ा नही होंगी, ये सभी रिपोर्टस हमें ही पे ा करनी पड़ेगी। (ाोर व व्यवधान)

श्री अध्यक्षः डा0 साहब, हयुमन नेचर की बात कह रहे थे। मैं आपको बताना चाहता हूं कि पी0ए0सी0 की रिपोर्ट और दूसरी रिपोर्ट मेरे आने से पहले 6–7 साल पीछे की चल रही थी लेकिन अब ये सभी रिपोर्टस 2–3 साल पीछे की ही रह गई है। पिछले 2–3 साल की रिपोर्टस को छोड़ कर पी0एस0सी0 कमेटी ने सारा काम कर लिया है।

वाक आउट

श्री भले रामः स्पीकर साहब, हमें भी यहां पर रोजाना वाक आउट करते समय भार्म आती है। आप भी सोंचेंगे कि हम यहां पर हमे ाा हरिजनों की ही बातें करते रहते है। स्पीकर साहब, हरिजनों का रिजर्वे ान का कोटा कहीं पर भी पूरा नही हो रहा है। मैं आप को बताना चाहता हूं कि अभी पिछे फूड एण्ड स्प्लाई डिपार्टमैंट के अंदर इंस्पैक्टरों की पोस्टें भरी गई है लेकिन वहां पर भी रिजर्वे ान कोटे को पूरा नही किया गया। इन्ही बातों को देखते हुए हमें सरकार की नुकताचीनी करने पर विव ा होना पड़ता है। * * * * *

* * *

श्री अध्यक्षः यह रिकार्ड न किया जाये।

श्री भले रामः यदि आद हमें बोलने नही देते और सुनना भी नही चाहते तो मैं विरोध करता हुआ वाक आउट करता हूं।

(इस समय श्री भले राम सदन से वाक आउट कर गये)

चौधरी राम लाल वधवाः स्पीकर साहब, एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्टस पर डिस्क ान होना बहुत जरूरी है। इस पर बहस के लिये हमने नोटिस भी दिया हुआ है। यदि इन रिपोर्टस को हाउस के अंदर डिस्क ान के लिये रखेंगे तभी इन पर बहस हो सकेगी। जो टाईम हाउस का इस समय फिक्स हुआ है, उसके अंदर हम

इन सभी विशयों पर पूरी तरह से बहस नही कर सकेंगे। इसलिये मेरा आपसे नम्र निवेदन है कि बिजनैस एडवाईजरी कमेटी की मीटींग दोबारा बूला ले। स्पीकर साहब, मैं आपके नोटिस मे लाना चाहता हूं कि इस बात के लिसे सारे मैंबर एजिटेडिट है कि राम नवमी की छुट्टी होनी चाहिए। इसलिये आप एक दिन का समय भी हाउस का बढ़ा दे। रामनवमी की छूट्टी के बाद सै ान 5 अप्रैल और 6 अप्रैल तक बढ़ा लिया जाये ताकि रिपोर्टो को टेबल पर रखने का कोई फायदा हो सके और उन पर डिस्क ान भी हो सके वरना उनको टेबल पर रखने का कोई फायदा नही होगा क्योंकि समय की कमी के कारण मैंबर साहेबान बहस मे हिस्सा नही ले सकेंगे।

श्री अध्यक्षः मैंने अपोजी ान को साथ मे ले कर के गवर्नमैंट से रिकवैस्ट करके हाउस का समय 3 दिन बढ़ाया था। तीन सिटिंग नही बल्कि चार सिटिंग बढ़वाई थी। इसलिये सै ान दिनांक 29–3–82 को प्रातः 11 बजे से लेकर भााम 6.00 बजे तक का होगा। इस प्रकार से कुल चार सिटिंग्ज बढ़ाने का फैसला दोनों साइडस की राय से किया गया था। अब बिजनैस एडवाईजरी कमेटी के फैसले को रिव्यू करना ठीक नही है। अब यह मैटर क्लोज होता है। इस पर और बहस नही होगा अतः अब जीरो आवर समाप्त होता है।

वर्श 1982–83 के बजट पर सामान्य चर्चा (पुनरारम्भ)

श्री अध्यक्षः चौधरी रिजक राम जी अब बजट पर अपनी डिस्क ान रिज्यूम करेंगे।

चौधरी रिजक राम (राई): स्पीकर साहब, कल आपकी मेहरबानी से टाईम मिलने पर मैं बजट के बारे मे अपने विचार प्रकट कर रहा था। मैंने ऐसा कहा था कि विरोधी दल के साथियों को सरकार के कार्यक्रम पर, उनकी उपलब्धियों या कमियों पर नुक्ताचीनी करने का पूरा अधिकार है लेकिन राज्यपाल महोदय के अभिभाशण से लेकर आज तक जो कार्यवाही हुई उसके बारे मे मुझे कुछ दुख के साथ कहना पड़ता है कि इस दौरान सरकार की नीतियों पर रचनात्मक नुक्ताचीनी न करके केवल जाति लांछन ही लगाए गए है। मैं समझता हूं कि यह सदन जाति लांछन लगाने के लिये उचित स्थान नही है। (विघ्न) स्पीकर साहब, रावी व्यास के पानी का वितरण के बारे मे बाबू मूलचंद जैन जी ने काफी जोरदार भाब्दों मे नुक्ताचीनी की । स्पीकर महोदय, मैं एक बात अपने विरोधी दल के नेता के नोटिस मे लाना चाहता हूं। माननीय सदस्यय स्वामी आदित्यवे ा जी ने उसके बारे मे अपने विचार रखे और जो हालात थे उनका सही जायजा सदन के सामने रखा। मैं समझता हूं बाबू मूलचंद जैन जी और दूसरे साथी, उन्होंने जो विचारधारा रखी है उस पर ठण्डे दिल से गौर गौर फारमायेंगें रावी ब्यास के पानी के वितरण का झगड़ा कोइ आज से नही है बल्कि 9–10 साल से यह झगड़ा हमारे और पंजाब के दरम्यान चल रहा है। इस दौरान बाबू मूच चंद जी मानेंगे कि चौधरी

चरणसिहं भी जनता पार्टी की सरकार रही, जिसमे हम भी भाामिल थे और दूसरे साथ भी भाामिल थे लेकिन इस बारे मे कोई फैसला नही हुआ। आखिर दे ा की मोहतरिम नेता श्रीमती इंदिरा गांध जिनके बारे मे कोइ यह नही कह सकता कि उन्हे हरियाणा के लोगो के साथ सहानुभूति नही है, हमदर्दी नही है, वे हरियाणा के हकूक की रक्षा के लिये उत्सुक नही हे, ने ही यह काम किया। उनहोंने वही फैसला कराया जो सुप्रीम कोर्ट मे चौधरी देवी लाल जी की सरकार ने कहा था। चौधरी देवी लाल की सरकार ने 3.5 मिलियन एकड़ फीट पानी के लिये सुप्रीम कोर्ट मे मांग की थी। सारी मजबूरी होते हुए भी, पंजाब के हालात और दे ा के हालात ठीक न होते हुए भी, प्रधान मंत्री ने अपना फैसला दिया। इसके बावजूद भी अगर ये कहें कि हमारी सरकार ने इसमे कोई कमजोरी दिखाइ है या कोई दूसरी बात की है, मुनासिब नही। पंजाब के हालात को आप देखें वहां विरोधी दल जो पाट अदा करते है उसके पिरणामस्वरूप दिल्ली की सरकार कई बार अपना फैसला बदलने पर मजबूर हो जाती है। (विघ्न) स्पीकर साहब, मैं आपके द्वारा बाबू मूलचंद जैन जी से पूछना चाहता हूं कि पानी के वितरण के सिलसिले मे विरोधी दलों ने जो भूमिका निभाई है उसके बारे मे ये रो ानी डाले। उन्होनें पानी को हासिल करने के लिये क्या क्या कदम उठये वे हाउस को बता दे। अगर उन्होने कोइ कदम उठाये हो तो हम मानेंगे। स्पीकर साहब, यहां नुक्ताचीनी की गई है कि यह सरकार किसान विरोधी है, मजदूर विरोधी है। स्पीकर साहब, जैसा मैने कल कहा था, इस असैम्बली

मे हमें भी और इन सबको भी लाने वाली जनता पार्टी थी। हम सब उसमे भाामिल थे। चौधरी देवी लाल जी उसके मुख्य मंत्री रहे, चौधरी वीरेन्द्र सिंह जी इरीगे ान एंड पावर मिनिस्टर रहे हमारे मुख्य मंत्री जी भी उसमे मंत्री रहे, डा0 मंगल सैन जी कभी उस सरकार मे ओर कभी दूसरी सरकार मे मंत्री रहते रहे। इदसलिये इन सब बातों के लिये किसी एक पार्टी पर इल्जाम तरा ाी करना मुनासिब नही है। यह भी नही है कि जो विरोधी दल मे बैठे है वे किसानो के या गरीबो के ज्यादा हमदर्द है और जो इधर बैठे है वे दू मन है सामान्य तोर पर हम सब उन्हीं घरानो से ताल्लूक रखते है। हम सब उनकी कठिनाईयो और गरीबी को जानते है। (विघ्न) स्पीकर साहब, हम सभी देहातों मे पैदा हुए है। हम देहात की गरीबी के हालात से अनजान नही है। (विघ्न) * *

* * *

खाद्य एवं पूर्ति मंत्री (श्री लछमन सिंह): * * *

* *

चौधरी रिजक राम: * * * *

*

श्री अध्यक्ष: यह रिकार्ड न किया जाये।

चौधरी रिजक राम: स्पीकर साहब, मैं कह रहा था कि हम सब देहात मे पैदा हुए। हम देहात की गरीबी के हालात से अनजान नही है। मै यह बात मानने के लिये तैयार हूं कि कुछ घराने इस दे ा मे पिछले तीस बतीस साल मे अव य बहुत अमीर

हुए है। सन् 1975–76 मे 20 घरानों की जो सम्पत्ति थी वह 5511 करोड़ थी लेकिन आज उससे भी दूगूनी हो गई और दूसरी तरु देहातम मे आज भी गरीबी की रेखा के नीचखे 50 फीसदी के गरीब लजोग है। ऐसे लोग भी देहात मे है जिनके बच्चे जब कभी अमीर घरों मे ब्याह भाादी होती है कुत्तों के साथ बिना कपड़ा और पैरो मे जूता पहले अमीर आदमियों के जूठे टुकड़ों की इंतजार मे रहते है। सर्दियों मे वे लोग रूई नही खरीद सकते बल्कि जहां प ाु बंधते है वहां वे प ाुओं के साथ उनकी गर्मी मे रात गुजारा करते है। इस बात को ध्यान मे रखते हुए मै दावे के साथ कहता हूं कि बाबू मूलचंद जी भी ठंडे दिल से अगर सोचे तो यह भी महसूस करेंगे कि ऐसे गरीब लोगा को इस सरकार ने राहत दी है। इस सरकार के समय मे वाटर कोंर्मिज पक्के हुए,त्र बल्र्ड बैंक से कर्जा मिला। क्या बाबू मूलचूद जैन जी वित्त मंत्री के तोर पर ओर श्री विरेन्द्र सिंह जी इरीगे ान एण्ड पावर मिनिस्टर के तौर यह कह सकते है कि जो जमीदारो के खाल पक्के होने का कोई पैसा नही लिया । उन्हे माफी दे दी औरउससे ऊपर के जितने भी किसान थे उनके लिये पचास परसैंअ रियायत लगायी थी कि जितने भी खाल पक्के होंग, उस पर जो खर्चा होगा यह सारा पैसा किसानो से वसूल किया जायेगा लेकिन फिर भी सरकार ने रियायत दी। जब बल्र्ड बैंक वालो को पता लगा और उनकी टीम यहां चण्डीगढ़ मे आयी तो उन्होने एतराज किया कि आप इस पैसे को माफ नही कर सकते और न ही आप रियायत दे सकते हो। हमने वल्र्ड बैंक की टीम के सामने किसानो के हालात रखे। हमने कहा कि सन्

1961 मे 16 फीसदी ऐसे किसानल थे तजो पांच एकड़ तक के भू स्वामी थे लेकिन 1979 मे 73 परसैंट ऐसे किसान थे जो पांच एकड़ से भी कम के भू स्वामी थे। उनमे कुछ ऐसे भी लोग है जो एक या देा बीघे के बिसवेदार है एक मील का खाल पक्का करने मे एक लाख रूपये कसे ज्यादा खर्च होता है। इतने छोटे छोटे किसान इस पैसे को नही दे सकते। अंत मे वर्ल्ड बैंक ने जो आपत्ति उठायी थी वह वापिस ली।

स्पीकर साहब, चौधरी वीरेन्द्र सिंह जी बड़े फारवर्ड हैं अगर इससे कोइ मजाक भी करे तो ये हंसते रहते है। चीफ मिनिस्टर साहब तो कभी कभी त्यौरी भी चढ़ा लेते है लेकिन वे इन से कुछ भी नही कहे फिर भी हंसते रहते है। मैं चौधरी वीरेंद्र सिंह जी से पूछना चाहता हूं कि उनकी सरकार के टाईम जब चौधरी देवी लाल जी मुख्य मंत्री थे , क्या उस समय यह फैसला नही हुआ था कि अगर कोई भी माइनर बने, याएक्सटेन्ड हो तो आधा खर्चा जहां भी पानी जाता है वाहं के किसानों को देना पड़ता था। ऐसा किसानो के साथ ऐग्रीमेंट किया हुआ था।

श्री अध्यक्षः आप वाइंड अप करे। आप सारी बातें कह चुक है। (ाोर व व्यवधान)

चौधरी रिजक रामः अभी खत्म करता हूं। स्पीकर साहब, इस खर्चे के विशय मे हमने फैसला किया है कि कोई नयी माइनर बनानी पड़े या बढ़ानी पड़े तो सारा खर्चा सरकार के जिम्मे होगा।

मैंने अपने टाईम पर पांच छ महीने मे 35–36 माईनर्ज को मंजूर किया था। एक बात ओर भी अर्ज करना चाहता हूं कि उस बात का न वजीर खजाना ने जिकर किया है और न ही गवर्नर साहब के ऐड्रैस मे जिक्र आया है। इस सरकार ने या मुख्य मंत्री ने ऐसे काम भी किये है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है। उनका जिक्र इनमे आना चाहिए था। चौधरी गया लाल जी ने बोलते हुए कहा कि हरियाणा का बीटा घी दिल्ली मे बहुत ज्यादा जाता है जो बहुत ही पापुलर है। इस सरकार ने घी को बाहर भेजने का भी प्रबंध किया है । यह बहुत ही अच्छा काम किया। स्पीकर साहब, इस बात से भी इंनकान नही कर सकते कि हमारे मुख्य मंत्री और दूसरे मंत्रियों ने लोगा के घर घर जा कर राहत देने की कोि ा ा की है।

श्री अध्यक्षः चौधरी साहब पांच मिनट आप कल बोले थे और आप भी आपको बोलते हुए 20 मिनट हो गये । दूसरे सदस्य भी बोलना चाहते है, इसलिये आप वाइंड अप करे।

चौधरी रिजक रामः स्पीकर साहब, आप भी देखते है कि जब से यह सै ान भाुरू हुआ है तब से मंत्रियों को बहुत जयादा काम हो गया है काम ज्यादा करने की वजह से मंत्रियों के चहरे पर थकावट के चिन्ह नजर आ रहे है। कुछ तो काम की वजह से और दूसरे इलैक ान सामने खड़े है। मेरा एक सुझाव है कि जो मंत्री बहुत ज्यादा योग्यता रखते हैं, भाारिरिक और मानसिक भाक्ति भी जिनकी सुरक्षित है ओर जिन्हे पूरा काम करने का

अवसर नही मिला है, उनके बारे मे मुख्य मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि जिन्होंने ज्यादा काम किया है उन्हे थोड़े दिन के लिये आराम करने दें ओर जिन मैंबरान और मंत्रियों को ज्यादा दिमागी काम करने का मौका नही मिला है। उन्हे मौका दे।

श्री अध्यक्षः मुझे तो सभी मंत्रियों के चेहरो पर रौनक दिखाई दे रही है।

चौधरी रिजक रामः मैं आपकी एक बात से तो सहमत हूं कि चेहरे पर पूरी रौनक है, लेकिन सब के चेहरो पर नही है। चौधरी खुर ाीद अहमद के चेहरे पर कुछ चंचलता दिखाइ देती है। उसक भी एक कारण है। जितनी भी कीमती प्लाटस है उन्हे वे सिरहाना बना कर सोते है। सरदार लछमण सिंह का भी स्वभाव चंचल है लेकिन ऐसा नही है। वित्त मंत्री जी का यह खजाना छिन जाये तो लुकमान हकीम भी इलाज नही कर सकतां सन् 1980 का इलैक ान आप लोगों ने देख लिया होगा, उसका क्या असर हुआ। स्पीकर साहब यह राजनीति है। जैसे कोई जब पहाड़ी का चोटी पर चढ़ता है तो उसे हौसला रहता है लेकिन चोटी पर चढ़ने के बाद उसे नीचे जरूर देखना चाहिए ताकि उसे घमण्ड न हो जाये। इसलिये राजनीति मे भी यही बात हे उसे नीचे की ओर भी देखते रहना चाहिए । स्पीकर महोदय, जो मैंने पहले यह कहा है कि जिन्होंने ज्यादा काम किया है, वह उनको मौका न देकर दूसरो को मौका दे, यह चीफ मिनिस्टर साहे पर लागू नही होतार। इन्होंने तो हरियाणा मे स्थायी सरकार दी है। इनकी योग्तया से

बाबू मूलचंद जी भी इनकार नही कर सकते। जब भी जरूरत पड़ती है, हमारी पार्टी के सदस्य अनु ाासन को देखते हुए ओर प्राइम मिनिस्टर के प्रति श्रद्धा रखते हुए, इनके साथ है ही, और उधर विरोधी दल की तरफ से भी यह मदद हासिल करने मे सफल हो जाते है । स्पीकर साहब, एक बात की कमी रह गई। पिछले कुछ अर्से मे केरल और आसाम मे जो सरकारे बनी, वे ज्यादा देर तक नही टिकी रह सकी। मुझे मालूम नही, ऐसी हालत मे वे लोग हमारे मुख्य मुत्री जी की योग्यता को क्यो भूल गये। अगर उनको वहां पर मौका देते तो उनको पता चलता। मैं आपके द्वारा मुख्य मंत्री महोदय के बार मे एक अपील करनाचाहूंगा इलैक यान तो बे ाक वह लड़े या न लड़े लेकिन इनकी योग्यता को देखते हुए इनको रिजर्व कोटे मे रख दिया जाये। जहां कहीं पर सूबे मे हल चल दिखाई दे, वहां पर इनको भेज दिया जाये। स्पीकर साहब, हालात यहां तक भी पैदा हो सकते है कि इनकी योग्यता की विदे ाो मे भी जरूरत पड़ जाये। यह हरियाणा का नाम विदे ाो मे भी ऊंचा करेंगे। इससे हमारी भी प्रति ठा बढ़गी।

श्री अध्यक्षः चौधरी साहब, वाइंड अप कीजिये।

चौधरी रिजक रामः बहुत अच्छी जी! स्पीकर साहब, मेरी एक दो बाते और रह गयी है, अगर उनको बोल लेने दे, तो अच्छा होगा! (व्यवधान) मैने अब तक तो कोइ ऐसी गात कही ही नही है जो सरकार को खराब लगे। वैसे जहां तक लैजिस्लेटर्ज का ताल्लूक है, उनके हिसाब से एक तरह से तो मुख्य मंत्री जी अच्छे

है। मैं यह बात कोई नुक्ताचीनी के तौर पर नही कहता बल्कि एक बात इस बारे मे आपके सामने रखना चाहता हूं। जहां तक जनमत के बारे मे मेरा वि वास है कुछ खु ाामदी लोग व कुछ अफसरान ओवर एनययूजिआस्टिक हो जाते है यह असलीयत का पता नही लगने देते। जलसे होते है उनके भी और वी0आई0पीज0 के भी। मेरा कहना यह है कि यह अपनी सी0आई0डी0 को और कुछ दूसरे अफसरान को इस बार में बे ाक मुकरर्र कर ले इन जलसो मे, खास तौर पर वी0आई0पीज0 के जलसों मे पुलिस पटवारी से लेकर डी0सी0 तक और दूसरे सब अफसर ट्रक लगाकर हाजरी पूरी करते है। (ोम भोम की आवाजें) इसमे भोम की कोई बात नही है। इससे इल्यूजन यह होता है कि हमारी बड़ी पापुलैरिटी है। हमारी सरकार की बड़ी पापुलैरिटी है। स्पीकर साहब, संजय गांधी जब 1976 या 1977 मे करनाल मे आये थे, उस समय भी यही ड्रामा हुआ था। हालांकि उस समय एक साल के लिये लोक सभा की अवधि बढ़ा दी गई थी लेकिन 12–14 लाख के करीब आदमी वहां पर उस वक्त के चीफ मिनिस्टर ने इकट ठे किये थे। उसका नतीजा यह हुआ कि उन्होंने अमरजैंसी हटा दी ओर चुनाव रख दिये जिससे आप भलीभांति परिचित है, इसके अलावा एक दूसरी बात मैं और कहना चाहूंगा। गेहूं की मूवमैंट पर कोई पाबंदी नही है। इस बारे मे इसी हाउस मे मुख्य मंत्री जी ने यह फरमाया भी है कि गेहूं की मूवमैंट पर सरकार की तरफ से कोई पाबंदी नही है लेकिन इन्होंने डी0सीज0 और एस0पीज0 की मीटिंग बुलाई और हरेक जिले का एक लख्य मुकरर्र कर दिया कि आपने

इतना प्रोक्योरमैंट करना है। अफसरान ने क्या किया। मैं सोनीपत हल्के का हूं मुझे वहां का पता है बहादुरगढ़ और रोहतक का तो आपको भी इभ्म होगां उन्होंने सारे बौर्डर्ज को सील कर दिया। किसानों का कोई अनाज नजफगढ़ या दिल्ली तक भी जाने नही दिया। वहां पर किसान अपना अनाज का भाव 130 रूपये की बजाये 160 से लेकर 190 रूपये तक ले सकते थे। मेरा कहना यह है कि सरकार अपने अधिकारियो को कोई एकस्ट्रा लीगल मैयर्ज लेने के लिये अधिकार न दे। इससे सरकार की बदनामी होती है। उकसा नजला बुर पड़ता है जैसे फैमिली प्लानिंग का प्रोग्राम कितना अच्छा प्रोग्राम था, लेकिन ओवर एन्थयूजिस्टिक अफसरान ने घक्के ाही की ओर उसका नतीजा हमारे सामने है। मैं मुख्य मंत्री जी से इसलिये यही प्रार्थना करना चाहता हूं कि वह स्वयं भी और अपने मंत्रियों द्वारा भी अइफसरान को इस बाम की इजाजत न दे कि वे लोग कोइ एक्सट्रा लीगल कार्यवाही करे। स्पीकर साहब, आज का किसान जगरूक हैं वह अपने अधिकारो के लिये लड़ाई करने के लिये तेयार है और आमदा है । कर्नाटक मे, गुजारात मे या महाराश्ट्र मे आपने देखा होगा कि किसान किस तरह से मरने लग रहे है ओर गोलियां खाने लग रहे है। आप उनको दबाकर नही रख सकते। आज वे अपने अपने अधिकारों के लिये लड़ने के मूड मे है। यह ठीक है कि प्राईम मिनिस्टर ने 117 रूपये से बढ़ाकर आज गेहूं की प्रोक्योरमैंट प्राइस 130 रूपये कर दी है लेकिन आज के भा को देखते हुए जबकि सब चीजों के भाव बढ़ते ही जा रहे है, किसान उससे असंतुश्अ है। मैं सरकार से

अनुरोध करूंगा कि ट्रैक्टर की कीमत, इनसैक्टीसाईडज की कीमत या खाद की कीमत या दूसरी जितनी भी चीजें उसको प्रयोग करनी पड़ती है, अगर इनकी कीमत का हिसाब लगाये तो पिछले साल गेहूं की कीमत 171–172 से कम नही होनी चाहिये थी। मैं यह चाहता हूं कि अगले साले के लिये सरीकार इस चीज को ध्यान मे रखते हुए किसान को उसकी उपज को उचित ओर मुनासिब कीमत दिलवाये। इन भाब्दों के साथ मैं आपका भाुक्रिया अदा करता हूं। (घंटी) जो बाते मजेदार थी, वह तो आपने कहने नही दी, वह चलो फिर कह लूंगा। धन्यवाद।

चौधरी कर्म सिंह (टोहाना): स्पीकर महोदय, 1982–83 के बजट पर मैं भी कुछ बाते कहना चाहूंगा । सबसे पहले मैं आर्थिक स्थिति इस वक्त हरियाणा प्रदे ा की इतनी बिगड़ी हुई है कि जिसका कोई अंदाजा नही लगायाजा सकता। इस समय कुछ लोग ऐसे है जो पूंजीपति है और ज्यादा अमीर बनते जा रहे है ओर ज्यादातर लोग जो गरीब है, वे और ज्यादा गरीब होते जा रहे है। हरियाणा मे अब लोग ज्यादातर 1–2–3–4–5 एकड़ जमीन तक के मालिक रह गये है। उनकी हालत इतनी कमजोर है जिसका कोई हिसाब नही लगाया जा सकता।

अब मैं रावी ब्यास के पानी के बारे मे कुछ जिक्र करना चाहूंगा। मेरे से पहले मेरे दूसरे भाइयों ने इस पर बहुत कुछ चच्र की है। रावी और ब्यास के पानी के बंटवारे के सिलसिले मे अखबारो मे जो खर 1–2–1982 और 2–2–1982 को छपी, उसमे

जो फोटो हम देखते है, उसमे हमारे चीफ मिनिस्टर साहब, पीछे खड़े हुए दिखाई देते है । ऐसा लगता है कि इन्होंने हरियाणा के लिये पानी लेने के लिये कोई ज्यादा दिलचस्पी नही ली है। चौधरी बंसी लाल के टाईम पर जितना पानी हरियाणा को देने का फैसला हुआ था अगर उससे कुछ ज्यादा पानी हरियाणा के हिस्से मे ले आते है, तब तो हम यहज मानते कि उनहोंने हरियाणा के हित मे कात किया है। इससे यह पता चलता है कि इन्होंने ज्यादा पानी लेने के बारे मे ज्यादा काम न करके हरियाणा के साथ बेइंसाफी की है। मैं इस बारे मे और ज्यादा नुक्ताचीनी नही करूंगा। दूसरी बात मैं यह कहनाचाहता हूं कि हपछले साल जब ओले पड़े थे तो गवर्नमैंट ने ग्रांट देने की बात कही थी। लेकिन ग्रांट मे से गवर्नमैंट के कर्जे के पैसे काट लिये गये है और दूसरी बात यह कि यह ग्रांट भी टाईम पर नही दी गयी। अगर यह ग्रांट फसल के टाईम पर आ जाती तो उस वक्त गेहूं जिसका भाव 130 रूपये क्विंटल ओर चारे का भाव 5 रूपये टन था, वे उससे अपने खाने के लिये गेहूं ओर प ुओं के लिये ज्यादा चारा खरीद लेते। उस वक्त उनको सस्ते ीााव पर चीजें मिल सकती थी। आज जबकि दोबारा ओले पड़ गये है, बेचारा किसान कैसे उस नुक्सान को पूरा कर सकेगा। स्पीकर साहब, अब मैं बिजली की तरफ अपका ध्यान दिलाना चाहता हूं । किसी भाायर ने कहा भी है–

आता है याद मुझको वह गुजरा हुआ जमाना

चौधरी भजन लाल बहुत सारी बातें कहते है लेकिन इनमे मुझको सब कुछ गलत ही नजर आता है। जब चौधरी देवी लाल की सरकार थी तो किसान को बाईस घंटे बिजली मिलती थी और अब सिर्फ दो दिन के बाद पांच घंटे के लिये बिजली मिलती है। हालत यह है कि खाना खाने और बच्चों की पढ़ाई के वक्त भी बिजली नही आती । हमारे बच्चे बिजली न होने के कारण पढ़ भी नही सकते। नाम मात्र की बिजली दी जा रही है। स्पीकर साहब,त्र बिजली बोर्ड के अंदर इतना घोटाला है जिसका कोई हिसाब नही। जब राजीव गांधी आदमपुर आए थे तो टोहाना का पी0 डब्ल्यू0 डी0 का एस0 डी0 ओ0 बीस हजार रूपये के फूल आदमपुर ले गया था। स्पीकर साहब, उसने यह बीस हजार रूपया अपनी जेब से तो देना नही है। वह तो लोगों से लूटेगा।

स्पीकर सहाब, बुढापे की जो पै ान है वह उन बुढ़े आदमियों को मिलनी चाहिए जिनको एक एकड़ा आधा एकड़ या दो एकड़ जमीन है। मेरे कहने का मतलब यह है कि आधा एकड़ से लेकर दो एकड़ जमीन वालो को पैं ान मिलनी चाहिए। ऐसे लोगो को काफी तादाद है। लोगों का तभी भला हो सकता है जब इस कैटेगरी के लोगो को पैं ान दी जाएगी। स्पीकर साहब, चौधरी देवी लाल जी के जमाने मे कोआप्रेूटिव बैंक कस सूद चौदह परसैंट से घटाकर ग्यारह परसैंट कर दिया गया था लेकिन इस सरकारने फिर उसको बारह परसैंट कर दिया है । कोआप्रोटिव बैंक से ज्यादातर लोग वे कर्जा लेते है जो गरीब है।

ऐसा करके उन गरीब लोगा का गला काटा गया है। स्पीकर साहब किसान लोगो को जो खाद दी जला रही है वह बहुत ही घटिया किस्म की है ओर उसका वजन भी बहुत कम होता हैं मैंने पिछले सै ान मे भी इस बारे मे कहा था किसान को जो खाद दिया जा रहा है वह ठीक नही है यहां पर कोफेड का महकमा है मैं तो इस महकमे को कनफेड का महकमा कहता हूं। इस महकमे के अंडर कंज्यूमर स्टोर्ज आते है और इनमे दो लाख रूपये का घोटाला है। स्पीकर साहब, यह तो ऐसी ऐजेंसी है जिसमे फायदा होना चाहिए था लेकिन बजाए प्रोफिट होने के, घाटा हो रहा है। स्पीकर साहब, मैं पंचायत डिपार्टमैंट के बारे मे भी कहना चाहता हूं। यह बहुत इम्पोर्टेंट महमा है। इसके लिये केवल नब्बे लाख रूपया रखा गया है। नब्बे लाख रूपया तो कुछ भी नही होता। अब मैं उद्योग के बारे मे कहना चाहता हूं। सरकार कहती है कि हमने इतने हजार औद्योगिक इकाईया एक साल मे नईग खोली है औरअगले साल इतनी इकाईयां ओर खेलेंग लेकिन सरकार यह नही देखती कि कितनी इकाईयां खत्म हो रही है। कितनी इकाईयां रजिस्टर हो जाती हे वही गिनती इसके पास रहती है। इस सरकार ने जुहार और खाती जैसे लोगों को भी अपने यहां रजिस्टर कर रखा है और उनको औद्योगिक इकाईयों के तौर पर गिना जा रहा है।

अब मैं परिवहन के बारे मे कहना चाहता हूं। बस अड्डों पर जो दुकानो की नीलामी होती है, उन दुकानो पर लोगो को बहुत बंदा और महंगा माल दिया जाता है। इसकी तरफ

सरकार को ध्यान देना चाहिएं स्पीकर साहब, रेाडवेज को जो स्पेयर पाट्र्स की जरूरत पड़ती है उसके लिये सरकारी दुकानी होनी चाहिए। इससे दो ुायदे होंगे एक तो चीज अच्छी मिलेगी और कम कीमत पर मिलेगी ओर दूसरे प्राईवेट आदमी का कमि ान खत्म हो जायेगा।

स्पीकर साहब, सुरज कुंड पर राज हंस मोटल बनाया जा रहा है ओर इस पर पचास लाख रूपया खर्च कियाजा रहा हैं अगर इतना पैसा किसी कालिज मे इंजिनियरिंग या साईंस की तरक्की के लिये खर्च किया जाये तो बच्चों का बहुत जयादा फायदा हो सतो है ओरदेहात के लड़कों और लड़कियो का बहुत भला हो सकता है। स्पीकर साहब, इस समय प्राईवेट ालिजिज को 95 परसैंट ग्रांट सरकार देती है । मेरी सरकार से प्रार्थना है कि सौ परसैंट ग्रांट सरकार इन प्राईवेट कालिजिज को दे तो अच्छा रहे। स्पीकरसाहब, मेरे हल्के मे 22—23 तारीख की पंद्रह बीस गांवो मे ओलावृश्टि से बहुत दुकसान हुआ है असरकार के वहां पर लोगा को जल्दी से जल्दी मुआवजा देना चाहिए ˙ स्पीकरसाहब मेरे हल्के टोहाना मे बीस बिस्तर का सिविज हस्पताल बना हुआ है। आबादी के लिहाज से यह बहुत छोटा अस्पताल है। मेरी सरकार से प्रार्थना है कि उसको पचास बिस्तर का अस्पता बना दिया जाये। स्पीकरसाहब 25—2—82 को तलवंडी और हिसार के बीच मे एक सपैन गांव है वहां पर एक ऐक्सीडंट हो गया था और उसमे छः अदमी जो बैकवर्ड क्लासिज से संबंध रखते थे, मारे

गये। मेरी सरकार से प्रार्थना है कि उनको पूरा मुआवजा दिया जाये। वे बहुत ही गरीब लोग है और उनके बच्चे अनाथ हो गये है। स्पीकर साहब, मेरे हल्के मे चार वाटर वर्क्स बंद कर दिया। मेरी सरकार से प्रार्थना है कि उन वाटर वर्क्स पर काम भाुरू किया जाये।

श्री रघुनाथ गोयल (कैथल): स्पीकर सहब, मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया। अध्यक्ष महोदय, 1982–83 का वित्त मंत्री महोदय ने जो बजट पे ा किया है मैं उसका विरोध करने के लिये खड़ा हुआ हूं । मेरी कांस्टीचुऐंसी के प्रति जो इस सरकार का सौतेला व्यवहार है, स्पीकर सहाब, मैं उसकी तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं । जब हमारे मुख्यमंत्री ने दल नही बदला था और वे जनतापाटी मे थे उस समय तीस हजार लोगों के बीच इन्होंने ऐलान किया था कि मैं कैथल को एक अप्रैल को जिला बनाऊंगा । उस वक्त इन्होंने इस काम को करने के लिये पूरा जोर लगाया । उसके बाद वहां के वकील और प्रोफेसर्ज और दूसरे लोग भी इनसे मिले, उनसे भी इन्होंने बार बार वायदा किया कि कैथल को एक अप्रैल को जिला अनाउंस करूंगा लेकिन कैथल को आज तक जिला घोशित नही किया गया। स्पीकर साहब, हमारे यहां पचास बैड का एक छोटा या अस्पताल है और इन्होंने यह वायदा भी किया था कि इसको भी सौ बैड का अस्पता बनाया जायेगा लेकिनइन्होंने कुछ नही किया। सिवाए इनसके कि इन्होंने वायदा कर लिया कि

यह करूंगा और वह करूंगा लेकिन किया कुछ नही। मैं समझता हूं कि यह बात अच्छी नही है।

स्पीकर सहाब, दूसरी बात यह है कि मेरे हल्के मे एक आर0 के0 कालेज ओरएक कालेज महिलाओं का इंदिरा के नाम से है। उस महिला कालेज की अध्यापिकाएं चण्डीगढ़ मे सी0 एस0 साहब से मिलने के लिये आई थी उन्होंने चीफ मिनिस्टर साहब से यह कहा कि आठ दस महीनो से उन्हें तन्खवाहें नही मिली है और न उनका जी0पी0एफ0 का रूपया ही उनके हिसाब मे जमा हुआ है। अध्यापिकाओं ने बताया कि हमारी तनख्वाहों को कालेज केचंदे के रूप मे ले लिया गया है। स्पीकर साहब, कालेज के मैनेजमैंट की तरु से यह कितना अन्याय है और वे लोग दूसरे लोगों से महीनों मे 500—500 और 1000—1000 रूपये लेकर के अपना घर का गुजारा चला रहे है ओर वे लोग कर्जई हो गये है। इसलिये स्पीकर साहब, मैं आपके द्वारा सरकार से विनती करूंगा कि ऐसे कोलेजों को सरकार अपने अधिकार मे ले ले जिन कोलेजों मे लोगों को तन्ख्वाहें देने के लिये भी फण्डज नही हैं ऐसे अध्यापकों को सरकारी खजाने से तन्ख्वाहे मिलनी चाहिए। सरकार को इस तरफ खास तौर से ध्यान देना चाहिए।

इससे अगली बात मैं चीनी मिलों के बारे मे कहनाचाहताहूं कि कैथल हल्के मे एक भूगर मिल सरकार की तरफ सो मंजूर हो चुकी है और लोगो द्वारा तीन लाख के भोयर भी खरीदे जा चुके है ओर इसके लिये 20 किल्ले जमीन सरकार

की रेलवे स्टे ान के पास पड़ी हुई है। लेकिन वहां भाूगर मिल नही खोली जा रही है। इसलिये वहां पर भाूगर मिल को खोलने का प्रबंध कियाजाये ओर वह जीमन भी दिवाई जाये यह हमारे हल्के साथसौतेली मां वाला व्यवहार क्यों हो रहा है। इसलिये सरकार को इस तरफ ध्यान अव य देना चाहिए।

इसी तरह से कुरूक्षेत्र मे सेंट्रल कोआप्रेटिव बैंक के बारे मे जो 72 सीटं भरी गयी है उस बारे मे मैं कुछ निवेदन करना चाहता हूं। दो सालो से इन सीटो पर कोइ आदमी वहां का नही लगाया गया है। इसी संबंध मे एम0डी0 साहब को दो तीन बार धमकियां भी दी गयी है कि हम इस बैंक को तोड़ देंगे और वहां पर लोगों को भर्ती करने के लिये चीफ मिनिस्टर और ठाकुर बीर सिंह जी की तरफ से लिस्टे भी गयी है कि इन इन आदमियों को लगाया जाये और उसी के आधार पर वहां पर आदमियों को रखा गया है। अब तक तो अदमी वहां पर लगे हुए हे, वे या तो चीफ मिनिस्टर के है या फिर ठाकुर बीर सिंह के आदमी हे और दूसरे सभी जिलों मे इस भत्री से महरूम रखा गया है। इसलिये मैं आपकी मारफत सरकार को यह कहूंगा कि इस तरह का अन्याय बंद करों और सभी जिलों के साथ एक सा व्यवहार करो।

इससे अगली बात मैं एक और कहना चाहता हूं कि मेरे से पहले मेरे मामा पोहलू साहब भी इस मामले पर काफी कुछ कह चुके है कि कैथल के अंदर जो थाना हे, उसकी हालात बड़ा खस्ता है। वह गिरा हुआ है। जब जैन साहब वित्त मंत्री थे, तो

मैने उनको वहां पर ले जा करके दिखाया था। मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि वहां की थाने की कोई व्यवस्था नही है। इसलिये सरकार इस तरफ ध्यान दे। जो तहसीलों के आफिस वगैरह है उनकी हालत भी बहुत खराब है। इस तरफ सरकार को खास तवज्जो देनी चाहिए।

इससे आगे अध्यक्ष महोदयख्मैं हवालात के बारे मे कुछ कहना चाहता हूं कि वहां जेल बनाने के लिये मंजूरी आ चुकी है औरइसके लिये वहां पर 20 किल्ले जमीन भी एक्वायर हो चुकी है, फिर पता नही कि सरकार देरी किस बात की कर रही है। वहां पर एक टूटी फूटी हवालात है उसमे दो टूटी हुई कोठरियां है, उसके अंदर 50–50 आदमी एट ए टाइम रहते है । आप ही स्पीकर साहब, अंदाजा लगाए कि वे लोग वहीं पर रहते है, टट्टी पै ाब भी वहीं पर जाते है, किसनी बुरी हालत है उनलोगों की। आखिर वे भी स्पीकर साहब, हमारे जैसे इंसान हैं आप ही सोचिए कि इस तरह से जब उनको रखा जा रहा है जो उनके साथ कितनी ज्यादती हो रही है। उनके कपड़ो मे जूएं तक पड़ जाती है और उनको इधर उधर घूमने को भी कोई जगह नही है, बस उन्ही दो टूटी फूटी कोठरियों मे वे लोग बंद रहते है। यह हालत भी मैने वित्त मंत्री महोदय को दिखायी थी इसलिये आपके द्वारा सरकार से यह निवेदन करना चाहता हूं कि सरकार इस ओर जल्दी से जल्दी ध्यान दे ताकि वहां पर जेल की व्यवस्था को सुधारा जा सके।

इसके साथ साथ स्पीकर साहब, मैं अपने इलाके के बारे मे एक दो बातें और कहना चाहता हूं। पहली बात तो यह है कि मेरे इलाके मे पीने के पानी की बहुत बड़ी समस्या है। वहां के गांवों का पानी बहुत खराब है जोकि पीने के काबिल नही है। इस बारे मे स्कीमें भी मंजूर हो चुकी है पर पता नही सरकार की तरफ से पुन्डरी, पाई ओर कैथल इन जगहों के साथ सौतेजी मां वाला व्यवहार क्यों किया जा रहा है? कहीं ऐसा तो नही है कि यहां के एम0एल0एज0 अपोजी ान के है इसलिये ऐसा किया जा रहा है। मैं कहना चाहता हूं कि यहां की जनता तो हरियाणा के है निवासी माने जाते है ओर इनके अपने आदमी भी इन इलाकों मे बसते है। इसलिये मेरी आपके द्वारा सरकार से दरखास्त है कि इन इलाकों मे पीने के पानी की व्यवस्था को सुधारा जाये और जो स्कीमें इन इलाकों मे मंजूर हो चुकी है, उनको जल्दी ही कार्यान्वित किया जाये।

दूसरी बात मैं टीचज्र के बारे मे कहना चाहता हूं कि कुछ लोग ऐसे है जो ओवर ऐज हो रहे है, पहले उन लोगों को भर्ती किया जाना चाहिए ताकि वे लोग पहले ऐडजस्ट हो जाये।

इसके साथ साथ मैं रावी ब्यास के पासनी के बारे मे भी कुछ कहना चाहता हूं कि कैथल के अंदर एस0डी0एम0, डी0सी साहब की कोठियों पर खु ाी मनाने के लिये बिजली लगाई गई है और रो ानी की गई है। रावी ब्यास का पानी हरियाणा को मिल गया है । स्पीकर साहब अभी तो ऐसी कोई बात ही नही है,

ऐसे ही लोगो को गुमराह करने की कोि ा ा की जा रही है ओर उनके आंखो मे धूल झोंकने वाली बात की जा रही है और यूं ही इस तरह की लाईटें लगाकर के लोगो का, गरीब किसानों कापैसा बरबार किया जा रहा है। इसलिये सरकार को ऐसी फिजूलखर्ची पर रोक लगानी चाहिए।

इससे आगे स्पीकर साहब, मैं अस्पतालों की हालत के बारे मे कुछ कहना चाहता हूं कि जो अस्पताल है, उनमे कोइ दवाईयां नही हमलती। मैंने पिछली बार भी हैल्थ मिनिस्टर साहब से इस बारे मे कहा था कि इस तरफ ध्यान दिया जाये। साथ ही यह भी बताया था कि जो जो डाक्टर इन अस्पतालों मे लगाये गये है वे काम नही करते तो हैल्थ मिनिस्टर सहाब ने कहा कि मैंने तो ऐसे लोगो को वहां से निकाल दिया था, पता नही चीफ मिनिस्टर साहब ने उनको फिर क्यों रख लिया।

स्पीकर साहब, मैं अंत मे कैथल की म्यूनिसिपल कमेटी के बारे मे कहकर अपना स्थान लूंगा। स्पीकर साहब, वहां की कमेटी फर्स्ट क्लास कमेटी है लेनिक उस की हालत सुधारने के बारे मे सरकार कोइ ध्यान नही दे रही है। जनता पार्टी के राज्य मे म्यूनिसिपल कमेटियों के इलैक ान करवाने का प्रस्ताव आया था लेकिन इस सरकारने इन सारे प्रस्तावों को आते ही रदद कर दिया ओर अब यह सरकार वहां पर चुनाव करवाना नही चाहती। यह भी एक प्रकार से ज्यादती है। इस और ध्यान देने का यत्न किया जाना चाहिए। इसलिये स्पीकर साहब, मैं इन कुछ बातों के साथ

आपका धन्यवाद करता हुआ, और इस बजट की निन्दा करता हूं, अपना स्थान लेता हूं।

कामरेड भांकर लालः स्पीकर साहब, पार्टी के लीडर की तरफ से बोलने के लिये मेरा नाम आपके दिया गया है। इसलिये मुझे भी बोलने का मौका दिया जाये। स्पीकर साहब, मैंने केवल पांच मिनट ही लेने है।

श्री अध्यक्षः कामरेड भांकर लाल जी, आप बैठिये आपको बोलने का समय दिया जायेगा। मैंबर साहेबान जो सदस्य बोल चुके है, मैं उन से दरख्वास्त करूंगा कि वे अपना नाम न भिजवाए।

कामरेड भांकर लालः स्पीकर साहब, मैं ज्यादा नहीं बाूलूगा, केवल पांच मिनट ही लूंगां

श्री अध्यक्षः भांकर लाल जी, आप बैठिये। मैंबर साहेबान अब तक कांग्रेस की तरफ से 15 साहेबान और लोकदल के 10 भारतीय जनता पार्टी के 9 और जनता पार्टी के 3 साहेबान बोल चुके है और कामरेड भांकर लाल जी दो दफा बोल चुके है। पाहलू साहब भी बोलच चुके है इसलिये मैं इन साहेबान से दरख्वास्त रूंगा कि जो सहोबान बोल चुके है, वे अपना नाम दोबारा न भिजवांए।

कामरेड भांकर लालः स्पीकर साहब, मेरी रिकवैस्ट है कि.....(ाोर एवं व्यवधान)

श्री अध्यक्षः भांकर लाल जी, आप कृपा करके बैठ जाइये, बीच मे न बोलिये। जिन सदसयों को यहां पर बोलने का मौका नही मिला हे, उनको बोलने के लिये मौका दिया जाना चाहिए। अब श्री राजेन्द्र सिंह बोलेंगे।

चौधरी राजेन्द्र सिंह (बल्लभगढ़): अध्यक्ष महोदय, वर्श 1982–83 के बजट पर चर्चा चल रही है। और सदन के सभी राजनैतिक दलों के माननीय सदस्यों ने अपने अपने विचार रखे है। इस बजट की क्या वि ोशता है, क्यों यह बजट इतना महत्वपूण्र है इसके लिये हमें हमारी प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी का धन्यवाद करना चाहिए। उन्होंने 14 जरवरी, 1982 को जो महत्वपूर्ण सारे देश को दिया है उसको अगर हम थोड़ा समझ कर चले तो मैं वि वास के साथ कह सकता हूं कि इस बजट का हम अच्दी तरह से मूल्यांकन कर सकते है। अध्यख महोदय, इस नये प्रोग्राम मे हमारी प्रधान मंत्री जी ने सामाजिक और आर्थिक दृश्टि से जो बीस सूत्री प्रोग्राम दिया है जिसमे सभी दे ा वासियों के लिये वि ोश कर कमजोर वर्ग के लिये, गरीबों के लिये समस्त ग्रामीण क्षेत्रो की उन्नति के लिये वर्णन है। इससे सभी दे ावासियों को समान अवसर प्राप्त होंगे। इन सब बातों को आधार बना कर जो बजट हमारे वित्त मंत्री जी ने हमारे सामने रखा हे, उससे हम यह कह सकते है कि यह बजट बहुत प्रगति ील बजट है। (इस समय श्री उपाध्यक्ष पदासीन हुए) यह बजट देहात की उन्नति के लिये है, गरीबरों की उन्नति ओर

हरजनो की उन्नति के लिये है। इसी बात के लिये इस बजट की वि ोशता कही जा सकती है। उपाध्यक्ष महोदय, हमारे विपक्ष मे के माननीय सदस्यों ने जो इस बजट के अंदर वि ोशताएं है या जिस दृश्टि से हमारा बजट महत्वपूर्ण है, उन सब बातों को इग्नोर किया है और सरकार पर निराधार लांछन लगाए है। उपाध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री जी ने सभी को कड़ी मेहनत करने का आग्रह किया है उनका कहना है कि जमीन के चप्पे चप्पे से, कारखाने के हर म ीन से और हर मजदूर या ि ाप्ली से हमें पूरा लाभ उठाना है इसलिये वर्श 1982 को उत्पादक वर्श घोशित किया गया है। उपाध्याक्ष महोदय मैं एक बात सदन मे आव य कहूंगा कि यह पहला बजट है जिसमे वित्त मंत्री देहात के लोगो को, गरीब लोंगो को और हरिजन लोगों को हमारे हरियाणा के खजाने की चाबी दी है। देहात के सभी लोगो को और गरीबा भाइयों को वित्त मंत्री जी ने यह कहा है कि भाई आपका ही यह खजाना है, यह लीजिये हरियाणा के खजाने की चाबी। सारा पेसा पूरी तरह से स्टेट की डिवैल्पमैंट पर खर्च होना चाहिये। उपाध्यक्ष महोदय हमारी हरियाणा सरकारने चौधरी भजन लाल जी के नेतृत्व मे जो बार बार इनका इसी बात पर बल है कि सदस्य बर्दा त करने के लिये तेयार नही है। बार बार उनका इसी बात पर बल है कि सरकार ने कुछ नही किया। तो मैं उपाध्यक्ष महोदय, यह कहना चाहता हूं कि चौधरी भजन लाल के नेतृत्व मे सारे हरियाणा मे, सभी वर्गो वि ोशकर देहातों के अंदर जो प्रगति हुई है वह वह बहुत ही प्र ांसनीय है। हम अपनी सरकार की जितनी प्र ांसा करें उतनी

थोड़ी है। उपाध्यक्ष महोदय एक और बात मैं कहना चाहता हूं कि हरियाणा के इतिहास मे 31 दिसम्बर, 1981 का दिन एक ऐतिहासिक दिन है। इस दिन हरियाणा प्रांत को एक नयाजीवन मिला है। पंजाब हरियाणा और राजस्थान के बीच एस0वाई0एल0 के पानी का झगड़ा जो चला हुआ था व0ह इसी दिन हमारी प्रधान मंत्री महोदया जी के आ ीिवाद से हल हुआ हे और जीनो प्रांतों की सरकारों ने समझोते पर हस्ताक्षर किये है। उसस समझोते के परिणाम स्वरूप हमारे हरियाणा प्रांत को जो एस0वाई0एल0 कापानी मिलना चाहिए था, वह भीघ्र ही मिलेगा। इसपानी के मिलने के लिये भी समय नि चत कर दिया है कि दो साल के अदंर अंदर यह पानी हरियाणा के किसानों के खेतों को उपलब्ध होगा। इसकि लिये हम अपनी प्रधान मंत्री जी का जितना भी धन्यवाद करे, वह थोड़ा है। (विघ्न) उपाध्यक्ष महोदय, इस समझौते के लिये हम अपने मुख्य मंत्री जी की प्र ंसा किए बगैर भी नही रह सकते। हरियाणा प्रांत के वासी कब से इस पानी की तरफ नजर लगाए बैठे थे। अब हमारी सरकारने चौधरी भजन लाल जी के नेतृत्व मे भारी प्रयत्न करके हमें यह पानी दिलाया है, यह हरियाणा प्रांत के लिये बहुत फख्र की बात है। (विघ्न) उपाध्यक्ष महोदय हमारी सरकार ने किसानों के खालों को पक्के करने का भी एक वि ोश प्रोग्राम चलाया हुआ है जिससे हमारे प्रांत के किसानों को बड़ा भारी लाभ पहुंचा है। जैसाकि सभी जानते है कि हमारे प्रांत मे सिंचाई के लिये पानी कम हा है और इन खालों मे नहरों को पक्का करने के लिये इस बजट मे वित्त मंत्री जी ने 25

करोड़ रूपये से भी ज्यादा पैसे रखे है। किसानों के खाल पक्के करने का जो काम है यह बहुत ही सराहनीय काम है। जो पैसा इस वर्श रखा गया है इससे सभी बचे हुए खाल पक्के हो जायेगें और हमारे प्रांत की एक भी पानी की बूंद बेकार नही जायेगी।

उपाध्यक्ष महोदय, हमारी प्रधान मंत्री जी के बीस सूत्री प्रोग्राम का एक यह भी सूत्र है कि ज्यादा पेड़ लगाएं जाएं और इस प्रोग्राम पर बल दिया जाये। उपाध्यक्ष महोदय, सरकार ने हरियाणा प्रांत मे पेड़ लगाने के लिये 33 करोड़ रूपये की भारी रकम रखी है इससे हमारे प्रांत मे बहुत बड़ी उपलब्धि होगीं उपाध्यक्ष महोदय, आप भी अच्छी तरह से जानते हैं कि हमारी सरकार ने हरियाणा प्रांत मे एक बहुत ही सरहानीय कार्य किया है। हरियाणा प्रांत मे सबसे गरीब और पिछड़ा हुआ इलाका मेवाल का इलाका था और सबसे गरीब आदमी मेवात मे थे । यह पहली सरकार है और चौधरी भजन लाल जी पहले मुख्य मंत्री है जिन्होंने मेवात के गरीब लोगो की तरफ ध्यान दिया है ओरउनकी गरीबी और पिछड़ेपन को दूर करने के लिये मेवात डिवैल्पमैंट बोर्ड का गठन किया है। उपाध्यक्ष महोदय, आज सभी बड़ फख्र के साथ यह कह सकते है कि मेवाल क्षेत्र के अंदर जो डिवैल्पमैंट के काम हो रहे है वह हमारी सरकार के लिये बहुत प्रसन्नता का विशय है। उपाध्यक्ष महोदय, आज सभी बड़े फख्र के साथ यह कह सकते है कि मेवाल क्षेत्र के अंदर जो डिवैल्पमैंट के काम हो रहे है वह हमारी सरकार के लिये बहुत ही प्रसन्नता का विशय है। उपाध्यक्ष

महोदय, मेवात क्षेत्र के लोगों की अनेकों अच्छी वि ोशताएं है। उनमे सबसे अच्दी वि ोता यह है कि हमारे मेवात भाई मेहनत करने मे सारे प्रांत के लोगो से आगे है। इस बात के लिये हम लोग उन पर फख्र कर सकते है। उपाध्यक्ष महोदय, सबसे जयादा मेहनत करके जो आदमी रोटी कमाता है तो वह मेवाल का रहने वाला ही कमाता है। आपको प्रांत के अंदर जितने भी डिवैल्पमैंट के काम होते हुए नजर आयेंगे वहां पर आपको मेवाल के निवासी ही काम करते हुए नजर आयेंगे। वहां पर आपको मेवात के निवासी ही काम करते हुए नजर आयेंगे। उपाध्यक्ष महोदय, इस बजट मे से करोड़ो रूपया मेवाल डिवैल्पमैंट बोर्ड की तरफ से इस पिछड़े हुए क्षेत्र के लिये खर्च होगा। यह हमारे लिये बहुत ही फख्र की बात हैं मेवात के निसाी ओर वि ोशकर फरीदाबाद ओर गुड़गांव जिले के विधायक वित्त मंत्री जी के और सरकार के बहुत अभारी है। उपाध्यक्ष महोदय, मैंने अभी बताया था कि एस0वाई0एल0 का उद्घाटन 8 अप्रैल को हमारे दे ा की प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी करेंगी ओर दो साल के अंदर अंदर हमें एस0वाई0एल0 नहर का पानी मिल जायेगा। इसलिये मैं सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि एस0वाई0एल0 का हरियाणा प्रांत को जो पानी मिलेगा वह हरियाणा प्रांत की सिंचाई की आव यकता को ध्यान मे रखते हुए हरियाणा के हर कोने मे जाना चाहिए। उपाध्यक्ष महोदय, हमारे फरीदाबाद और गुड़गांव दोनों जिलों मे सिंचाई के लिये पूरी मात्रा मे पानी उपलब्ध नही है। इसलिये मैं सरकार से प्रार्थना करना चाहता हूं कि जहां सारी

स्टेट का इरीगे ान प्वायंट आफ व्यूज से पानी बनता है उसी हिसाब से हमारे दोनो जिलें फरीदाबाद और गुड़गांव की सिंचाई के पानी की आव यकता को मदेनजर रखते हुए सारी स्टेट की प्लान बनाई जानी चाहिए। इसके अलावा डिप्टी स्पीकर साहब, मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारे फरीदाबाद जिले का गठन गुड़गांव जिले से अलग करके लियेा गया है ंफरीदाबाद जिला बनने के बाद वहां पर कुछ ऐसी आव यकताएं है ओर कुछ ऐसी जरूरी डिवैल्पमैंट के काम बाकी हे जिनके न होने की वजह से फरीदाबार जिले के लोगों को बड़ा भारी सफर करना पड़ रहा हैं इसलिये मैं सरकार से निवेदन करना चाहूंगा और सरकार के ध्यान मे लाना चाहूंगा कि फरीदाबाद की सै ान कोर्ट मे जितने भी जुडि ायल औफिसर्ज बैठते है उनके लिये प्रायर्टी बेसिज पर जुडीि ायल कम्पलैक्स बनना चाहिएं उपाध्यक्ष महोदय, फरीदाबाद के 15 सैक्टर मे जहां हमारी डिसिट्रक्ट कोर्ट बनी हुई है वह सैक्टर मार्किट की जगह के अंदर कोई ि ाफ्ट कर दी गई हैं उपाध्यक्ष महोदय, हमने वहां पर देखा है कि छोटे छोटे कमरों के अंदर अदालत की गरीमा पूरी तरह से नही रह पाती है और उसके अंदर वकील इस तरह से भरी जाते है कि वहां पर अदालत की बजाये बाजार का सा सीन नजर आता है। इसलिये मैं सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि फरीदाबाद की कोर्ट के लिये जुडीि ायल कम्पलैक्स प्रायर्टी बेसिज पर दिया जाये।

उपाध्यक्ष महोदय, इस के साथ साथ मै यह कहना चाहता हूं कि फरीदाबाद जिले के अंदर कोई भी डिस्ट्रिक्ट लैवल का स्टेडियम नही है और न ही कोई डिस्ट्रिक्ट लैवल का होस्पीटल है। इसलिये मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि फरीदाबाद जिले मे डिस्ट्रिक्ट लैवल पर स्टेडियम और होस्पीटल बनाए जाये। उपाध्यक्ष महोदय, इसके अलावा मैं एक और बात कहना चाहता हूं हमारे फरीदाबाद जिले का बहुत सा क्षेत्र जमना नदी के साथ साथ लगता है और दूसरी तरफ उत्तर प्रदे ा का क्षेत्र लगता है। उत्तर प्रदे ा सरकार दिन रात काम करके अपनी साइड मे जमुना नदी के किनारे के साथ साथ एक बड़ा भारी चौड़ा बांध बांध कर उस पर 35 फुट चौड़ी सड़क बना रही है जिसके कारण हमारे फरीदाबाद क्षेत्र के ग्रामीण लोगों को बहुत भारी हानि हुई है। जब वारि ा के दिनों मे जमुना नदी मे बाढ़ आती है तो वह पानी उात्तर प्रदे ा की तरफ न फैल कर हमारे हरियाणा के गांवो की तरफ आ जाती है और उससे बहुत नुक्सान होता है। हरियाणा के गांवो की सैंकड़ों और हजारो एकड़ उपजाऊ भूमि बाढ़ के कारण कट कर जमुना मे चली जाती है। इसलिये मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि सरकार इस तरफ ध्यान दे और इस तरफ कोई ठोस कदम उठाये। उपाध्यक्ष महोदय, आप जानते है कि उतरी भारत का सबसे बड़ा इंडस्ट्रीयल कम्पलैक्स फरीदाबादम है और वहां पर बहुत तेजी के साथ उद्योग लगाए जा रहे है । चूंकि फरीदाबाद भाहर औद्योगिक नगरी है इसलिये वहां पर उद्योग और औद्योगिक कालोनी बसाने के लिये जमीन एक्वायर करने की आव यकता है

और जमीन एक्वायर करने के लिये झाड़सैंतली बगैरा गांवो को नोटिस दिए हुए है। उपाध्यक्ष महोदय, मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि वहां पर किसानो की जमीन बहुत उपजाऊ है इसलिये उन गांवों की जमीन एक्वायर कर ली जाये जोकि पहाड़ी भूमि है और उपजाऊ भी नही है। औद्योगिक कालोनी बसाने के लिये पहाड़ी क्षेत्र के गांवों की जमीन एक्वायर कर ली जाये। उपाध्यक्ष महोदय, सारे दे ा के लोग जानते है कि दे ाो मे दे ा हरियाणा जहां दूध दही का खानां सारे दे ा के दूसरे प्रांतों के लोग जब किसी हरियाणवी जवान को देखते है तो यह परजम्प ान करते हे कि हरियाणा के लोग भाारीरिक दृश्टि से बहुत बहादुर है। उपाध्यक्ष महोदय, हमारे हरियाणवी लोगो की बहादुरी की परम्परा प्राचीन समय से रही है क्योंकि लोगो को खाने के लिये घी दूध बहुत ज्यादा मात्रा मे मिलता है। लेकिन देखने मे यह आया है कि हमारे प्रांत के अंदर गरीब आदमी अपने घर मे गाय या भैंस नही रख जायेगें क्योंकि हरियाणा मे चारे की बहुत बड़ी समस्या है। चारे की समस्या इसलिये है क्योंकि जो कम्बाइंड हार वैस्टर है वह खड़ी फसल के अंदर चलता है जिके कारण अनाज तो किसानो को मिल जाता है लेकिन चारा बहुत मात्रा मे वेस्ट जाता है। हमारे प्रांत हरियाणा के अंदर किसी भी कीमत पर चारा उपलब्ध नही है। उपाध्यक्ष महोदय, हरियाणा मे सैंकड़ों फैक्ट्रियां गत्तों और पेपर्ज की लगी हुई है जिनका रा मैटीरियल भूसा होता है लेकिन हमारे यहां पर भूसे की बहुत ही बड़ी समस्या है। मैं आपके माध्यम से अपने वित्त मंत्री जी से यह निवेदन करूंगा कि हमारी सराकार को

फसल की कटाई के लिये हाथ से ओर थ्रेसरों से काटने का प्रबंध करना चाहिए। कम्बाईन हारवेस्टर से फसले नही काटनी चाहिए। क्येांकि कम्बाईन हार्वेस्टर से फसल काटने से काफी भूसा बरबाद हो जाता है। यदि हाथ से फसल काटने का प्रबंध होगा तो भूसा भी अधिक होगा और गरीब लोगो को भी सुविधा होगी। ऐसा होने से हमारे गरीब से गरीब लोगा भी दूध वाले प ाु पाल सकते है।

उपाध्यक्ष महोदय, नैतिक ि ाक्षा के बारे मे भी विपक्ष के साथियों ने जोर दिया हे कि हमारे यहां पर नैतिक ि ाक्षा का प्रसार होना चाहिए। इस विशय पर सभ साथियों ने अच्छे अच्छे विचार रखे है। डिप्टी स्पीकर साहब, बड़ी ही सच्चाई की बात है कि जब तक हम आर्थिक सामाजिक समानता को दूर करने के लिये ि ाक्षक वर्ग की तरफ ध्यान नही देंगे तब तक इस दिया मे आगे बढ़ पाना बड़ा मु ि कल है। डिप्टी स्पीकर साहब आज नौकरियों के अंदर जितनी भी सिलैक ान हो रही है उनके अंदर देहात के बच्चे रह जाते है। आपको भी मालूम है कि आई0ए0एस0, आई0पी0एस0 और एच0सी0एस0 आदि परिक्षाओं मे देहात के बहुत ही कम मात्रा मे बच्चे आगे आ पाते है। इसका एक ही कारण है कि देहात के बच्चों को ठीक प्रकार से ि ाक्षा नही मिल पाती, उन को लाईब्रेरी की सुविधा भी उपलब्ध नही होती जिसकी वजह से गांवों के बच्चें नौकरियां प्राप्त करने से वंचित रह जाते है। इस संबंध मे सरकार से मेरी प्रार्थना है कि हमारे स्कूल और कालेजों के अंदर जो अध्यापक ओर लैक्चरार है, उनकी

जायज मांगें मान कर उन्हे अधिक से अधिक सुविधाएं दी जाएं ताकि वे मन लगा कर बच्चों को पढ़ा सके। इसी के साथ साथ मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि देहात के जो ि ाक्षक है उनको रूरल अलाउंस दिया जाये। जब तक हमारे प्रांत का निर्माता पूरा तरह से सु ि ाक्षित नही होगा उस समय तक नैतिक ि ाक्षा नही आ सकती। मेरे कहने का मतलब यह है कि हमारे प्रांत का जो निर्माता है उसको ज्यादा से जयादा सुविधाएं दी जाये ताकि उनको मनोबल ऊंचा हो और वे दिल लगा कर बच्चो को ि ाक्षा दे सके। ऐसा होने पर हमारे देहात के बच्चे भी कम्पीटी ान मे आगे आंयेगे और उन्हे नौकरियों मे प्राथमिकता मिलेगी। उपाध्यक्ष महोदय, यह बहुत ही खु ाी की बात है कि चौधरी भजन लाल जी ने जो हमारे जिले की पुरानी मांगे थी वे मान ली है। (ाोर)

श्री उपध्यक्षः चौधरी राजेन्द्र सिंह जी आपको बोलते हुए काफी समय हो गया है। अब आप वाइंड अप कीजिये। (ाोर व व्यवधान)

श्री वीरेन्द्र सिंहः आन ए प्वायंट आफ आर्डर सर। आप टाईम को चैक कर ले। अभी तक हमारे लोकदल के केवल 10 सदस्य बोले है और भारतीय जनता पार्टी के 9 सदस्य बोल चुके है । आप इनको ज्यादा समय दे रहे है।

चौधरी संत कंवरः डिप्टी स्पीकर साहब, लोक दल के बहुत कम मैंबर बोले है।

श्री उपाध्यक्षः आप अपना स्थान ग्रहण करे। मैंने इनको वाईंड अप करने के लिये कह दिया है।

चौधरी राजेन्द्र सिंहः उपाध्यक्ष महोदय, हमारे फरीदाबाद जिले के किसानों की काफी समय से एक मांग चली आ रही थी कि यहां पर एक भूगर मिल होनी चाहिए। अब सारे हरियाणा के अंदर 3 नई भूगर मिल और लगनी है। इन तीन मिलों मे से एक भूगर मिल पलवल के अंदर लगाई जा रही है। उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से एक बात और कहना चाहता हूं कि सदन के अंदरहमारे कुछ माननीय सदस्य ऐसी बात कर देते है जो हमारे सब के लिये बड़े भार्म की बात है। इस प्रकार की बातें वि ोश कर श्री जगजीत सिंह पोहलू करते है। (ाोर) वैसे देखा जाये तो ये हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी पार्टी के एक मात्र सदस्य है। (ाोर)

वाक आउट

चौधरी संत कंवरः उपाध्यक्ष महोदय, आप हमारी बातों की तरफ ध्यान नही दे रहे और न ही हमें सुन रहे है, न ही हमें बोलने दे रहे है। आप लोकदल की पार्टी के साथ ठीक प्रकार का व्यवहार नही कर रहे है। इसलिये मैं अपना विरोध प्रकट करते हुए वाक आउट करता हूं।

(इस समय चौधरी संत कंवर सदन से वाक आउट कर गये) (ाोर)

वर्श 1982–83 के बजट पर सामान्य चर्चा (पुनरारम्भ)

चौधरी राजेन्द्र सिंहः उपाध्यक्ष महोदय, इन लोगो ने विधान सभा को एक राजनीतिक मंच सा बना कर रखा दिया है। यह ठीक है कि राजनीति के अदंर मे मतभेद होते है। हरेक पार्टी के अलग अलग विचार हुआकरते है लेकिन फिर भी इन लोगों को कन्स्ट्रैक्टिव क्रिटिसिज्म करना चाहिए। जो इन लोगो के अच्छे सुझाव है वे हम मानते भी है। उपाध्यक्ष महोदय, जहां तक पोहलू साहब की बात का संबंध हे मुझे तो कहते हुए भी भार्म आती है क्योंकि ये यहां पर रोज नए नए सीन क्रिऐट करने लग जाते है। बड़े भार्म की बात है कि यहां पर ये लोग कभी कहते है कि यह सरकार जाट विरोधी है, कभी कहते है हरिजना विरोधी सरकार है। (ाोर)

चौधरी जगजीत सिंह पोहलूः मैं तो अब भी कह रहा हूं कि यह सरकार जाट विरोधी और हरिजन विरोधी सरकार है। (ाोर)

चौधरी राजेन्द्र सिंहः क्या इन्होंने ही जाटों का ठेका लिया हुआ है? मैं तो जात बिरादरी से संबंध नही रखता क्योंकि मैं तो स्वयं आर्यसमाजी हूं। इन लोगो को ऐसी बाते कहते हुए कुछ सोचना चाहिए। (ाोर) पोहलू साहब हमारे यहां सदन मे एक * * * * बने हुए है। (ाोर एवं विघ्न) डिप्टी स्पीकर

साहब, मैं अंत मे अपने वित्त मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत किए गए बजट का पुरजोर समर्थन करते हुए अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

चौधरी टेक राम (मुन्ढालखुर्द): उपाध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मै आपका धन्यवाद करना चाहता हूं क्योंकि आपने मुझे बोलने का समय दिया है। उपाध्यक्ष महोदय, यहां पर कई दिनो से विपक्ष और पक्ष की ओर से बजट के ऊपर अपने अपने विचार प्रकट किये जा रहे है। मैं भी इस बजट का अपना विरोध प्रकट करते हुए कुछ बातें कहना चाहता हूं। सबसे पहले मैं एग्रीकल्चर के बारे मे कहना चाहता हूं। आपको भी मालू है कि हमारे यहां पर 10–15 रारेज से लगातार ओले पड़ रहे है। जिस दिन 15 तरीख को हाउस भुरू हुआ था उस दिन भी ओलावृश्टि के संबंध मे कई सदस्यों की ओर से काल अटैन्न ान नोटिसिज आदि आये थे। चौधरी भजन लाल ने हाउस को आ वासन भी दिलाया था कि उनको 400 रूपये प्रति एकड़ तक का मुआवजा दिया जायेगा। जिस दिन सी0 एम0 साहब ने आ वासन दिया था उस के बाद भी 10 दफा ओले पड़ चुके है। इस संबंध मे मेरी सरकार से अज्र है कि उनको 2000 रूपये तक का मुआवजा दिया जाये। जब तक किसानो को 2000 रूपये तक का मुआवजा नही दिया जायेगा तब तक उनका कोइ भला नही होगा।

डिप्टी स्पीकर साहब, सी0एम0 साहब की एक और बात देखने मे आ रही है, ये रोजाना नए नए पत्थर रख रहे है। इन्होंने इतने पत्थर रख दिये है कि यदि चौधरी भजन लाल 30 साल तक

भी लगातार मुख्यमंत्री रहे तो भी इन द्वारा रखे गये पत्थरों का काम पूरा नही हो सकता। डिप्टी स्पीकर साहब, दो तीन रोज पहले सरकारी पक्ष के एक भाई ने बजट पर बोलते हुए जिक्र किया था कि यहां काफी गवर्नमैंटस आई। उन्होंने कहा कि यहां चौधरी बंसीलाल की सरकार आई, चौधरी देवी लाल की सरकार आई और चौधरी भजन लाल की सरकार भी आई। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि चौधरी बंसी लाल ने तो बीस सूत्री कार्यक्रम के तहत भिवानी के अंदर घंटाघर से जो अनाउसमैंट की थी वह सबके सामने है और चौधरी भजन लाल यने 37 एम0एल0एज0 के साथ कुतुबमीनार के ऊपर से जो अनाउंसमैंट की है वह सारी दुनिया के सामने हे और उन्हे यह पता है कि सबसे ज्यादा दल बदल करने वाली सरकार आज हरियाणा मे बैठी है। (विघ्न)

डिप्टी स्पीकर साहब, यह बजट एक स्टंट है। इलैक ान मे पैसा खर्च करने के लिये इस बजट मे 19 करोड़ रूपये का घाटा दिखाया गया हैं डिप्टी स्पीकर ससाहब,दो चार बाते इसके बारे मे यहां कहना चाहता हूं कि नैतिकताके बारे मे साहब, दो चार बाते मैं इसके बारे मे यहां कहना चाहता हूं। नैतिकता के बारे मे यहां सवाल आया । मेरे आदणीय मिनिस्टर गुप्ता साहब गुप्ता सहाब यहां बैठे है। इन्होंने अपनी लड़की की भाादी मे 8 लाख रूपये देने की अनांउसमैंट की है। (विघ्न)

स्थानीय प्र ाासन मंत्री (श्री मांगे राम गुप्ता): आन ए प्वायंट आफ आर्डर सर। डिप्टी स्पीकर साहब, चौधरी टेक राम जी

बिल्कुल गलत बात कह रहे है । मेरे तो भाादी योग्य लड़की ही कोई नही है। इन्हें यह इल्जाम वापस लेना चाहिए।

चौधरी टेक रामः आपने अपनी भतीजी की भाादी मे अनांउस किया था।

श्री मांगे राम गुप्ताः डिप्टी स्पीकर साहब, अगर मेरी भतीजी की भी कोई भाादी हुई हो तो भी मैं गुनाहगार हूं। (विघ्न एवं भाोर) डिप्टी स्पीकर साहब, या तो ये इस बात का जवाब दे या माफी मांगे।

श्री उपाध्यक्षः इनके पास इनका कोई जवाब नही है।

वित्त मंत्री (चौधरी खुर ाीद अहमद): डिप्टी स्पीकर साहब, उनके रिमाार्कस ऐक्सपंज करवा दिये जाये।

श्री उपाध्यक्षः ऐक्सपेक ान की कोइ जरूरत नही क्यौंकि मिनिस्टर साहब की तरफ से क्लीयरैंस आ गई है। (ाोर)

चौधरी उदय सिंह दलालः ** * *

* * * * * *

चौधरी संत कंवरः * * * *

* * * * * *

श्री उपाध्यक्षः कुछ रिकार्ड न किया जाये। (विध्न) आप चैलेंजबाजी बाहर जाकर लीजिए।

श्री मांगे राम गुप्ताः आन ए प्वायंट आफ आर्डर सर। डिप्टी स्पीकर साहब, पहले तो चोधरी टेक राम ने ऐ इल्जाम मेरे ऊपर लगाया और उसके संबंध मे मैने हाउस के साने अपनी बात रखी की आज से दो साल पहले भी अगर मेरी लड़की की भाादी हुई हो तो मैं गुनाहगार हूं। उन्हें इसके लिये माफी मांगनी चाहिए। अब दलाल साहब ने सटटे के बारे मे बात कह दी। (विघ्न) डिप्टी स्पीकर साहब, इस बारे मे तो मेरे खिलाफ हाई कोर्ट मे रिट हुई है। उन लोगों ने, जिनके पास इसकी मंजूरी है, हाई कोर्ट मे कहा है कि मंत्री पुलिस की मददसे हमारा काम बंद करवाना चाहता है लेकिन ये यहां इस तरह की बाते करते है । (ाोर)

चौधरी उदय सिंह दलालः डिप्टी स्पीकर साहब, मैं बड़ी जिम्मेवारी के साथ यह बात कहता हूं। उनके पास लाईसैंस है या नही यह तो मुझे पता नही लेकिन इस बात का मुझे पता है कि 50 हजार रूपये महीने के वे इनको ओर इनके आदमियों को देते है। (ाोर)

श्री उपाध्यक्षः दलाल साहब, यह आप लिख कर दे दीजिये।

चौधरी उदय सिंह दलालः आप कोई इंक्वायरी बैठा दो। हम लिख कर भी दे देंगे।

श्री मांगे राम गुप्ताः उपाध्यक्ष महोदय, मैं इनका चैलेंज स्वीकार करता हूं। आप कोई कमेटी बैठा दीजिये। अगर यह बात साबित हो जाये तो मैं इस्तीफा दे दूंगा वरना ये इस्तीफा दे दे।

चौधरी उदय सिंह दलालः मैं स्वीकार करता हूं। उस कमेटी के चेयरमैंन डिप्टी स्पीकर साहब आप होंगे। दो आदमी आप अपने साथ और ले ले। (विघ्न)

श्री उपाध्यक्षः दलाल साहब, आप बैठिये। (विघ्न)

चौधरी टेक रामः डिप्टी स्पीकर साहब, भिवानी के अंदर जितनी खाली जमीन थी जितने खाली प्लाटस थे, उनको आज एक ही जाति के लोगों ने नाजायज तौर वर घेर लिया है। (विघ्न) वहां जो मंदिरों की जगह थी, तालाबो की जगह थी, उस सब जगह को घेर लिया गया है। चौधरी भजन लाल जी जब वहां गये थे तो इन्होंने वहा यह अनांउंस किया था कि वे प्लाटस हरिजनों की बस्ती के लिये होंगे लेकिन एक मंत्री के आदमियों ने, जिनका मैं नाम नही लेना चाहता, उन प्लाटस पर कब्जा कर लिया है। आज भिवानी मे चारो तरफ ऐसे हालात हो रहे है। (विघ्न) 100 परसैंट मे से 99 परसैंट एक ही जाति के आदमी है। एस0एस0एस0 बोर्ड मै भी काफी घपला हुआ है। कोआप्रेटिव बेंको मे जो कुछ हुआ है उसकी ताईद तो दो तीन दिन पहले कांग्रेस के कुछेक भाइयो ने भी यहां की है। ऐजुके ान डिपार्अमैंट के बारे मे बताया गया है कि प्राईवरी से मिडिल 210 और मिडल से हाई 125 स्कूल

बनाए गए है। हायर सैकेंडरी कोई स्कूल मंजूर नही किया गया है। लेकिन मेरे हल्के मे न तो प्राईमरी स्कूल दिया गया है, न मिडिल स्कूल दिया गया है और न ही हाई स्कूल दिया गया है। मैं एजूके ान मिनिस्टर के नोटिस मे एक बात और लाना चाहता हूं। मुंढाल स्कूल के अंदर एक हैडमास्टर हैं उसकी बात इनके नोटिस मे भी आई हे, डी0सी0 के नोटिस मे भी आई है लेकिन उस बारे मे कोई एक ान नही लया गया। उस हैडमास्टर के खिलाफ स्कूल के बच्चों ने स्ट्राईक कर दी थी। रोजाना उसका काम था कि वह बच्चों से कहता कि जो मुझे भाराब की बोतल पे ा नही करेगा उसे मैं पढ़ाऊंगा नही। उस हैडमास्टर कामैं नाम नही लेना चाहता। लड़कों ने सात रोज तक स्ट्राईक की। डी0पी0आई0 और डी0सी0 साहब ने उसे तुड़वाया। भिवानी मे डी0सी0 साहब की कोठी के सामने लड़कों ने धरना दिया। उन लड़कों ने लिख कर भी दिया कि अगर हैडमास्टर की ट्रांसफर न हुई तो हम वीरगति को प्राप्त हो जायेगी। एक लड़का उनमे पंडितों का था। वह स्कूल के अंदर इ तहार लगा कर आया। एक रोज वह हवालात मे भी रहा। वह लड़का मर गया यह लिख कर कि मेरा जो काम था वह मैने कर दिया लेकिन इसके बावजूद भी उस हैडमास्टर की ट्रांसफर नही हुई। (विघ्न) ऐसी चीजे ऐजुके ान के महकमें मे नही होनी चाहिए।

डिप्टी स्पीकर साहब, अब मै वाटर सप्लाई के बारे मे एक बात कहना चाहता हूं। मैं आपके द्वारा सरदार लछमन सिंह

जी से अर्ज करूंगा कि चौधरी देवी लाल जी के टाईम पर जो वाटर सप्लाई स्कीमज मंजूर हुई थी, वह बंद पड़ी है। इसी प्रकार से बंसी लाल जी के टाईम पर जो स्कीम चालू की गई थी उनकी नालियों को भी आज तक साफ नही कराया गया। बापौड़ा, तिगड़ाना और मुंढाल मे वाटर सप्लाई की स्कीमे चालू है लेकिन उनकी नालियों को आज तक साफ नही करवाया। 52–52 गांवो की वाटर सप्लाई स्कीम्ज है उनकी जो नहर की नालियां है। वे बिल्कुल साफ नही करवायी । उन्हें जल्द से जल्दी साफ करवाया जाये।

कुछ मैं ट्रांसपोर्ट के विशय मे भी अर्ज करना चाहता हूं। 25 परसेंट ज्यादा टैक्स लगाया है। बसों मे बहुत ज्यादा भीड़ रहती है। मुढांल के एरिया मे भिवानी से मुढांल तक दो चार बसें और लगायी जाये क्योंकि लोगों को काफी तकलीफ रहती है इन भाब्दो के साथ मैं इस बजट का विरोध करता हूं।

श्री मूल चंद मंगला (पलवल): डिप्टी स्पीकर साहब, वित्त मंत्री महोदय ने जो सन् 1982–83 का बजट हाउस मे पे ा किया है मै उसका विरोध करने के लिये खड़ा हुआ हूं। यह बजट घाटे का, निरा ाजनक, निकम्मा और बेबुनियाद है। यह संज्ञा में इस बजट को देना चाहता हूं। साथ ही यह बजट किसान, मजदूर, हरिजन, साधारण व्यापारी, साधारण मुलाजिम या सरकारी मुलाजिम को कोई उत्साह या सुविधा देने वाला नही है। मैं यह कह सकता हूं कि इसमे कजो आंकड़े पे ा किये गये है वे थोड़े बहुत बढ़ा

चढ़ा कर पे ा किये गये है जो आंकड़े बढ़ाये है उनसे पता चलता है कि आने वाले वर्श मे महंगाई होगी। इन आंकड़ो को देखने से यह भी पता चलता है कि इस बजट से आम जनता को लाभ नही होगा। इन्होंने इस बजट के पेज तीन पर लिखा है कि जरूरी चीजों दकी सप्लाई को सुनि चत करने के लिये भी कदम उठाये गये है। सार्वजनिक वितरण पद्धति को मजबूत बनया गया जिसमे राज्य मे जरूरी वस्तुओ को मुहैया कराने मे एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की गई है। लेकिन मैं यह वात नही समझता कि वित्त मंत्री जी ने आम जरूरत की चीजे आम जनता तक कैसे पहूंचायी है? जनता राज मे सभी चीजे मिलती थी। आज आम जनता के लिये मिट्टी कातेल, डीजल, सीमेंट उपलब्ध नही है। भाहरों मेलोग लाइनों मे खड़े रहते है। तमाम दिन लाईन मे खड़े होने के प चात भी तेल नही मिलता। जनता पार्टी के राज मे लोगो ने अपने रा ानकारर्ड फैंक दिये थे लेकिन अब फिर बनवाने पड़े है। ये कहते है कि वितरण प्रणाली ठीक है, यह गलत बात है । आज सीमेंट की कीमत 35 रूपये कट्टा है जबकि 70 रूपये मे ब्लैक मेमिल रहा है। आप यह कैसे कहते है कि वितरण प्रणाली ठीक है। सारे हरियाणा मे हाय हाय मच रही है। सीमेंट के भाव बढ़ा दिये गये है। घी के टीन का भाव 30 रूपये ज्यादा हो गया । इस का कारण यह है कि सीमेंट और घी के कारखाने वालो से सरकारने पैसे लिये है इसलिये भाव बढ़ाये गये है।

उपाध्यक्ष महोदय, अब मैं सिंचाई के विशय मे कुछ अर्ज करना चाहता हूं। रावी व्यास के पानी के बारे मे ट्रेजरी बैंचिज के मैंबरान ने बड़ी तारीफ की है। इन्होंने वायदा किया है लेकिन वायदा पूरा होगा या नही होगा यह तो फिर ही पता लगेगा। आज हरियाणा असैम्बली मे जो भाशण हो रहे है उसी तरह के भाशण पंजाब असैंबली मे भी हो रहे है। इस लिये मैं चाहता हूं कि रावी ब्यास पानी के बारे मे आधे घंटे की बहस होनी चाहिए ताकि सही स्थिति कापता चला सके। अगर मुख्य मंत्री जी को इस बात पर वि वास है कि ठीक फैसला हुआ है तो हमें इस पर बहस का मौका मिलना चाहिए लेकिन वे बहस का मौका नही देना चाहते। उन्हें इस बात का खदसा है कि अगर यहां हाउस मे बात होगी तो हमारे पंजाब के भाई नाराज होंगे।

डिप्टी स्पीकर साहब, यहां बिजली के विशय मे काफी कुछ कहा गया लेकिन आज किसान और घरेलू आदमी भी बिजली न मिलने के कारण रे ाान है जिस आदमी का छोटा यूनिट है या बड़ा है वे भी सभी बिजली के बिना परे ाान है। लेकिन सरकार कह रही है कि बिजली का वितरण ठीकहो रहा है। मेरा हल्का किसानों का हल्का है। साल और छः महीनें हो गये है लेकिन बेचारो को बिजली के कनैक ान नही दिये जा रहे है। मैं समझता हूं कनैक ान न देना इस बात का द्योतक है कि बिजली व्यवस्था ठीक नही है। उपाध्यक्ष महोदय, इस महकमे मे बड़ी धांधलेबाजी है। आप सुन कर हैरान हौंगे कि भाादी या दूसरे फंक ानज होते

हैउनमे कोई भी मीटर नही लगता है। हर साल कितने ही फक ांज होते है । सभी लोग डायरेक्ट कुनैक ान लेते है। लाखों यूनिट बिजली यों ही जलाते है। भाादी या दूसरे फंक ांज होते है उनमे अलग से मीटर लगना चाहिए लेकिन सरकार के भी कुछ ऐसे नियम है जिनके कारण वे सैपरेट मीटर इस परपज के लिये नही दे सकते। अगर ऐसे सख्त नियम है तो उन्हे तबदील करना चाहिए जिससे लोग अलग से, इस परपज के लिये मीटर लगवा सकें क्योंकि ऐसा करने से जो भी कंजम्प ान होगी उसका हिसाब किताब होगा और बिजली बोर्ड को भी आमदन होगी। (इस समय श्री अध्यक्ष पदासीन हुए) स्पीकर साहब, पलवल के विशय मे एक बात और कहना चाहता हूं। पलवल मे भाूगर मिल लगाया जा रहा है। वह सैंक ान हो गया है। लाखो रूपये के भोयर हमने बिकवाये थे और पचास एकड़ भूमि मुफ्त देने का भी वायदा किया हुआ है लेकिन आज तक उस जमीन को सरकारने एक्वायर नही किया। क्या कारण है कि उसे एक्वायर नही किया जा रहा है। जब वहां चीनी मिल लगना है सैक ान हो गया है फिर जमीन को एक्वायर करने मे सरकार को क्या दिक्कत पे ा आ रही है। इसलिये जमीन एक्वायर करके वहां जल्द से जल्द भाूगर मिल लगाया जाये।

यहां पर रोजगार देने की भी बात कही गई। आज देहातों मे पढ़े लिखे युवक बेकार फिर रहे है। यहां चण्डीगढ़ मे हरियाणा के युवक इंटरव्यू देने आते है। उनकी एजूके ानल क्वालिफिके ांज पूरी होने के बावजूद भी उन्हे सिलैक्ट नही किया

जाता है। अभी पिछले दिनों आई0टी0आई0 मे दाखिले की सिलैक ान होनी थी। कुल 300 सीट्स थी। तीन सौ मे से केवल 150 हरियाणा के लिये गये । मैं आपके द्वारा सरकार से पूछना चाहता हूं कि जब हरियाणा के यूवक फिर रहे है तो उन्हे क्यों नही लिया गया। उनकी एजूके ानल क्वालिफिके ान पूरी है लेकिन वहां यू0पी0 और राजस्थान के लोग लिये गये है। यू0पी0 की एजूके ान का स्टेंडर्ड हरियाणा सेनीचा है। वहां के बच्चे यहां आ जाते है लेकिन हमारे बच्चे वहां जाते है तो उनका सिलैक ान नही होता है। मैं कोई प्रांतीयता की बात नही कर रहा हूं। अगर यू0पी0 के बच्चे यहां दाखिल हो सकते है तो हमारे बच्चे भी वहां दाखिल होने चाहिए। ऐसा करने से हमारे बच्चे बेरोजगार रह जाते है और दूसरी स्टेटस के बच्चे रोजगार पर लग जाते है। इसलिये इस खामी को दूर किया जाना चाहिए।

Mr. Speaker: Just a minute please. I want to reduce the time to seven munutes per member. टाईम चूंकि बहुत कम रह गया है, इसलिये अगर सब इससे सहमत हो, तो ऐसा कर लिया जाये।

आवाजें: ठीक है जी।

श्री मूल चंद जैन: स्पीकर साहब, भाई खूर ाीद अहमद जी यहां पर बैठे हुए है। मैं उनको बताना चाहता हूं कि वहां पर दो कालोनीज बसी हुई है। लेकिन गवर्नमैंट उस जगह को एक्वायर करने जा रही है। वहां पर लोगो ने अपने मकान बनाये

हुए है। वहां पर देहात के रहने वाले लोगो ने मकान बनाये हुए है लेकिन इन सब के बाबजूद सरकार ने दफा 4 का नोटिस इ ाु कर दिया है। इससे लोग बहुत परे ाान है। मेरी सरकार से प्रार्थना है कि वहां पर जो दूसरी जमीन बेकार पड़ी है, उसको ले लिया जाये। जो कालोनी पहले से बसी हुई है, जिसके मकानों के नक ो म्यूनिसिपल कमेटी से सैंक ांड है, उसको एक्वायर न किया जायें अगर आप ऐसा करेंगे तो लोगो को बड़ी भारी परे ाानी होगी। लोगो मे इस वजह से बड़ी बेचैनी है। आखिर मे, मैं सड़ेकों के बारे मे एक बात कहना चाहूंगा । (विघ्न व भाोर) आखिरी बात कहकर मैं बैठ जाऊंगा। सड़कों के बारे मे मेरे हल्के मे पोजी ान ऐसी है कि एक गांव रायपुर है जो कि हथीन रोड़ पर है। केवल 250 मीटर का फाला है। वहां पर हमने काम के बदले अनाज कार्यक्रम के दौरान मिट्टी भी डलवाई हुई है। लेकिन वहां पर अभी तक सड़क नही बनी है, एक तो वह सड़क बननी चाहिए दूसरे आजादपुर जहां पर कि 400 घरों की आबादी है, वहां पर भी सड़क बननी चाहिए। (घंटी) अच्छा जी धन्यवाद।

कामरेड भांकर लाल (सिरसा): स्पीकर साहब, मैं तो सबसे पहले यह कहना चाहता हूं कि यह जो बजट हाउस मे रखा गया है, मैं इसकी मुखालिफ्त करता हूं क्योंकि यह बजट इलैक ान को दृश्टि मे रखते हुए पे ा किया गया है और यह सारे हरियाणा के साथ एक धोखा है। इस बारे मे, मैं एक बात और कहना चाहता हूं। वह यह कि सिरसा के अंदर जो कपास या

नर्मा पैदा होता है, वहां की जमीन उसकी पैदावार बहुत कम देने लग गयी है। अगर वहां पर भूगर मिल हरियाणा सरकार लगा दे तो वहां पर गन्ने की फसल बहुत ज्यादा पैदा होनी शुरू हो जायेगी। यह सारे जिले की मांग है कि वहां पर गन्ने की फसल बहुत ज्यादा पैदा होनी शुरू हो जायेगी। यह सारे जिले की मांग है कि वहां पर एक भूगर मिल जरूर लगनी चाहिए। एक बात मैंने कल भी हाउस मे कही थी क्लास–I और क्लाज–II के अंदर कर्मचारियों को प्रोमो ान के अंदर भी रिजर्वे ान मिलनी चाहिए। दूसरे सूबों मे जैसे उनको प्रोमो ान के अंदर रिजर्वे ान मिल रही ह, उसी तरह से हरियाणाके अंदर भी मिलनी चाहियें यहां पर यह रिजर्वे ान इन प्रोमो ान 1972 से बंद की हुई है। इस बारे मे एक चिट्ठी चीफ सैक्रेट्री, हरियाणा सरकार की तरफ से सन् 1972 मे इ ू हुई थी, उसके बाद से वह प्रोमो ान बदं है। जो ि ाडयूल्ड कास्टस औरबैकवर्ड क्लासिज के लिये 6.1 और 11.1 की रे ाो के हिसाब से रिजर्व हाानी चाहिए वह नही है। इसलिये मेरा कहना यह है कि जैसे ऐक्सीअन से एस.ई. नायब तहसीलदार से तहसीलदार, थानेदार से डी.एस.पी. बनते है, उसी तरह से इनके अंदर भी सरकार की मर्जी के मुताबिक न बनाकर रिजर्वे ान के अनुसार बनाने चाहिये। मेरा कहना यह है हक चीफ सैक्रेटरी की उसचिट्ठी मे जो फैसला किया गयाहै उसको वापिस लिया जाये। जिसे तरह से बैकवर्ड क्लासिज और हरिजनों के लिये 100 मे से 10 और 100 मे से 20 पोस्टे रिजर्व होती है, उसी तरह से इनको प्रोमो ान के अंदर भी रिजर्वे ान मिलनी चाहिए। एक बात

मैं यह भी कहना चाहात हूं कि हमें अपना खर्चा घटाना चाहिए। जितना भी हमारा खर्च बढ़ेगार उतने ही हरियाणा की जनता पर टैकस लगेंगे। हरियाणा के अंदर यह जो जगह जगहज पर पर्यटन स्थल बनाये जा रहे हे यह भाराब खोरी के अड्डे है। सारे हरियाणा के अंदर जितने भी पर्यटन स्थल बनाये जा रहे है, यह भाराबखोरी के अड्डे है। सारे हरियाणा के अंदर जितने भी पर्यटन स्थल है, उनके ऊपर खर्च करने की हिम्मत हमारे हरियाणा जैसे गरीब प्रदे ा के लोगो की नही है और न ही इसकी जरूरत है। इन होटलों मे जो इतने मंहगे है केवल अमीर लोग ही जाकर अय्या ी उड़ाते हे। मैं खास तौर पर सिरसा जिले के बारे मे एक बात और कहना चाहता हूं । न तो इस मुख्य मंत्री के काल मे और न ही किसी पिछले मुख्य मंत्री के समय मे वहां पर कोई विकास कार्य ठीक ढंग से हुआ है। इस वक्त तो बिल्कुल भी नही हुआ है। मैं यह मानता हूं कि इस सरकार ने अढ़ाई एकड़ तक के मालिक किसानो के खाल पक्के करने का खर्चा बिल्कुल माफ किया है। लेकिन उसे बड़े किसानो का नही किया है। इस वक्त हरियाणा की जनता की एक आवाज है कि पक्के खाल करने का खर्चा सरकार को हम नही देंगे। सरकार को खूद उसे बर्दा त करना चाहिए। यही नही, जो खाल पक्के किये गये है, वह तमाम के तमाम टूटे फूटे पड़े है। इसलिये मेरा सरकार से यह कहना है कि खालों को पक्के करने का तमामा खर्चा सरकार खुद बर्दा त करे।

श्री अध्यक्षः कामरेड भांक लाल जी, आपका टाईम समाप्त हो गया है, आप वाईंड अप करें।

कामरेड भांकर लालः बहुत अच्छा जी, मैं अभी खत्म ही कर रहा हूं। इस वक्त हरियाणा के अंदर जो मंत्री है या कारपोरे ांज के चेयरमैन है, चाहेक वे अब है या पहले रहे है, पिछले 5 सालों के अंदर उनकी जायदाद मे कितनी बढ़ौतरी हुई है, इसका जायजा लिया जाये। इसके लिये एक कमी ान मुकर्रर किया जाये जो इस बात की जांच करे कि उनकी वाकई जायज है या नही। जहां तक मेरी जायदाद के ब्यौरे का ताल्लुक है मैं अब भी देने के लिये तैयार हूं। पहले भी मैंने तो अपनी जायदाद का ब्यौरा दिया है और अब भी देने के लिये तैयार हूं। आप कमी ान तो मुकर्रर करो। (व्यवधान व भाोर) अच्छा जी धन्यवाद।

चौधरी नारायण सिंह (पटौदी, एस.सी.)ः अध्यक्ष महोदय, वर्श 1982–83 का जो बजट वित्त मंत्री जी ने इस हाउस मे पे ा किया है, उस पर 3–4 रोज से बहस चल रही है दोनों तरफ के मेरे साथियों ने इसके हक मे और विरोध मे बोला है। जहां तक मेरा ख्याल है, यह बजट एक बहुत ही बेहतर और बहुत ही अच्छा बजट है जोकि वित्त मंत्री जी ने पे ा किया है। इसके अवास मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि चौधरी भजन लाल जी के चीफ मिनिस्टर बनने के बाद यही बजट नही, इससे पहला बजट भी ठीक बना है। हमारे अपोजी ान के भाई अब भी यह कहते है कि टैक्स इसलिये नही लगाये गये क्योंकि इलैक ान्ज सिर पर आ रहे

है। यही बात 1981–82 का बजट पे ा करने के बाद मे हुई डिस्क ान के दौरान इन्होंने कही थी । दरहकीकत चौधरी भजन लाल और चौधरी खुर ाीद अहमद साहब, यह बात अच्दी तरह से जानते है कि हरियाणा की जनता बहुत गरीब है, यह टैक्सो का बोझ बर्दा त नही कर सकती। मेरा तो विचार यह है कि इसी लिये टैक्स नही लगाये गये है क्योकि हमारी जनता इस बोझ को उठा नही सकती। मेरे हल्के पटौदी मे जब से यह मूल्क आजाद हुआ, वहां पर सबसे पले कोई भी तरक्की याफता काम नही हुए थे। जब से चौधरी भजन लाल जी की सरकार आयी है मेरे हल्के मे कई तरक्की याफता काम हुए है। एक तो दो कालेज टेक ओवर किये गये है। दूसरे पटौदी को तहसील हैडक्वार्टर करा दे दिया गया है और वहां पर तहसील बैठा दी गई हैं। मैं इसके लिए अपनी सरकार का वि ोश रूप से भाुक्रगुजार हूं क्योंकि 30 साल से हमारी यह मांग थी। तीसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि इस सरकार ने सड़कें दीं। इसके लिए मैं सरकार का भाुक्रिया आद करना चाहता हूं। स्पीकर साहब, पटौदी हलका में दो कमेटियां हैं एक तो फरूखनगर में है और दूसरी पटौदी में हैं। इन दोनों कमेटियों की हालत बड़ी खस्ता है। पिछले दिनों चौधरी भजन लाल जी वहां गए थे और इन्होंने वहां पर कुछ रूपया भी दिया था लेकिन कुछ काम ऐसे हैं जो वहां पर होने चाहिएं लेकिन वे पूरे नहीं हुए। इसलिए उन कमेटियों को और रूपया दिया जाना चाहिए। स्पीकर साहब, फरूखनगर में एक इमार हैं। यह इमारत बहुत पुरानी है। मेरी प्रार्थना है कि आसार कदीमा को लिखा जाए

कि इस इमारत को गिरने से बचाया जाए। स्पीकर साहब, फरूखनगर से रेलवे स्टे ान तक स्ट्रीट लाइट नहीं हैं। वहां पर काफी अन्धेरा रहता है। आने जाने वाली सवारियों को काफी दिक्कत का सामना करना पड़ता है। भाहर ने ग्यारह हजार रूपया भी इकट्ठा करके स्ट्रीट लाइट के लिए दिया है इसलिए मेंरी प्रार्थना है कि कोई भी कमेटी स्ट्रीट लाईट लगाने की जिम्मेदारी ले और वहां पर स्ट्रीट लाईट लगाई जाए। स्पीकर साहब, मेरी प्रार्थना है कि पटौदी में कौमन लैटरीन बनाई जाएं और इस काम को जितना जल्दी हो सके पूरा किया जाए। स्पीकर साहब, वहां पर हरिजन बस्ती में से एक सड़क निकलती है इसके कारण वहां पर बहुत ज्यादा ऐक्सीडेंट होते है। मेरी प्रार्थना है कि इस सड़क को वहां से हटा कर बस्ती से दूर हटाया जाए जिससे कि ऐक्सीडेंट न हो सके। मैं इतना ही कहकर समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

चौधरी पीर चन्द (रतिया, एस.सी.): माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे टाईम देकर मुझ पर बहुत बडा अहसान किया है। 1982–83 का जो बजट चौधरी खुर ाीद अहमद ने पे ा किया है उसके लिए मैं उनका भाुक्रिया आद करता हूं और इस बजट का समर्थन करता हूं। जब मैं अपोजी ान में था उस वक्त भी बजट के ऊपर बोलने का मुझे मौका मिला था और अब पिछले दो तीन सालों से जब से चौधरी भजन लाल मुख्य मंत्री बने हैं, मुझे बोलने का मौका मिला है लेकिन जिस प्रकार का बजट दो

तीन साल से आ रहा है ऐसा बजट पहले नहीं आता था। इस बजट के अन्दर गरीब आदमी और हर कौमन आदमी का ध्यान रखा गया है। गरीब आदमी को ऊंचा उठाने के लिए इसके अन्दर प्रोपोजल रखी गई है। स्पीकर साहब, एस.वाई.एल. का झगड़ा काफी दिनों से चल रहा था ओर अब हमारी प्रधान मंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी ने पानी का फैसला करके हरियाणा के लोगों पर बड़ा भारी एहसान किया हैं इस पानी से हरियाणा के हर गरीब आदमी को फायदा पहुंचेगा। उनको नई जिन्दगी मिलेगी। स्पीकर साहब, यह केस पिछले ग्यारह साल से उलझाा हुआ था। हमारे मुख्य मंत्री जी ने इसका फैसला कराने के लिए बड़ी मेहनत की और बड़ी दौड़ धूप की और इनकी मेहनत का ही फल हरियाणा को मिला है। स्पीकर साहब, पिछले अढ़ाई साल में हर गांव को इस सरकार ने पक्की सड़क से जोड़ दिया है यह भी बहुत सराहनीय काम है और अब किसी भी किसान को अपना माल मण्डी में ले जाने में कोई दिक्कत नहीं है। इस सरकार ने हर हरिजन बस्ती में लाईट देकर हरिजनों पर बहुत बड़ा अहसान किया है। गरीब लोगों को एक नई रो ानी दी है और गरीब लोगों को रो ानी में रहने का अधिकार दिया है। इस अहसान को गरीब आदमी कभी भूल नहीं पाएंगे।

स्पीकर साहब, हरिजन कल्याण निगम की रा ि ा दो करोड़ से पांच करोड़ कर दी गई है और बैकवर्ड क्लासिज निगम को एक नया जीवन दिया है। रा ि ा बढ़ने से जो हरिजन लोग है,

जो गरीब लोग है उनको अब ज्यादा कर्जा मिल सकेगा। यह गरीब आदमी को नई जिन्दगी देने की बात है। गरीब आदमी और बेरोजगार आदमी अब अपना रोजगार भुरू कर सकेगा। सरकार का यह भी एक बहुत सराहनीय काम है। अध्यक्ष महोदय, मैं अपने हल्के के बारे में भी बहुत सी बाते कहना चाहता था लेकिन समय कम है। अगर मुझे दो मिनट और दे दिए जाएं तो मैं अपनी कांस्टीटुएंसी के बारे में भंी कुछ कह सकता हूॅ । स्पीकर साहब, पहले जो सरकारे आती रही हैं। उनके समय में सरकारी सर्विसिज में किसी भंी क्लास के अन्दर हरिजनों का कोटा पूरा नहीं था और पहले हरिजनों के साथ बहुत ज्यादा गैरइन्साफी होती रही हैं लेकिन इस सरकार के आने के बाद काफी भाार्टफाल पुरी हुई है लेकिन अभी भी कुछ कमी है। मेरी सरकार से दरखाथ्त है कि इस भाार्टफाल को पूरा किया जाए और निगमों के अन्दर जो रिजर्वे ान नहीं है वहां पर भी रिजर्वे ान की जाए। मेरा वि वास है कि सरकार इस काम को अव य पूरा करेगी। स्पीकर साहब, सरप्लस जमीन को हरिजनों में बांटकर सरकार ने बहुत सराहनीय कार्य किया है। जिन गरीब और हरिजनों के पास रहने का सहारा नहीं था, गूजारे का कोई सहारा नहीं था, ऐसा करने से अब उनका गुजारा चल सकेगा। काफी लोग कास्त करने वाले थे उनकी सरप्लस जमीन मिल जाने से अब वे का त कर सकेंगें। मेरी सरकार से प्रार्थना है कि कई जगहो पर इन लोगों को कब्जा नही दिया गया है, बड़े लोगों ने उन जमीनों और प्लाटों पर कब्जा कर रखा है, जमीन बड़े लोगों से खाली करवाइ जाए ओर

हरिजनों को उसका कब्जा दिलवाया जाए। स्पीकर साहब, मेरा हल्का रतिया हमेशा से बैकवर्ड रहा है क्योंकि वहां पर किसी भी सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया। वहां पर एक कालिज होना चाहिए। रतिया से पच्चीस किलोमीटर दूर फतेहाबाद है ओर तीस किलोमीटर टोहाना है और वहां पर कालिज हैं। मेरी सरकार से प्रार्थना है कि वहां पर कालिज देकर एक सौ बीर गांवों को रियायत दी जाए। इसके साथ साथ स्पीकर साहब, मेरी प्रार्थना है कि रतिया को सब डिविजन बनाया जाए। स्पीकर साहब, इमना ही कहकर मैं समाप्त करता हूं।

चौ. हुक्त सिंह (दादरी): स्पीकर साहब, मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया है। स्पीकर साहब, इस बजट के बारे में कहा जा रहा है कि यह बजट गरीब लोगों और हरिजनों की बहबूदी का बजट है लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि इसमें गरीब लोगों के लिए कुछ भी नहीं है और यह बहुत खोखला बजट है। मैं सदन को बताऊंगा कि किस तरह से हमारे वित्त मंत्री ने गरीब ओर मजदूर तथा किसानों के साथ अन्याय किया है। उनके लिये इस बजट में कोई प्रावधान नहीं किया गया है। स्पीकर साहब, रूलिंग पार्टी के लोग कहते हैं कि एम.आई.टी.सी. के किसान के खाल पक्के कर दिये और इससे इरीगेशन बढ़ेगी। स्पीकर साहब, जितनी भी नहरें पक्की की गई हैं या एम.आई.टी.सी. ने खाल पक्के किए हैं उनमें इतना घटिया मैटियरल लगा है कि उसकी वजह से सीपेज हो रही है और

किसानों की हजारों एकड़ जमीन बर्बाछ हो गई है। स्पीकर साहब, सरदार तारासिंह जी बउ़े ही सज्जन आदमी हैं। मैं उनको आपकी मारफत यह बताना चाहता हूं कि एम.आई.टी.सी. ने लोहरवाला गांव के पास से एक माईनर निकाली है, उसको आप चेक करवा लें आपको पता चल जाएगा कि पिछले तीन सालों से किसानों के खेतों की इरीगेशन नहीं हुई है। जो नाला है, उसमें सीमेंट बहुत कम लगाया गया है और जो उसमें ईटें लगी हैं, वह भी तीसरे दर्जे की लगी हुई हैं। एक फरलांग तक अगर उस माईनर को चलाए तो सीपेज शुरू हो जाती है, पानी लीक करना शुरू हो जाता है जिससे किसानों की फसलों को काफी नुक्सान होता है। इस तरफ सरकार ध्यान दे। इसी तरह से एक भागी माईनर बन रही है, वहां का भी मैं आपको बताता हूं। वहां पर भी सरकारी माल की हेराफेरी हो रही है। एक किसान कहने लगा कि उसके सरसों के खेत में पता नहीं कौन आदमी पांच बोरी सीमेंट रख गया है। इस प्रकार से आप देखें कि इस तरह की सीमेंट में हेराफेरी हो रही है तो फिर उस माईनर पर कितना सीमेंट लगेगा और उसका बाद में क्या हर्श होगा। इसलिये मिनिस्टर साहब, इन बातों की तरफ ध्यान देवें ताकि किसानों को बाद में किसी दिक्कत का सामना न करना पड़े।

स्पीकर साहब, सरदार तारासिंह जी ने यह भी बताया कि किसानों को उनके टयूबवैल्ज पर 10 से 12 घंटे तक बिजली दी जाती है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि किसानेां को 5, 6

घंटों से ज्यादा बिजली नहीं मिल रही है। बारिश हो गई तो लोगों की फसलों को पानी मिल गया। उधर लोहारू लिफ्ट इरीगेशन जोकि बिजली से चलती है, वह बन्द हो गयी और इस तरह से किसानों की हजारों एकड़ में जो फसलें खड़ी थीं, वह बिल्कुल बर्बाद हो गयीं। सरकार इसको चैक करवा ले और जिन किसानों को नुक्सान हुआ है, जिन किसानों की फसलें बिल्कुल तबाह हो गयी हैं, उनको सरकार की तरफ से मुआवजा दिया जाना चाहिये।

इससे आगे स्पीकर साहब, मैं आपके द्वारा दादरी मार्किट कमेटी की तरफ सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि उस मंडी का बहुत बुरा हाल है। वहां पर किसानों को किसी प्रकार की सुविधा नहीं है। जब किसान अपनी फसलों को लेकर के वहां पर आता है तो उसके ठहरने के लिये वहां पर कोई उचित प्रबन्ध नहीं है। उसके पशुओं के ठहरने का तथा उनको पानी पिलाने का वहां पर कोई इंतजाम नहीं है। वहां पर एक प्याऊ थी, वह भी बन्द है। वहां की मार्किट कमेटी की इन्कम से सरकार सड़कें बना रही है। चलो इस बात की मुझे खुशी है कि सड़कें तो बन रही हैं, मैं इसका विरोध नहीं करता लेकिन कम से कम किसानों को तो वहां पर हर तरह की सहूलियतें जैसे पशु बांधने तथा पानी पिलाने की मिलनी चाहिएं। जो किसान हमारे खाने के लिए जिन्स वहां पर लाता है, उसको तो कम से कम हर तरह की सहूलियतें मिलनी चाहियें। इसलिये मेरा आपके द्वारा निवेदन है कि

सरकार इस तरफ ध्यान दे ताकि मार्किट कमेटियों में किसानों के हकों की रक्षा की जा सकें।

इससे आगें, मैं पशुपालन की बात कहना चाहता हूं। यह ठीक है कि पशुओं के लिये सरकार ने जगह जगह पर डिसपैन्स्रियां खोली हुई हैं जहां पर पशुओं का इलाज यिका जाता है वहां पर न तो इवाईयां हैं और न ही काबिल डाक्टर हैं जो कि किसानों के पशुधन का ठीक प्रकार से ध्यान रख सके। ऐसी डिसपैन्सरियों खोलने का क्या फायदा? वहां पर दो सालों से मवेशियों की एक बीमारी चली हुई है और जब किसान अपने पशुओं को हस्पताल लेकर के जाता है तो किसानों को कह यिदा जाता है कि वहां पर दवाईयां नहीं हैं तो आप ही स्पीकर साहब, सोचिये कि किसान का एक ही पशुधन होता है अगर उसकी रखवाली भी हमारी सरकार न कर सके तो फिर उस सरकार का क्या फायदा? जो आजकल बीमारी पशुओं की चली हुई है, उस बारे में सरकार को ध्यान देना चाहिये और सरकारी डिसपैन्सरियों में दवाईयां प्रोवाइड की जानी चाहिये और हरेक डिसपैन्सरी में काबिल डाक्टर भेजे जाने चाहियें। इन शब्दों के साथ, जो जो सुझाव मैंने यहां पर दिये हैं, आशा है कि सरकार इन पर अवश्य ही गौर करेगी। स्पीकर साहब, मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया।

श्री लहरी सिंह मेहरा (रादौर, एस.सी.): स्पीकर साहब, आपका बहुत बहुत धन्यवाद जो आपने मुझे बोलने का समय दिया।

स्पीकर साहब, यह जो 1982–83 का बजट 320 करोड़ रूपये का इस सदन में सरकार की तरफ से रखा गया है, यह गरीब आदमी के हक में और हमारी आदरणीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के 20 सूत्रीय कार्यक्रम को लागू करने के लिये इस सदन में हमारे वित्त मंत्री चौ. खुरशीद अहमद साहब, द्वारा पेश किया गया है। यह बजट सबसे बढ़िया बजट है। इसकी जितनी भी तारीफ की जाए, थोड़ी हैं। अध्यक्ष महोदय, इस बजट की आपने भी ध्यान से पढ़ा होगा और यह देखा होगा कि पिछले तीन सालों से हरियाणा के अन्दर कोई टैक्स नहीं लगाया जा रहा है ओर अब की बार भी कोई टैक्स नहीं लगाया गया है और जो थोड़ा सा घाटा दिखाया गया है, उसे राठी साहब पूरा कर देंगे।

स्पीकर साहब, अब मैं एग्रीकल्चर विभाग के बारे में कुछ कहना चाहता हूं कि एग्रीकल्चर विभाग ने जितना काम इस पिछले साल में किया है, वह सचमुच ही सराहनीय है। मैं इसके लिये एग्रीकलचर मिनिस्टर को बधाई देता हूं। पिछली बार जब चने का बीज नेशनल सीड कारपोरेशन से लाना था तो सेन्टर ने बीज का एक चौथाई छोड़कर तीन चौथाई बीज हरियाणा के लिये उपलब्ध कराया गया। इस सारे काम के लिये हमारे योग्य अधिकारियों को ही क्रेडिट जाता है।

इसके साथ साथ स्पीकर साहब, हरियाणा के लोगों के फायदे के लिये जिन्स को कम से कम दूरी से मण्डियों में पहुंचाने के लिये मण्डियों का निर्माण इस सरकार की देख रेख में हो रहा

है और वर्ल्ड बैंक के तहत साढ़े 23 करोड़ रूपये की सहायता से शाहबाद बबैन और दूसरी जगहों पर किसानों के लिये मण्डियों का निर्माण किया जा रहा है। ऐसे ऐसे तरक्की के काम हो रहे हैं फिर भी ये अपोजीशन वाले भाई कहें कि सरकार कुछ नहीं कर रही है, ऐसा इनके लिये कहना शोभा नहीं देता। स्पीकर साहब, जगाधरी के अन्दर भी एक बड़ी मंडी का निर्माण हो रहा है। स्पीकर साहब, जगाधरी के अन्दर भी एक बड़ी मंडी का निर्माण हो रहा है। स्पीकर साहब, अब मैं अपनी सरकार को कुछ सुझाव देना चाहता हूं। पहला सुझाव तो यह है कि जब जब रिजर्वेशन का सवाल आता है उस वक्त पूरी रिजर्वेशन नहीं दी जाती है। मेरे नोटिस में है कि 66 आदमियों मेंसे केलव तीन हरिजन ही लिये गये हैं। इसलिये मेरा अपनी इस सरकार को सुझाव है कि यह जो अप्ववायंटमेंटस की गयी हैं, इनको कैन्सिल किया जाए और दोबारा लोगों की भर्ती की जाए। इसी तरह से जो हैड कांस्टेबल को रिवर्ट किया जा रहा है, यह उनके साथ बड़ा भारी अन्याय है। स्पीकर साहब, पुलिस की भर्ती 6 परसेन्ट से 16 परसेन्ट तक पहुंच गयी है, यह एक बड़ी खुशी की बात है लेकिन जिन केसिज में पहले ही परमोशंज हो गई हैं, उनको पहले रेगुलर किया जाए और उनको रिवर्ट न किया जाए। यह मेरी सरकार से रिक्वैस्ट है, सुझाव है। बी–1 में जब तक किसी की रिजर्वेशन न होगी तो फिर वह सी–1 में कैसे जाएगा, इसलिये बी–1 में रिजर्वेशन होनी चाहिए।

श्री वीरेन्द्र सिंह (नारनौंद): स्पीकर साहब, 1982–83 का जो बजट यह हाउस में जेरे गौर हे, मैं उसके विरोध में खड़ा हुआ हूं। स्पीकर साहब, वैसे तो अपोजीशन ने जितने भी एडजेकटिव इस बजट पर लगाने थे, वे लगा दिये हैं। मैं तो केवल यह बताना चाहता हूं कि सरकार को यह देखना चाहिये था कि आया इस बजट के पेश करने से हम विकास के कार्यो की तरफ बढ़ें हैं कि नहीं? हमारे माननीय नेता बाबू मूल चन्द जैन जी ने बताया कि छटी पंचवर्शीय योजना के लिये 1800 करोड़ रूपये का कुछ प्रोवीजन है जिस के हिसाब से हर साल 360 करोड़ रूपये का खर्च होना अनिवार्य है लेकिन इस सरकार ने इस साल केवल 319 करेाड़ रूपये का ही बजट पेश किया है। इससे ही आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि जितना इन्होंने एक साल के बजट में प्रोवीजन रखना था, उससे कहीं कम खर्चा किया जा रहा है तो फिर ये डिवेल्पमेंट के सारे कामों को किस प्रकार कर सकेंगे, कितना इनका ध्यान विकास की ओर हो सकता है। मैं बाकी सारी बातों को छोड़कर एक ही बात पर आता हूं, वह हे पावर सैक्टर। पावर सैक्टर के लिये खुरशीद जी ने 94 करोड़ रूपया मकसूद रखा है ओर इस बारे में बड़ा जोर शोर से यहां पर कहा गया कि नाथपा–झाखड़ी प्रोजैक्ट पर काम चल रहा हैं मैं आपको इस बारे में बताना चाहता हूं कि पीछे हमारे हाउस की पी.ए.सी. कमेटी श्री राव राम नारायण जी की अध्यक्षता में वहां पर गयी थी लेकिन मुझे इस बारे में बड़े ही दुख के साथ कहनापड़ता है कि वहां पर किसी किस्म का कोई काम शुरू ही नहीं किया गया है और उस

प्रोजैक्ट के साथ तीन और प्रोजैक्ट भी जोड़ दिये गये हैं। एक यमुना प्रोजैक्ट, दूसरा दादूपुर प्रोजैक्ट ओर तीसरा वैस्टर्न यमुना कैनाल, फर्स्ट फेज ओर इनके लिये पैसा केलव उपलब्ध करवाया गया है 1 करोड़ 52 लाख। इस बात से ही आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि सरकार इन पावर सैक्टर्ज में जोकि हरियाणा की लाइफ लाईन है, इसके लिये कितनी चिन्ति है? बहुत सालों से ये मामला लटका हुआ था। हमारे वक्त में भी वह एग्रीमेन्ट हुआ था। चौ. बंसी लाल जी के वक्त में भी इस तरह का एग्रीमेंट हुआ था ताकि हरियाणा के हितों को लाभ पहुंचे हरियाणा के हितों को मसला न जाए लेकिन आज की सरकार ने नाथपा झाखड़ी का जो एग्रीमैंट किया है, उसमे एक क्लाज रख दी गई कि हरियाणा 50 परसेन्ट पैसा अपने हिस्से का लगायेगा और केवल उसे इसके बदले में 42 परसेन्ट हिस्सा मिलेगा। स्पीकर साहब, 20 परसेन्ट बिजली इन्होंने नारायण दत्त तिवारी के दबाव में आकर उत्तर प्रदेश को मुफ्त दे दी।

12.00 बजे

मुख्यमंत्री (चौ. भजन लाल): अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वायंट आफ आर्डर है। जो व्यक्ति हाउस में अपने आप को डिफैंड नहीं कर सकता, उसका नाम नहीं लेना चाहिए। हमने तिवारी साहब के दबाव में आकर किसी प्रदेश को मुफ्त बिजली नहीं दी। मुफ्त बिजली देने का किसी को सवाल ही पैदा नहीं होता।

श्री वीरेन्द्र सिंह: चलो यह बात में नहीं कहता। स्पीकर साहब, नाथपा झाखड़ी प्रोजैक्ट के अलावा सरकार ने एस.वाई.एल. के एग्रीमेंट की खुशी में सरकारी बिल्डिंगों पर दीप मालाएं जलाईं। एलाईनमैंट के बारे में मैं इस सदन में कुछ नहीं कहूंगा क्योंकि इस बारे में मुख्यमंत्री जी से मेरा वायदा है। एस.वाई.एल. के एग्रीमेंट के बारे में कहते हुए मुझे दुख होता है कि इन्होंने लोगों को बहुत गुमराह किया ह। सवाल किसी फैसले का नहीं बल्कि इसकी इम्पलीमैंटेशन का है। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने 24 मार्च, 1976 को उसका एवार्ड दिया था। उसके हिसाब से 3.5 एम. ए.एफ. पानी हरियाणा प्रान्त को मिलना मन्जूर हुआ था। यह पानी 15.85 एम.ए.एफ. में से मिलना था। जब चौ. देवी लाल के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार आई तो हमने उस सारे मामले को देखा। हांलाकि उस पानी में से हरियाणा का क्लेम बहुत ज्यादा बनता था और इस बारे में उससे पहले तीन कमेटियां अप्वायंट हो चुकी थी। हर कमेटी ने 4.8 एम.ए.एफ. से हरियाणा का हिस्सा कम नहीं किया था लेकिन फिर भरी हमारे से पहले जाने वाली सरकार 3.5 एम.ए.एफ. पानी के लिये कमिट कर गई। उतने पानी के लिए हमने जदो जहद की। बहुत मींटिग हुई और चौ. भजन लाल ही हमारे साथ शामिल होते रहे। हमने बहुत जदो जहद की, आखिर मजबूर होकर हमने सुप्रीम कोर्ट में दाबा दायर किया कि हरियाणा को उसका हिस्सा दिलाया जाए और उस नहर को एक सैन्ट्रल एजेंसी की तरफ से खुदवाया जाए। हमने कहा कि सारी कार्यवाही सैन्टर अपने हाथ में ले ओर जो नुक्सान हरियाणा प्रान्त को हो

रहा है, जो नेशनल लौस भी है उसको पूरा किया जाए। हमें अफसोस हे कि एक झूठा प्रचार करने के लिये और लोगों को गुमराह करने के लिए मुख्यमंत्री जी उस 15.85 एम.ए.एफ. पानी में से साढ़े तीन मिलियन एकड़ फीट पानी की बजाए 3.05 एम.ए.एफ. पानी करवा कर आ गए। ये चाहते हैं कि उसके लिये यहां हम भी मेज थप थपाएं। यहां पर एक बात और कही गई कि नई एलाइनमेंट के कारण 9 करोड़ रूपये बचा लिया गया है और 14 मील की लम्बाई घटा ली गई है। स्पीकर साहब, यह रूपया इसलिये नहीं बचा कि इन्होंने एलाइनमैंट बहुत बढ़िया करवा ली बल्कि वह रूपया इसलिये बचा कि इस नहर की कैपेसिटी पहले जहां 7500 क्यूसिकस होनी थी अब वह घट कर 6500 कर ली गई है। स्पीकर साहब, एक बाम मैं इसके बारे में यह कहना चाहता हूं कि चलो अगर 8 तारीख को ये नहर का उदघाटन करवा दें तो बहुत बढ़िया बात होगी। अगर ये हमें भी बुलाएंगे तेा हम भी उस मौके पर जरूर आएंगे।

चौ. भजन लाल: आप सबको अभी इनवाइट किया जाता है।

श्री अध्यक्ष: मुख्यमंत्री जी तो इशारा कर रहे हैं कि चाहे इधर आकर बैठ जाओ। (हंसी)

श्री वीरेन्द्र सिंह: स्पीकर साहब, हम उधर जरूर जाएंगे लेकिन तब जाएंगे जब जनता हमें भेजेगी वरना नहीं जाएंगे।

स्पीकर साहब, मैं अर्ज कर रहा था कि अगर ये एस.वाई.एल. के उदघाटन के मौके पर हमें बुलाएंगे तो हम जरूर जाएंगे लेकिन वह नहर खुदनी चाहिए, इतनी अश्योरैन्स मैं मुख्यमंत्री जी से चाहता हूं। इसके अलावा इन्होंने ओर भी बहुत बातें कहीं हैं लेकिन टाईम कम होने की वजह से मैं उनको जवाब नहीं दे सकता। एक बात मैं जरूर कहूंगा कि पांच किलोमीटर जमीन हमारे कहने पर 1978 के फरवरी महीने में पंजाब सरकार ने एक्वायर की थी लेकिनये एक भी किलोमीटर जमीर एक्वायर नहीं करवा सके। जहां पर यह उदघाटन होने जा रहा हे वह वहीं जमीन है जो हमारे वक्त में एक्ववायर हुई थी। अगर ये चाहते हैं तो मैं उस गांव का भी नाम बता सकता हूं। स्पीकर साहब, यह बड़े अचम्भे और हैरानी की बात है कि यह सरकार निरे स्कैंडलों की ही सरकार है। आपको मालूम है कि एक ही स्कैंडल पर अन्तुले चला गया। दिल्ली से बम्बई कितनी दूर है लेकिन हरियाणा तो दिल्ली के चारों तरफ घिरा हुआ है। लेकिन चिराग तले अन्धेरा नजर आता है। यहां पर अम्बाला में बलविन्द्र कौर स्कैंडल हुआ, भिवानी में सैक्स स्कैंडल हुआ ओर यहां पर सीमेंअ स्कैंडल हुआ। मैं कितने स्कैंडलों के नाम गिनाऊं। यहां पर वातावरण स्कैंडलों से भरपूर हो चुका है। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि जो इस हाउस में सदस्य बैठे हैं उनमें से किसी भी सदस्य का नमा इस स्कैंडलों से जुड़ा हुआ नहीं होना चाहिए। लेकिन इधन–उधर की बातें सारे हरियाणा में घूमी हुई हैं। बड़े बड़े लोग जो शक्ति में हैं उनका नाम किसी न किसी स्कैंडल से जुड़ा हुआ है। क्यों

नहीं मुख्यमंत्री जी अपोजीशन के लोगों को कन्फीडैंस में लेकर इस वातावरण को साफ करवाते, मुझे यह बात समझ नहीं आती। अब मैं इन स्कैंडलों को छोड़ते हुए ला एंड आर्डर की बात पर आता हूं। मैं एक इंस्टांस दूंगा। बाबू मूल चन्द जैन जी ने भी सही फर्माया था कि मत प्राउड करो इस बात का कि हरियाणा में दूसरे प्रदेशों की निसबत ला एंड आर्डर बेहतर है। बेहतर तो इसलिये है कि यहां की जनता पीसफूल है। एक कोआप्रेटिव बैंक का डायरैक्टर अजीत सिं ढांढा नाम का आदमी जीन्द से एक महीने से गायब है। पर्चा दर्ज है लेकिन यह सरकार क्यों नहीं उसको तलाश कर पा रही है। फिर ये कहते हैं कि हरियाणा के ला एंड आर्डर पर हमें घमंड करना चाहिए। जीन्द में ही एक भगवान दास ट्रक ओनर का एग्रीकल्चर विभाग के कर्मचारियों से बहुत झगड़ा हुआ है। जीन्द के यहां पर तीन–तीन मंत्री बैठे हैं लेकिन अभी तक उस ट्रक ओनर के सिर्फ तीन–तीन आदमियों को ही गिरफ्तार किया गया है और जो बाकी चार आदमी असली कलप्रिटस थे, वे जीन्द में ही रहते हैं लेकिन उनको गिरफ्तार नहीं किया जा रहा है। गिरफ्तार इसलिये नहीं किया जा रहा है कि भगवान दास की मुख्यमंत्री तक पहुंच है। सरकारी कर्मचारियों ने 60 आदमियों को तो हिसार जेल में भेज दिया गया है लेकिन उनको नहीं पकड़ा गया।

चौ. भजन लाल: सब गिरफ्तार कर लिये गये है।

श्री वीरेन्द्र सिंह: मेरी इतलाह के मुताबिक तो कड़े नहीं गये। हो सकता है कल पकड़ लिये हों। स्पीकर साहब, इसी सदन में खास तौर पर चर्चा आई कि ये उदघाटन मंत्री और घोशणा मंत्री बन चुके हैं। मैं मुख्यमंत्री जी को ज्यादा कुछ नहीं कहूंगा, केवल एक बात कहना चाहता हूं कि चौ. भजन लाल जी को अगर यह बहम हो गया है कि केवल पत्थर पर नाम लिखने से इतिहार में उनका जिक्र रहेगा तो वे गल्ती में हैं। इतिहास में जिक्र होता है आदर्श की पालना करने से, जन सेवा करने से, और देश भक्ति की परम्पराएं कायम करने से। केवल पत्थर लगाने से इतिहार में जिक्र नहीं होगा। जब पत्थर लगाने के लिये जगह खत्म हो जाएगी तो मुख्यमंत्री जी शौचाल्यों का उदघाटन करने लग जाएंगे। स्पीकर साहब, हरियाणा का वातावरण स्कैंडलों और करप्शन से बिल्कुल दूशित हो चुका है। मेरे पास एक कवि की लिखी हुई कविता की 6 लाईनें हैं। इन लाईनों से मैं हरियाणा के वातावरण का चित्र खींच सकता हूं। वे लाईनें हैं:–

अलविदा हो हिन्द से इन्सान जन्नत को गए,

मुखलूक की इमदाद में बस तीन बेटे रह गए।

सबसे बड़ा रिश्वत अली बिचला सिफारिशखान है,

छोटा खुशामद बेग जिसकी निराली शान है।

कत्ल के भी जुर्म में रिश्वत अलि की जीत है,

सख्त हाकिम मोम हो गाता उसी के गीत हैं।

नौकरी गर न मिले तो मिल सिफारिशखान से,

अक्त का चाहे खोज न हो, कर हकूमत शान से।

छोटा खुशामद बेग है गोदी ले पुचकार कर,

जी हजूरी सीख ले चाहे कितने ही अत्याचार कर।।

स्पीकर साहब, हरियाणा में यह वातावरण है। कांग्रेस पार्टी के दो एम.एल.एज. चौ. रिजक राम और चौ. सुरेनद्र सिंह की यह हालत हो गई है कि इनका आज ही तवा बदल गया। इनके बारे में आज ही अखबार में खबर आई है कि इनको कांग्रेस पार्टी की तरफ से डिसिप्लनरी ऐक्शन लेने के लिये नोटिस दिया जा रहा है।

अजब दस्तूर जबांबन्दी है तेरी महफिल,

कि यहां कुछ कहने को तरसती है जुबां मेरी।

स्पीकर साहब, मुझे नहीं पता था कि चौ. रिजन राम जी इतने कमजोर हो चुके हैं। कल तो इन्होंने एस.वाई.एल. के फैसले के बारे में बहुत बातें कहीं थी मैं इनको कहना चाहता हूं कि यह फैसला भी गलत हुआ है। यह फैसला भी आज अखबार में कांग्रेस पार्टी के दो एम.एल.एज. के बारे में खबर आने के ठप्प हो गया। मैं इन दोनों एम.एल.एज. को अपने विपक्ष के नेता की इजाजत से

एक बा कहना चाहता हूं कि यदि कांग्रेस पार्टी का ऐसा माहौल हो चुका है ओर इस पार्टी में इन दोनों एम.एल.एज. का दम घुटता है तो मैं इन दोनों सदस्यों को कहना चाहता हूं कि ये आज ही उधर की सीट खाली कर दें हम इनके लिये इधर पीछे सीट दे देंगे। बाकी एम.एल.एज. को भी मैं यह कहता हूं कि दलबदली के कारण जिनकी आत्माएं घुट चुकी हैं उनके लिऐ 29 मार्च का सही टाईम है यदि वे अपने टैम्पर को साफ काना चाहते हैं तो श्री रामफल कोहली को राज्यसभा में चुनकर भेज दें ताकि हरियाणा में जो दूशित वातावरण पैदा हो गया है वह खत्म हो सके। स्पीकर साहब, बाबू जी ने प्रोहिविशन पर बोलते हुए इनको कांग्रेस पार्टी की परम्पराएं याद दिलाई थीं और मुख्यमंत्री जी आज नैतिकता की बात करते हैं। मैं इनको कहना चहता हूं कि यह तो वह कांग्रेस है जो नारे लगाती है कि देश की नेता इन्दिरा गांधी, यूथ कांग्रेस के नेता राजीव गांधी और बच्चों के नेता राहुल गांधी, भाड़ में जाए महात्मा गांधी।

चौ. रिजक राम: स्पीकर साहब, मैं चौ. वीरेन्द्र सिंह का सम्मान करता हूं इन्होंने यह कहा कि मैं, आपको अपनी पार्टी में आने के लिये यानी इधर आने के लिये आमंत्रित करता हूं। मैं इनको एक बात साफ बताना चाहता हूं कि इधर आने से जहन्नुम में जाना बेहतर होगा।

गृह मंत्री (श्री कन्हैयाल लाल पोसवाल): स्पीकर साहब, चौ. वीरेन्द्र सिंह ने इतनी लाईने पढ़ी हैं मैं इनको सिर्फ दो लाईनों में ही इनको इनकी कारणर्दियां बताना चाहता हूं:–

अपनी सेवा के जलाते हैं अंधेरे में चिराग

उनकी साजिश है कि जमाने में सदां रात रहे।

श्री वीरेन्द्र सिंह: स्पीकर साहब, मैं भी इनकी सेवा में दो लाईनें कहना चाहता हूं:–

बरबादी ऐ गुलशन के लिए एक ही उल्लू काफी था,

हर साख पे उल्लू बैठे हैं अंजामे गुलिश्ता क्या होगा।।

श्री कन्हैया लाल पोसवाल: हामने हय साख ही उड़ा दी है तो उल्लू बैठेगें कहां।

चौ. रिजक राम: स्पीकर साहब, चौ. वीरेन्द्र सिंह जिस समय मंत्री थे उस समय लोगों के काम करने की बजाय लोगों के पास जाने के लिये आंखों में स्याही डाल कर जाया करते थे। (हंसी)

चौ. अजीत सिंह: स्पीकर साहब, मैं भी आपकी इजाजत से कुछ कहना चाहता हूं:–

सोचा तो था इस गुत्थी को खोलोगे सुलझाओगे,

किसे पता था तुम कुर्सी की खातिर यों बिक जाओगे।

चांद ईद का एक साल में एक बार आ जाता है,

हमें पता है बाद बजट के शक्ल नहीं दिखलाओगे।

टैक्स बजट में नहीं लगाये तो भी कुछ एहसान नहीं,

बाद बजट के लोगों को तुम नोच नोच कर खाओंगे।

वित्त मंत्री जी मेरे प्रश्नों का उत्तर दो इस जनता को,

घी के मटके लुढ़क लुढ़क कर कब तक आग बुझाओंगे।।

चौ. भजन लाल: अध्यक्ष महोदय, यह रिकार्ड न किया जाए। (शोर)

सिंचाई तथा बिजली मंत्री (सरदार तारा सिंह): स्पीकर साहब, बिजली और सिंचाई के मुतल्लिक काफी बातें हाउस के सामने आई हैं। मैं एक बात कहना चाहता हूं कि चौ. भजन लाल जी की सरकार के वक्त में पावर एंड इरीगेशन में जितने काम हुए हैं, चहो वह काम हाइडल प्रोजैक्ट का हो, चाहे थर्मल प्लांट का हो और चाहे ड्रेनेज का हो, चाहे आप्रेशन डिवीजन का हो, कोई भी काम हो यदि मैं सारे कामों के बारे में कहूंगा तो काफी समय लगेगा। मिनिस्टर आफ पार्लियामैट्री अफेयर्ज ने मुझे यह कहा है कि सारी बातों का जवाब मैं खुद ही दे दूंगा। स्पीकर साहब, मै।

एक ही बात कहना चाहता हूं कि दो तीन दिन पहले मेरे माननीय दोस्त चौ. सुरेन्द्र सिंह ने हाउस में कुछ जिक्र किया था। मुझे उनकी बात सुनकर बहुत दुख हुआ। अगर वह बात कोई अपोजीशन के एम.एल.ए. कहते तो मुझे कोई दुख नहीं होता। वह बात कोई ऐसी नहीं है, यह बात पहले भी सदन में आई थी उसका मैंने जवाब दे दिया था। चौ. सुरेन्द्र सिंह जी ने एक बात यह कही कि मैंने जमीन की नाजायज गिरदावरी करवा रखी है। स्पीकर साहब, यह केस अदालत में है इसलिये मैं इस बारे में ज्यादा बात नहीं कहता। उन्होंने मेरे खिलाफ उस जमीन का अदालत में दावा कर रखा है। मैंने इस बात का जवाब पिछले सैशन में भी दिया था लेकिन अब मैं इतना ही कहूंगा कि यह मामला सबजूडिस है इसलिये मुझे इस बारे में ज्यादा बात नहीं कहनी चाहिए। इन्होंने दूसरी बात फर्टीलाइजर के बारे में कही। फर्टीलाईजर के बारे में मैंने पिछले सैशन में जवाब दे दिया था। स्पीकर साहब, उस समय आपने फर्टीलाइजर के मामले पर बहस करने के लिये आधे घंटे का समय भी मुकरर्र किया था। बहस के दौरान चौ. वीरेन्द्र सिंह ने कहा था कि करनाल की अदालत में सरदार तारा सिंह की किसी वकील के साथ सांझेदारी है। स्पीकर साहब, मैं आज भी चेलेंज करता हूं और यह कहता हूं कि अपोजीशन लीडर श्री मूल चन्द जैन यह कह दे कि करनाल की अदालत में मेरी किसी वकील के साथ वकालत में साझेदारी है या थी तो मैं आज ही इस्तीफा दे दूंगा और आयंदा के लिए पोलिटिकल कैरियर छोड़ने के लिये तैयार हूं। इसके अलावा

स्पीकर सहाब, जहां तक पेस्टीसाईड की बात है, इस बारे में मैं यह कहना चाहता हूं कि जितनी देर मैं एग्रीकल्चर मिनिस्टर रहा हूं उस समय में पेस्टीसाइड के बारे में कोई इस किस्म की बात नहीं आई थी। स्पीकर साहब, मैं एक एक फाईल को बड़ी गौर से देखता हूं। इन्होंने यहां पर बाजरे के बीच का भी जिक्र यिका था। मैंने भी इस बात को देखा था कि हर साल गुजरात से ही बाजरे का बीज क्येां मंगवाया जाता है। इस सम्बन्ध में, मैंने एग्रीकल्चर डिपार्टमैंट के अफसरान को बुला कर यह पूछा था कि गुजरात से बाजरा क्यों मंगवाते हैं। उन्होंने मुझे जवाब दिया कि गुजरात एक ऐसी जगह है जहां मौसम के मुताबिक बीज उपलब्ध हो जाता है। अफसरान ने मुझे यह भी बताया था कि शंकर बाजरे का बीज सबसे बढ़िया बीज है। मैंनें सैक्रेटरी लैवल के अफसरों को बुला कर बात की थी। इन्होंने यह भी कहा था कि छः और जगहों की दरखास्तें रिजैक्ट कर दी हैं। उनके सम्बन्ध में, मैं आपको बताना चाहूंगा कि उन्होंने अपने कागज पत्र पूरे नहीं किये थे और न ही उन्होंने कोई सर्टिफिकेट साथ भेजा था।

Mr. Speaker: There is no need to go into details.

सरदार तारा सिंह: यहां पर एक बात भिवानी की भी आई थी। (शोर) अध्यक्ष महोदय, मैं उस बारे आज भी इन्कवायरी करवाने के लिये तैयार हूं। जो बात मेम्बर साहब ने मेरे बारे में कही हैं वह ठीक नहीं है। इसके साथ साथ अध्यक्ष महोदय, मैं आपको एक बात और बताना चाहता हूं कि इनके वक्त के जो केस

थे यानि इन्होंने जो किया था यदि उनको मैं चलाता तो ये सारी उम्र जेल में रहते कभी बाहर नहीं आते। इन लफ्जों के साथ मैं आपका धन्यवाद करता हूं और अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

Sh. Surender Singh: Point of order, Sir.

Mr. Speaker: It should be on personal explanation only.

Sh. Surender Singh: Sir, I will confine myself to that extent only.

Mr. Speaker: No counter-allegation should be levelled. Only personal explanatation be made.

Sh. Surender Singh: All right, Sir. अध्यक्ष महोदय, अभी मिनिस्टर साहब ने बैठते हुए कहा कि यदि मैं उन केसों को चलाता तो मैं सारी उम्र जेल से बाहर नहीं आता। मैं इनको कहता हूं कि ये बेशक उन केसों को चला लें, लेकिन मैं इनको बताना चाहता हूं कि मैंने जो आरोप लगाये थे वे जनता पार्टी की सरकार पर लगाये थे। इस बात के अलावा मैंने और कोई बात नहीं कहीं थी। यह कह रहे थे कि मैंने ऐसा कोर्ठ काम किया है तो मैं जेल में जाने के लिए तैयार हूं। दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि इन्होंने अभी कहा है कि मैंने करनाल की कुछ बात कही थी और चार्ज लगाये थे। इस सम्बन्ध में मैं आपको बताना चाहता हूं कि ये सभी आरोप मैंने जनता पार्टी की सरकार पर लगाये थे। यदि ये

जनता पार्टी की सरकार के समय का कोई जवाब देते हैं तो इसमें, मैं क्या कर सकता हूं।

वित्त मंत्री (चौ. खुरशीद अहमद): अध्यक्ष महोदय, हमारे सदन के 26 साथियों ने बजट की बहस में हिस्सा लिया। बहुत से साथियों ने बहुत अच्छे प्वायंट भी रखे हैं। लेकिन कई साथियों ने अच्छे प्वायंट नहीं रखे। उन्होंने चार अन्धों वाला काम किया। उदाहरण के तौर पर मैं आपको बताना चाहता हूं। चार अन्धों को एक हाथी मिला। एक अन्धे को हाथी की टांग हिस्से में आई, वह कहने लगा कि यह खम्बा है। दूसरे अन्धे के हाथ में सूण्ड आयी, वह कहने लगा कि यह ट्रंक है। इसी प्रकार से बाकी के दो अन्धे भी अपनी–अपनी बात कहते रहे। यानि मेरे कहने का मतलब यह है कि हमारे कुछ साथियों ने कजअ पर इधन उधर की बातें कहीं हैं जिनका बजट से कोढ सरोकार नहीं था। मैं अपने साथियों के कंफूजन को दूर करने की कोशिश करूंगा। मैं एक ही बात में उनकी सारी बातों का जवाब धीरे धीरे दे दूंगा। यह जो बजट पेश किया गया है यह हरियाणा के लोगों के हित के लिये पेश किया गया है। इस बजट को बिना टैक्स के लगाये प्रस्तुत किया गया हैं इससे गरीब जनता पर कोई बोझ नहीं पड़ा। बहुत से साथियों ने यह भी कहा कि बहुत सा पैसा फिजूल खर्च किया जा रहा है। इस बारे में, मैं अपने साथियों को एक एक आईटम का जवाब दूंगा। स्पीकर साहब, 1977 से जब ये उधर वाले भाई आएं हैं तब से औलावृश्टि और बाढ़ हर साल आती रही है। (शोर) स्पीकर साहब,

जिस दिन ये चले जाएंगे उस दिन बहुत सारे खर्चे अपने आप कम हो जाएंगे।

स्पीकर साहब, हमारे विरोधी पक्ष के नेता बाबू मूल चन्द जैन जी ने शुरू में एक बात कही कि नौन प्लान एक्सपैंडीचर में कमी करने की कोई कोशिश नहीं की गई। इस नौन प्लान ऐक्सपैंडीचर का मेजर पोर्शन वर्श 1980–81 का रिवाईज्ड एस्टिमेट 370 करोड़ रूपये का बनता है जबकि वर्श 1981–82 का 330.71 करोड़ रूपये बैठता है। इस प्रकार यह इन्क्रीज वर्श 1981–82 के अन्दर 39.51 करोड़ रूपये होती है। स्पीकर साहब, आप देखेंगें कि तकरीबन 11.95 प्रतिशत रूपये की इन्क्रीज हुई है। स्पीकर साहब नेचुरल कलैमेटीज पर जो खर्च हुआ है वह 7.66 करोड़ रूपये बैठतार है। हरियाणा रोड़वेज की बसों की जो कीमतें बढ़ी हैं यह दूसरे खर्च बढ़े हैं उन पर तकरीबन 3.39 करोड़ रूपये खर्च हुए। इसी प्रकार से पैन्शनरी बैनिफिटस पर 1.43 करोड़ रूपये खर्च हुए हैं। इस प्रकार यह टोटल खर्चा 12.48 करोड़ रूपये बैठता है। यदि इसको निकाल यिदा जाये तो फिर 27.03 करोड़ रूपये की बढ़ौतरी होती है जोकि 8.17 प्रतिशत आती है। इन 27.03 करोड़ रूपयों में से नौन प्लान खर्चे में स्टाफ को डी.ए. देने में 14.59 करोड़ रूपये खर्च हुए हैं। इनको निकाल कर बाकी 3.76 प्रतिशत बढ़ौतरी होती है।

This figure has accounted for the entire increase in expenditure in office expenses, new activities, strengthening and improvement of vital services (including Education, Police,

Health etc.) and for price rise. So this residual increase of 3.76% is negligible.

स्पीकर साहब, आप भी जानते हैं कि लोगों की जो समस्याएं हैं वे बगैर पैसे के हल नहीं हो सकती। इसलिये यह जो खर्चे हुए हैं ये निहायत जरूरी थे। स्पीकर साहब, जो खर्च हुआ है वह उतना ही हुआ है जितना हर हालत में होना चाहिए था। इस प्रकार से वर्श 1982–83 के अन्दर नौन प्लान एक्सपैन्डीचर में 4.30 प्रतिशत की बढ़ौतरी हुई है। यह बढ़ौतरी फिक्स की हुई राशि से कम है और इस बात को 7वें वित्त आयोग ने भी माना है। ये नार्मज आल इण्डिया लैवल पर फिक्स किए हुए होते हैं। इसके अनुसार कुछ भी वेस्टफुल कहना उचित नहीं है। यह ठीक है कि सरकार ने 3.40 करोड़ रूपये का जो ओवर ड्राफ्ट रिजर्व बैंक आफ इण्डिया ने लिया था वह इसी साल पे करना पड़ा है जोकि पिछले साल से ज्यादा है। यह पैसा हमें इसलिये खर्च करना पड़ा कि कहीं पर ओलावृश्टि हो गर्ठ ओर कहीं पर कहत पड़ गया जिसकी वजह से यह पैसा लेना पउ़ा था। स्पीकर साहब, मैं आपको बताना चाहता हूं कि यह राशि नाजायज खर्च नहीं की गई। लोगौं को सुविध्याा दनै के लिये उन्हें राहत देने के लिये खर्च करनी पड़ी थी। जब कहीं पर ओलावृश्टि हो जाती है और किसानों को सहायता आदि दी जानी होती हैं तो हमें तुरन्त पैसा फील्ड में भेजना होता है। यह अलग बात है कि हम बाद में गवर्नमैंट आफ इण्डिया से वह पैसा ले लें। इसलिये हमें ओवर ड्राफ्ट पर निर्भर रहना पड़ता है। यदि हम किसानों को समय पर

पैसे नहीं देंगे तो उनमें असंतोश फैलेगा। किसानों की सुविधा के लिए ऐसा करना बहुत जरूरी है। आप भी जानते हैं कि जब ओला वृश्टि हो जाती है तो फसलें सारी बर्बाद हो जाती हैं। लोगों को अपने पशुओं के लिये भूसा आदि खरीदना होता है। उनके पास पेसा नहीं पहुंचेगा तो उनका काम नहीं चलेगा, उनके पशु भूखे मर जाएंगे। जिस पर मुसीबत आई है उसको पैसा उसी वक्त देना होगा। इसी तरह से जो रिक्वरी होनी होती है उसको भी पोस्टपोन करना पड़ता हैं इन सब बातों का क्युमुलेटिव असर यह होता है कि अपने जरायों से हमें यह सब करना पड़ता हैं अगर रिजर्व बैंक आफ इण्डिया का ओवर ड्राफ्ट किसी दिन ज्यादा और किसी दिन कम भी हो जाए तो उस पर हमें इंट्रैस्ट देना होगा। ये मजबूरियां हैं जिनसे हम ऐसकेप नहीं कर सकते। यह इसी साल का नहीं है। पिछले साल के अन्दर जो रिमशन देना पड़ा और ऐक्सट्रा पैसा देना पड़ा उसका हिस्सा भी इसमें शामिल है और तकरीबन एक करोड़ के करीब यह बनता है। इस सब बातों को देखते हुए ओवर ड्राफ्ट का इल्जाम हमारे ऊपर लगाना ठीक नहीं जंचता क्योंकि अगर हम ऐसा नहीं करते तो लोगों को राहत नहीं मिल पाती। लोगों को राहत देने के लिए अगर सरकार को थोड़ा बहुत इंट्रैस्ट भी देना पड़े तो उसमें कोई खराब बात नहीं है यह हमारी सरकार की पालिसी है।

श्री मूल चन्द जैन: क्या आप बताएंगे कि ओवर ड्राफ्ट की मात्रा कभी 70 करोड़ हुई है? (विघ्न)

चौ. खुरशीद अहमद: जब पैसा ऐसी चीजों पर खर्च करना पड़े जो एकदम आ पड़े तो उनके लिए रिलीफ ग्रांट करने के लिए हमें आवश्यक इन्तजाम करना पड़ता है। जब तकावी और दूसरे कर्जो को इल्तवा करना पड़े तो यह पैसा खजाने में दाखिल नहीं होता और ओवर ड्राफ्ट नैचुरली बढ़ेगा। मैं मानता हूं कि ओवर ड्राफ्ट नहीं बढ़ना चाहिए लेकिन जैसा मैंने पहले अर्ज किया यह तभी हो सकता हे यदि हम लोगों की सहूलियत की परवाह न करें। अगर हमने लोगों की भलाई के लिए काम करने हैं तो एक दिन के लिए, दो दिन के लिए या महीने के लिए ओवर ड्राफ्ट में एक दो करोड़ रूपया चला जाए तो कोई बड़ी बात नहीं है।

स्पीकर साहब, कुछ दूसरे साथियों ने और बाबू मूल चन्द जैन जी ने भी यह बात कही कि गवर्नमैंट के खर्च में 70 करोड़ रूपये के रैवन्यू का कुछ पता नहीं लगता कि वह कहा गया। मैं उनका ध्यान बजट ऐस्टिमेंटस 1981–82 और बजट ऐस्टीमेंटस 1982–83 के रिवाइज्ड टेबल की तरफ दिलाना चाहता हूं। उसमें हर चीज को ऐक्सप्लेन किया गया है। उसको देखने से इन्हें पता चलेगा कि टोटल वहीं 18.17 करोड़ पर आता है। स्पीकर साहब, नैक्सट इयर की रिकवरीज को डालते हुए ये उस टेबल को दुबारा देखें। इसे देखने से इनका कंफ्यूजन दूर हो जाएगा। अगर ये उसे नहीं देखना चाहते तो मैं इनको यह पेपर भिजवा देता हूं। (इस समय एक कागज बाबू मूल चन्द जैन जी को दिया गया।) इसको जोड़ तोड़ लगा कर ये देख लें। (विघ्न)

जिसको हिसाब किताब आता है वह इसे समझ जाएगा। आप इसे इम्तहान का पेपर ही समझ लीजिए। (विघ्न)

स्पीकर साहब, एक प्वायंट बाबू जी ने एन.आर.ई.पी. प्रोग्रम के बारे में कहा। इन्होंने कहा कि पिछले साल 5.20 करोड़ रूपया खर्च किया गया लेकिन इस साल करन्ट इयर में, केवल 1 करोड़ 78 लाख रूपया ही दिखाया गा है। मैं बाबू जी की इत्तलाह के लिए बतलाना चाहता हूं कि अगर ये सारे बजट ऐस्टिमेंटस को देखते, तमाम के तमाम हिसाब किताब को देखते तो इस तरह की बात न कहते। (विघ्न) अगर ये पेज 209, हैड 319 के प्लान्ड बजट के ड्राफ्ट को देखते तो इन्हें पता लगता कि 1.78 करोड़ तो हमारा है और 1.78 करोड़ सैन्टर का है। दोनों को मिलाकर यह 3.56 करोड़ बनता है। पिछले साल यह पैसा सैन्ट्रल एड और ज्यादा मिलने की वजह से बढ़ गया था।

श्री मूल चन्द जैन: स्पीकर सहाब, अरग इनकी यह बात भी मान ली जाए तो भी यह पैसा पिछले साल के मुकाबले में डेढ़ करोड़ कम है।

चौ. खुरशीद अहमद: स्पीकर साहब, पिछले साल 1.60 करोड़ हमारा था और 1.60 करोड़ रूपया पहली बार गवर्नमैंट आफ इंडिया से आया था लेकिन मिडदयर में जब दुबारा जांच की जाती है उसमें हमें बाकी का फालतू पैसा मिला था। इस साल भी हमें उम्मीद है कि फालतू पैसा हमें मिलेगा। पिछले साल जो

टोटल पैसा 3.20 करोड़ बनता था वह इस बार 3.56 करोड़ है। उम्मीद है बाद में मिलने वाली सैन्ट्रल एड से यह 5.20 करोड़ से भी आगे बढ़ जाएगा।

स्पीकर साहब, एस.वाई.एल. के बारे में यह कहा गया कि इसके लिये सिर्फ 8 करोड़ रूपयेा रखा है। जनाब आपकी विसातत से मैं इन्हें यह बताना चाहता हूं कि इसके लिए मुख्तलिफ टाइम्ज पर पैसा दियागया है। जब मेरे बुजुर्ग साथी मूलचन्द जैन जी सरकार में थे तो शायद 2 करोड़ रूपया इन्होंने दिया था। उसे बाद पंजाब सरकार को 10 करोड़ रूपया हमारी तरफ से और गया। 8 करोड़ रूपया यह रखा गया है। इस मद में तकरीबन 22 करोड़ रूपया इस साल की आज की तारीख तक मौजूद है। आप बजट स्पीच में देखेंगे हमने यह कहा है कि ओर भी साधन जुटाने के लिए हम तैयार हैं। अगर हमें दूसरे मदों से भी इसके लिये ऐडजस्टमैंट करनी पड़ी तो करेंगे। यह 22 करोड़ रूपया तो काम शुरू करने के लिए दिया है। पहले दिन ही अगर हमने 50 करोड़ रूपया दे दिया तो फिर ओवर ड्राफ की प्रौब्लम आएगी। जैसे जैसे डिमांड आती जाएगी वैसे वैसे पैसा दिया जाएगा। मैं हाउस को यकीन दिलाता हूं कि एस.वाई.एल. का काम पैसे की वजह से रूकने नहीं दिया जाएगा। (प्रशंसा) इस वक्त हमारे पास इसका पूरा इंतजाम है और आगे भी पूरा इन्तजाम होगा। इस हालात में मैं यह कहूंगा कि आज की तारीख में जो पैसा गया है वह काफी

है और आयंदा जितना पैसा देना होगा, देंगे और इस काम को जल्दी से जल्दी पूरा करने की कोशिश करेंगे।

स्पीकर साहब, रैवन्यू रिसीटस के बारे में एक बात और कही गई। इन्होंने कहा कि रैवन्यू रिसीटस हाइली इनफ्लेटिड है लेकिन मैं इनको बताना चाहता हूं कि हमने तो केवल 15.32 परसैन्ट इंक्रीज नैक्सट इयर के रैवन्यू रिसीट में बताई है जबकि यह ज्यादा भी हो सकती है। मैं इनको एक ही मद का उदाहरण देता हूं। ऐक्साइज एंड टैक्सेशन डिपार्टमैंट में ऐक्चुअल रिसीट पिछले साल 11.40 परसैन्ट हुई थी लेकिन इस साल 31.25 परसैन्ट ऐक्चुअल रियेलाइजेशन हमने करके गवर्नमैंट को दी है। (प्रशसा) अगले साल के लिए अनुमान रखते हुए हम बड़े कंजरवेटिव रहे हैं लेकिन मैं हाउस को बताना चाहता हूं कि इस साल की उपलब्धि को हम आयंदा भी मेनटेन करेंगे। इसमें कोई ऐसी चीज नहीं है जो हमने इनफ्लेट करके दिखाई हो। (विघ्न) अगर इनका यह आर्गुमैंट भी मान लिया जाए कि इनफ्लेशन दिखाई है तो मैं इन्हें कहूंगा कि अगर इनफ्लेशन बढ़ेगा तो हमारी रियेलाइजेशन भी बढ़ेगी, वह भी कम नहीं होगी। उससे भी हमें पैसाबढ़ कर मिलेगा। बजाये इसके कि मैं इन्हें अपनी तरफ से कोर्ठ चीज बताऊं, मैं रिजव बैंक आफ इण्डिया के डौकुमैंटस से यह साबित करूंगा कि हरियाणा स्टेट के बारे में वे किस डिसिजन पर पहुंचे हुए हैं। स्टेट फाइनैंसिज के ऊपर रिजर्व बैंक आफ इण्डिया ने एक कमेटी बनाई उन्होंने डौकुमैंटस के जरिए तमाम

चीजों को स्टडी किया है। उन्होंने यह भी हिसाब लगाया है कि टैक्सिज की रियेलाइजेशन के बाद कौन कौन सी स्टटेस के क्या क्या ऐक्चुअल्ज हैं। तो आज हम टोटल ऐक्युअल्ज के हिसाब से रियेलाइजेशन टैक्सिज वगैरह को देखें तब सही बात का पता लगेगा। मैं तमाम चीजों की डिटेल में नहीं जाना चाहता। एक चीज जो बाबू जी ने बार बार हाउस में दोहराया है कि कनसाइनमैंट टैक्स लगाया होता तो काफी आमदन हो सकती थी लेकिन इसके लगाने में एक कांस्टीच्युशनल दिक्कत है। उस कांस्टीच्युशनल दिक्कत को गवर्नमैंट आफ इण्डिया ही दूर कर सकती है। कांस्टीच्युशन में अमेंडमेंट करके पार्लियामेंट एक्ट बनायें, तथी करसाइनमेंट टैक्स लगाया जा सकता है। यह टैक्स गवर्नमेंट आफ इण्डिया की मंजूरी से ही लगाया जा सकता हैं यूनिलेटरल फैसला लेकर हरियाणा गवर्नमेंट टैक्स लगायेगी तो लीगल अड़चन हो सकती है ओर हामरी इकोनोमी पर असर पड़ेगा। अगर साथ वाली स्टेटस की इन्डस्ट्री पर कनसाइनमेंट टैक्स नहीं लगेगा तो हम जो इन्डस्ट्री लगाना चाहते हैं वे दूसरी स्टेटस में शिफ्ट कर जायेंगे।

श्री मूल चन्द जैन: स्पीकर साहब, पिछले बजट भाशण के बारे में इन्होंने कहा कि हम कनसाइनमेंट टैक्स लगा रहे हैं और कांस्टीच्युशनल अमेंडमेंट के लिए भी कोशिश कर रहे हैं लेनिक आज इन्होंने दूसरी स्टेट का मामला उठा दिया कि वे नहीं लगा रहे हैं इसलिये हम नहीं लगा रहे।

चौ. खुरशीद अहमद: स्पीकर साहब, हमारी अकेली स्टेट नहीं लगा सकती। दूसरी स्टेटस लगायेंगी तभी हम लगायेंगे। अगर हम कनसाइनमेंट टैक्स लगा देंगे तो जो हम इन्डस्ट्रीज यहां लगाना चाहते हैं वे दूसरे सूबों में चली जायेंगी। हमारा दूसरी स्टेटस के साथ बड़ा भारी कम्पीटिशन है। एक तरफ यू.पी. है। दूसरी तरफ चन्द फासले पर राजस्थान है। ये इन्डस्ट्री कहीं भी शिफ्ट हो सकती हैं। हमें पार्लियामेंट के एक्ट तक इंतजार करना होगा। पार्लियामेंट के एक्ट के बाद ही स्टेट इसको ऐडोप्ट कर सकती है।

स्पीकर साहब, जैन साहब ने हरियाणा प्लानिंग एन्ड फाइनेशियल परफारमेंस का जिक्र यिका कि किस तरह से 1800 करोड़ का पांच साला प्लान का टारगिट अचीव करेंगे। प्लानिंग के विशय में वक्तन–फवक्तन इन्होंने भी तजुर्बा यिका है चाहे वह थोड़े ही समय के लिये किया हो। फाईव ईयर प्लान के पहले तीन साल में 50 परसैन्ट या 1–2 परसैन्ट कम खर्च होता है जबकि 50 परसैन्ट पिछले दो सालों में खर्च होता है। स्टेटस जो भी प्लान बनाती हैं, सैन्टर को उसकी परफोरमैंस को चैक करने का अख्तियार है। स्पीकर साहब, रिजर्व बैंक आफ इंडिया की ओर से ''ए स्टडी आफ दि फाइनेन्स आफ स्टेट गवर्नमैंटस'' की किताब 10 फरवरी, 1982 को इशू की गई है। इसमें सभी स्टेटस की परफारमैंस डिस्कस की गई है। यह डाकुमेंट हमारा नहीं है बल्कि गवर्नमेंट आफर इंडिया का रिजर्व बैंक की ओर से इशू किया हुआ

है। मैं इसी डाकुमेंट के आधार पर अपनी स्टेट और दूसरी स्टेटस की परफारमैंस हाउस के सामने रखना चाहता हूं। हरियाणा की परफारमैंस दूसरी स्टेट के मुकाबले में जयादा अच्छी रही है। इस डाकुमेंट में डिवेल्पमेंट ऐक्सपेन्डीचर की फिगर्ज दी हुई हैं। सन् 1979–80 के अकाउन्टस की स्टडी के आधार पर 22 स्टेटस की ऐवरेज 73.2 परसेन्ट डिवल्पमेंट एक्सपैडीचर की है जबकि हरियाणा की 79.7 परसैन्ट है। सन् 1980–81 की सभी स्टेटस की एवरेज 72.7 परसैन्ट है और हरियाणा की रिवाइज्ड एस्टीमेटस के आधार पर 79.01 परसैन्ट इसी प्रकार से तमाम स्टेट की ऐवरेज बजट एस्टीमेंटस के अनुसार 1981–82 का डिवल्पमेंट एक्सपैन्डीचर 72.4 परसेन्ट था जबकि हरियाणा का 78.06 परसैन्ट था। मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि डिवैल्पमैंट एक्सपैन्डीचर के माले में हमारी स्टेट किसी भी साल में दूसरी स्टेटस के मुकाबले में कम नहीं है। इसी किताब की दूसरी स्टेटमेंट पढ़िये। वह प्लान ऐक्सपैन्डीचर के विशय में है कि दूसरी स्टेटस के मुकाबले टोटल प्लान एक्सपैन्डीचर हमारा कितना हुआ? 22 स्टेटस का प्लान एक्सपैन्डीचर 1979–80 का 33.6 परसैन्ट था जबकि हरियाणा का 37.07 परसैन्ट था। फिर 1980–81 का तमाम स्टेटस का रिवाइज्ड एस्टीमेटस के आधार पर 34.3 परसैन्ट खर्च हुआ जबकि हरियाणा का 40.3 परसैन्ट हुआ। 1981–82 का बजट एस्टीमेटस के अनुसार तमाम स्टेटस का प्लान एक्सपैन्डीचर 36.1 परसैन्ट था जबकि हरियाणा का 43.1 परसैन्ट था। सर, दूसरी स्टेटस के मुकाबले में हरियाणा का प्लान एक्सपैन्डीचर भी ज्यादा है। इसी डाकुमेंट के

आधार पर सन् 1979–80 के अकाउन्टस में हरियाणा का प्लान एक्सपैन्डीचर सीर स्टेटस के प्लान एक्सपैन्डीचर का 3.31 परसैन्ट था। फिर सन् 1980–81 में यह परसैन्टेज 3.45 परसैन्ट हो गई। सन! 1981–82 के एप्रूवड आउटलेज के अनुसार 3.53 परसैन्ट हो गई। जब इन सारी फिगर्ज को कम्पेअर करते हैं तो उसके आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि हमारा प्रान्त तमाम चीजों को देखते हुए प्लानिंग में और किसी दूसरी चीज में दूसरी स्टेटस के मुकाबले कम कम नहीं हैं। हमारी परफोरमैंस आल इण्डिया एवरेज के हिसाब से प्लान एक्सपैन्डीचर में ज्यादा है जबकि हमारी पापुलेशन का लैवल 1.91 परसैन्ट बनता है। उसके हिसाब से देखा जाये तो हमारी परफोश्मैंस सारे हिन्दुस्तान की एवरेज से बहुत ज्यादा है यानी दुगुनी तीगुनी जाकर पउ़ती है। बाबू जी ने कई चीजों के बारे में जो खासतौर पर एतराज यिका था वह मैंने आपके सामने रख दी हैं कि हमारी सरकार क्या कुछ कर रही है। बातें तो और भी बहुत सारी कही गयी थी लेकिन उसमें एक बात एम्पलाएमेंट के बारे में भी कही गयी थी। उसके बारे में सरकार पहले से कई तरह के कदम उठा रही है। चौ. सुरेन्द्र सिंह जी ने कहा कि बेकारी बहुत ज्यादा है लेकिन पता नहीं वे कहां से फिगर्ज लाये हैं। हमारे पास 31 दिसम्बर, 1981 तक टोटल रजिस्ट्रेशन 3.77 लाख हैं जबकि चौ. सुरेन्द्र सिंह जी ने 5.70 लाख बतायी है। मैं उन्हें कहूंगा कि वे दोबारा चैक कर लें हमारी पापुलेशन जिस हिसाब से बढ़ी है उसी हिसाब से एम्पलाएमेंट एक्सचेंजिज में नाम रजिस्टर्ड हुए हैं। हमें खुशी है कि पोहलू

साहब भी हमारी बात को ऐप्रीशिएट कर रहे हैं। बहुत सी छोटी छोटी बातों को भी यहां पर उछाला गया है। कोआप्रेशन डिपार्टमैंट में रिक्रूटमेंट के बारे में कहा गया। इसका जवाब कोआप्रेशन मिनिस्टर साहब ने दे दिया है। सब साथी जानते हैं ओर जिन्होंने कोआप्रेटिव मिनिस्टर के इलैक्शन लड़े हैं यह बैकस के डायरैक्टर रहे हैं, उनको पता है कि बोर्ड आफ डायरेक्टर ही सारा फैसला करता है। हमारी तरफ से एक एम.डी. बैठता है या एकाध अफसर और जाता है। सारा काम स्वयं बोर्ड आफर डायरैक्टर ही करता है। बोर्ड ही भर्ती करता है। श्री रणसिंह मान भी बोर्ड आफ डायरैक्टर के चेयरमैन रहे हैं। इन्होंने भी भर्ती की थी। इनके बोर्ड पर सरकार का कितना अंकुश था? गंगाराम जी भी हाउस में नहीं हैं, उनको भी पता होगा कि भर्ती करते वक्त सरकार का कितना अंकुश था। हां, अगर भर्ती करने में चेयरमैन या बोर्ड आफ डायरैक्टरर्ज कोई गड़बड़ी करता है, तो सरकार उसकी इन्क्वायरी करवा सकती है। (व्यवधान व शोर)

श्री रण सिंह मान: आन ए प्वायंट आफ आर्डर सर। स्पीकर साहब, वित्त मंत्री जी ने जो कुद यहां पर कहा है, मैं उसके बारे में यह कहना चाहता हूं कि प्रैक्टिकली सब परपजिज के लिये सरकार का उसके ऊपर दखल होता है। (व्यवधान व शोर)

चौ. खुरशीद अहमद: मैं मानता हूं कि पूरा दखल होता है लेकिन तब दखल होगा जब कोई आदमी वहां पर गड़बड़ी कर

लेगा। तो ही उसकी हम इन्क्वायरी शुरू करवा सकते हैं। सरकार किसी भी मैलाफाइडी काम के बारें में आटोनौमस बोर्डज को डायरैक्शन दे सकता है। मैं यह नहीं समझता कि अगर कोई बोड्र का बोनाफाइडी एक्शन होगा, उसके बारे में भी सरकार कोई कार्यवाही करेगी। सरकार ने बोर्डज को यह पावर्ज दे रखी हैं कि वह लोगों के साथ न्याय करें और अगर कोई बोर्ड न्याय करने की बजाये, कोई गलती करता है या गड़बड़ी करता है तो हम उनके खिलाफ एक्शन भी लेते है। हमने अब तक का रिकार्ड देखा है। हमने बहुत से आफिसरों को नोटिस भी दिये हुए हैं और एक्शन भी लिया जायेगा। ऐसा तभी किया जाता है अगर कोई एक्शन मैलाफाइडी हो। अगर उनका कोढ्र एक्शन बोनाफाइडी हो, तो सरकार उनके खिलाफ एक्शन नहीं लेती। एक बात का मुझे बड़ा अफसोस है कि बाबू मूल चन्द जैन जी ने अपने मुहं से ठाकुरवाद और विश्नोईवाद की बात कहीं। (व्यवधान व शोर)

श्री मूल चन्द जैन: आप कमीशन क्यों नही बिठाते।

चौ. खुरशीद अहमद: कमीशन कौन से बोर्ड के खिलाफ बिठायें।

श्री सुरेन्द्र सिंह: सारे बोर्डो और कार्पोरेशन्ज पर कमीशन बिठाओ।

चौ. खुरशीद अहमद: मैं यह समझता हूं कि इनके ऊपर तो सोहबत का असर है ..... (व्यवधान व शोर) ..... मैं सारी की सारी बातें आपके सामने रखना चाहता हूं (व्यवधान व शोर)

चौ. संत कंवर: हम तो यह कहते हैं कि अगर आपने जाति–पाति न फैलाई हो, ठाकुरवाद बिश्नोईवाद या पैसावाद न फैलाया हो तो आप पहले कोआप्रेशन डिपार्टमैंट पर ही कमीशन बिठा दो। खुल्लम खुल्ला इस बात की इन्क्वायरी हो जाये तो तथ्य सामने आ जायेंगे।

डा. मंगल सैन: आन ए प्वायंट आफ आर्डर, सर। स्पीकर सहाब, जब एक मामले में अपोजीशन की तरफ से मांग होती है, ट्रेजरी बैंचिज के एक आनरेबल मैम्बर भी मांग करते हैं और वजीर सहाब भी तैयार हैं तो कमीशन बिठाने में क्या हर्ज है। (व्यवधान व शोर)

चौ. खुरशीद अहमद: स्पीकर साहब, संत कंवर जी तो इस बात में बड़े माहिर हैं कि किसी चीज का किस तरह से मुख्तसिर में जवाब दिया जा सकता है। जब ये जाट हाई स्कूल, रोहतक में पढ़ते थे तो यह उस पेज को किताब से फाड़ दिया करते थे जो मास्टर पढ़ा चुकता था ताकि मास्टर कहीं उसमें से कुछ पूछ न बैठे। जहां तक बाबू मूल चन्द जैन जी का सम्बन्ध है, उनकी तो हवाई बातें हैं। (व्यवधान व शोर) बाबू मूल चन्द जैन जी ने एक वर्कचार्ज्ड एम्पलाईज के बारे में जिक्र किया। उन्होंने

यह भी कहा कि वर्क चार्ज्ड एक्पलाईज के बारे में गवर्नमैंट की नीति साफ नहीं है। (व्यवधान व शोर)

श्री मूल चन्द जैन: स्पीकर साहब, मंत्री जी बेरोजगारी के बारे मैं सिर्फ आंकड़े देकर ही चुप हो गये, हमारी असली बातों का तो जवाब दें।

चौ. खुरशीद अहमद: उसका हल भी बात दूंगा। आप सब्र रखिये। स्पीकर साहब, वर्क चार्ज्ड एम्पलाईज के बारे में जो इन्होंने कहा है, उस बारे में हमारा कहना यह है कि हम इस बारे में पहले ही फैसला कर चुके है कि जिनकी सर्विस 31 दिसम्बर, 1981 को 4 साल की हो जायेगी उनकी रैगुलेराईज कर दिया जायेगा और पे–कमीशन ने जो हर आदमी के लिये तनख्वाह रिकमैंड की है, आटोमैटिकली उसके लिये यह एन्टाईटल होंगे। एक बात मैं संत कंवर जी से और कहूंगा कि वे बजट फाड़ने के अलावा भी कुछ सीख लें। संत कंवर जी यही नहीं कि आपने बाबू मूल चन्द जैन जी का बजट फाड़ा, आप हमारा भी बजट फाड़ सकते हो, लेकिन मैं यह कहता हूं कि इसके अलावा भी कुद अच्छी बातें सीख लें। इन सब दिक्कतों के बावजूद भी हमने जनता को हर तरह से रिलीफ देने की कोशिश की है। जितनी चीजें हम उनके लिये कर सकते थे, की हैं। तमाम की तमाम चीजें हमने उनको मुहैय्या की हैं। यह हमारे पूरे साल की परफोरमैंटस है।

वधवा साहब ने एक बहुत बड़ा गिला हमसे किया कि हरियाणा गवर्नमैंट ने 80 परसैंट बजट एडमिनिस्ट्रेशन पर लगाया है और 20 प्रतिशत बजट डिवैल्पमैंटल एक्टीविटीज पर लगाया है। जनाब, अब मैं संत कंवर जी की तरह से इनको क्या कहूं। किताबें तो ये बहुत पढ़ते हैं लेनिक उल्टी पड़ गये हैं। हकीकत यह है कि हरियाणा की इस बात को रिर्जव बैंक ने भी माना है कि 78 प्रतिशत हमारा खर्चा डिवेल्पमेंटल एक्टीविटीज पर हुआ है। (व्यवधान व शोर) .... स्पीकर साहब मैं आपको यह बता सकात हूं कि हमारे बजट का 78 प्रतिशत डिवैल्पमैंटल एक्टीविटीज पर खर्च हुआ है और 20 प्रतिशत नान–डिवैल्पमैंटल एक्टीविटीज पर खर्च हुआ है। इस चीज को देखते हुए आज बजट की स्थिति यह है कि डिवैल्पमैंट के लिए हम टॉप प्रायरिटी पर खर्च कर रहे हैं और बाकी खर्च उसके बाद आते हैं। इसके बाद चौ. राम लाल वधवा जी यह कहने लग कि पब्लिक डैट बहुत ज्यादा हो गया है।

चौ. राम लाल वधवा: यह तो आपके आंकड़े दिये हैं, यह कौन सी किताब में दिये हुए हैं।

चौ. खुरशीद अहमद: यह हर किताब में दिये हुए हैं हर किताब से बात साबित हो जाएगी कि 20 प्रतिशत जो खर्चा आपने डिवैल्पमैंट के कामों पर बताया हैं, वह किसी भी किताब में नहीं है बल्कि वह आपके अपने दिमाग की देन है। मैं पब्लिक डैटस के बारे में चौ. राम लाल वधवा जी ने एतराज उठाया कि पब्लिक डैट बहुत ज्यादा हो गया। पब्लिक डैट को बिल्कुल ही खत्म कर दिया

जाए, यह तो मुमकिन नहीं है। स्पीकर साहब, मैं आपकी इजाजत से हाउस के सामने एक बात रखना चाहूंगा कि किसी भी स्टेट की डिवैल्पमैंट के काम पब्लिक डैट के बगैर नहीं होते। यह फार्मूला सारी स्टेट में आप्रेट करता है। वैसे चौ. राम लाल वधवा जी तो पलानिंग बोर्ड के डिप्टी चेयरमैन भी रहे हैं। नैशनल डिवैल्पमैंट कौंसिल की जब भी मीटिंग होती हे तो आम तौर पर डिप्टी चेयरमैन आफ दी प्लानिंग बोर्ड हर मीटिंग को अटैण्ड करता है। उन्होंने भी एक दो मीटिंगें अटेंड की होगी। उस में हर स्टेट इस चीज को रखती है कि हमें फ्लां फ्लां चीज के लिए इतना लोन चाहिए। पब्लिक लोन जो गवर्नमैंट लेती है, उसको गवर्नमैंट आफ इंडिया मौनिटर करती है। वह स्टेट गवर्नमैंट को इस आधार पर इजाजत देती है कि उसकी रिपेईग कैपेसिटी कितनी है। हरेक गवर्नमैंट अपना काम चलाने के लिए पब्लिक डैट की इजाजत गवर्नमैंट आफ इंडिया से लेती है। गवर्नमैंट आफ इंडिया को और रिजर्व बैंक को भरोसा है कि हमें पब्लिक डैट की इजाजत मिलती है और वह इजाजत लेकर हम अपनी गवर्नमैंट के सारे डिवैल्पमेंट के कामों को चलाते हैं। अगर हम ऐसा न करें तो हमें टैक्स लगाने पड़ेंगे और गरीब आदमियों की गर्दन दबोचनी पड़ेगी। हम यह जानते हैं कि हमारे प्रदेश के लोग गरीब हैं, इसलिये हम यह चाहते हैं कि उस पर टैक्स न ही लगाना पड़े तो ठीक है ..... (व्यवधान व शोर) ..... हमारे साथी राव बंसी सिंह ने बड़े कस्ट्रेक्टिव सुजैशन्ज दिये हैं। उन्होंने बहुत सी बातें कहीं। एक

बात उन्होंने यह भी कही और मेवात में बैकवर्ड एरिया के बारे में बहुत वकालत की कि जो एरिया होडल से लेकर (व्यवधान व शोर)

चौ. राम लाल वधवा: पर कैपिटा इन्कम की बात भी कह दो।

चौ. खुरशीद अहमद: पर कैपिटा इन्कम के करें में एक बात चौ. राम लाल वधवा जी ने कही कि हमारे बजट एट ए ग्लान्स में जो यह फिगर्ज दी जाती थीं, वह इस साल नहीं आयीं। वह इसलिये नहीं आयी क्योंकि गवर्नमैंट आफ इण्डिया ने सारी स्टेटस को यह हिदायत की कि पर कैपिटा इन्कम का अब तक कैलकुलेशन के लिये जो बेस ईयर था, वह 1960–61 रहा हैं इस साल वहां से यह आया है कि 1970–71 को बेस ईयर मानकर फैसला करना पड़ेगा। स्पीकर साहब, सारे आंकड़े इक्टठे करने हैं। ऐसे तो कहा नहीं जा सकता कि जैसे इन्होंने कह दिया कि केवल बीस परसैन्ट डिवैल्पमेंट के काम पर खर्च किया जाता है। 1970–71 के आंकड़े गवर्नमैंट आफ इण्डिया से लेने हैं और अपने यहां पर भी वैरिफाई करने हैं। पापूलेशन भी देखनी है (शोर व व्यवधान) इस बेस को मानते हुए हमारे यहां स्टेटिसटिक्स कलैकट करने का काम तकरीबन पूरा हो चुका है जब हमारे पा आल इण्डिया स्टेटिसटिकस आ जाएगा तो हम गजट नोटिफिकेशन भी कर देंगे और आपको भिजवा देंगे अगर 1960–61 के बेस पर देना होता तो नई फिगर कलैक्ट नहीं करनी पड़ती लेकिन अब बेस भी बदलना पड़ गया है इसलिये इस काम में कुछ देर लग सकती है।

We will have to go into deeper calculations which may be presented to Mr. Wadhwa if he can follow them. राव बंसी सिंह ने दो तीन डिमांडज अपने एरिया के बारे में रखी है। स्पीकर साहब, मैं हाउस को बताना चाहता हूं कि सरकार उन पर गौर कर रही है। इन्होंने मिनी सीमेन्ट फैक्टरी के बारे में कहा। उस बारे में रिसर्च कर ली जाएगी और जब कोई नतीजा उसका आएगा और अगर वह रैमूनरेटिव स्कीम होगी तो गवर्नमैंट उसको एग्जामिन करा कर जो भी उचित कार्यवाही होगी वह कराएगी।

स्पीकर साहब, इन्होंने अपने एरिया के बारे में कहा कि वह बैकवर्ड एरिया है और साथ उसके लिये एक डिवैल्पमेंट बोर्ड की स्थापना की मांग की है। स्पीकर साहब, उसके लिए एक कमेटी बन गई है और वह देखेगी कि उस इलाके के लिए क्या करना है। गवर्नमैंट जो नई स्कीम वहां के लिए जुटा सकेगी वह जुटाएगी।

स्पीकर साहब, हमारे सामने एक मसला जो बारबार आ रहा ळै और जिसको स्वामी जी ने उठाया है उसके बारे में, मैं कहना चाहता हूं। स्वामी जी ने कहा कि बजट के साथ वह इंफरमेशन नहीं लगी जिससे पता लगे कि हरिजनों को क्लास बन, टू, थ्री और फोर में कितनी नौकरियां दी गई हैं। मैं स्वामी जी से कहना चाहता हूं कि अगर वह पेज 550 पर देंखे तो उनको यह सारी इंफरमेशन मिल जाएगी जिसको वह चाहते हैं .....

स्वामी अग्निवेश: स्पीकर साहब, पेज 550 पर जो आंकड़े दिए हैं, वे तो 1980 के हैं। मार्च 1981 तक के आंकड़े नहीं दिए हैं। मैं खुरशीद जी से कहूंगा कि वे भी देख लें।

चौ. खुरशीद अहमद: उसके बाद के आंकड़े अगले साल आएंगे। (शोर एवं व्यवधान)।

Mr. Speaker: This statistical return has nothing to do with the Budget.

स्वामी अग्निवेश: अध्यक्ष महोदय, वे तो पुरानी फिगर्ज बता रहे हैं (शोर एवं व्यवधान)।

श्री अध्यक्ष: वे फिगर्ज गल्त नहीं बता रहे हैं। 1980 तक की फिगर्ज हैं और 1981 तक की फिगर्ज कम्पाइल नहीं की हैं।

चौ. खुरशीद अहमद: स्वामी जी आप 1981 की फिगर अपने साल देख लेना। स्पीकर साहब, स्वामी जी ने जनरेलाइज किया और कहा कि हरियाणा में बौडिड लेबर है। स्पीकर साहब, हरियाणा सरकार का इस मामले में यह स्टैन्ड रहा है कि हरियाणा में बौंडिड लेबर नहीं है और उसके लिए कमेटी भी बनी हुई है। विजिलैंस कमेटी के बारे में कहा गया कि वह फलां तारीख को बनी। मैं कहना चाहता हूं कि यह एक हकीकत है कि एक कमेटी अवश्य है फिर वह चाहे किसी भी तारीख को बनी हो। स्पीकर साहब, कमेटी को एक केस के बरे में स्पेसिफिकली बताया कि लाडवा के भट्ठे पर मजदूर गए और फिर वहां से वापिस चले

गए। स्पीकर साहब, कुछ लेबर तो नवम्बर, 1981 में आई और कुछ लेबर दिसम्बर, 1981 में आई वह 16 फरवरी, 1982 की शाम को वापिस चली गई और दूसरी 24–25 फरवरी को वापिस चली गई । इन दो चार महीने में इस लेबर को कैसे बौंडड लेकर कहा जा सकता है। स्पीकर साहब, हरियाणा में बाहर से जो लेबर आती हे वह पहले ही अपने राशन पानी के लिए थोड़ी बहुत पैसा ले`ती है तभी वह अपने घर को छोड़कर आती है भट्ठे आमतौर पर जंगल में होते हैं। इन भट्ठों में काम करने के लिए जो भी आएगा वह कुछ न कुछ एडवान्स लेकर ही आएगा। यह कोई शहर की मजदूरी तो है नहीं कि सुबह से शाम तक काम करने के बाद वह शाम को मजदूरी लेगा। अगर किसी को जंगल में लेकर जाएंगे तो जरूर ही वह एडवांस लेगा। मैं यह कहना चाहता हूं कि ये मजदूर वालन्टरी आते हैं कोई जबरदस्ती तो उनको लाता नहीं है फिर मेरी समझ में नहीं आता कि सिर्फ एडवान्स ले लेने से कोई बन्धुता मजदूर कैसे बन गया। लेबर मिनिस्टर ने बताया था कि हालत यह है कि अगर किसी ने दो दिन का एडवान्स ले लिया तो उसको भी कह दिया कि यह बन्धुवा मजदूर है। ऐसी परापोजीशन कि दो दिन का एन्वान्स ले लेने से बौंडिड लेबर हो जाए, मेरी समझ में स्पीकर साहब, यह बात नहीं आती। अगर ऐसी बात होती रही तो फिर भट्ठों का काम तो सारा सस्पैन्ड करना पड़ेगा .....
..

स्वामी अग्निवेश: अध्यक्ष महोदय, इस बारे में सुप्रीम कोर्ट की जजमैंट है ओर मेरे पास सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट की रिपोर्ट भी है कि वे बन्धुवा मजदूर है इनको सुप्रीम कोर्ट के आर्डर्ज की इज्जत करनी चाहिए चाहे सुप्रीम कोर्ट के अन्तरिम आर्डर्ज हैं (शोर एवं व्यवधान)।

चौ. खुरशीद अहमद: सुप्रीम कोर्ट का अगर कोई फाइनल जजमैंट मेरे सामने होताा तो माना जा सकता था (शोर एवं व्यवधान)।

स्वामी अग्निवेश: अन्तरिम आर्डर्ज हैं। .....

चौ. खुरशीद अहमद: अरग सुप्रीम कोर्ट में यह केस चल रहा है ओर इसी बात पर चल रहा है जिनका स्वामी जी ने जिक्र यिका और इनको सुप्रीम कोर्ट के हर आर्डर का पता है सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि इनको यह भी पता है कि जबानी क्या आर्डर ळै ऐसी हालत में इनको हाउस के जिक्र नहीं करना चाहिए था। जब इन्होंने जिक्र कर ही दिया तो मैं उस हद तक ही जवाब दूंगा जो सुप्रीम कोर्ट से ताल्लुक नहीं रखता क्योंकि सुप्रीम कोर्ट के अन्तरिम आर्डर में कहा है "the writ petition is adjourned to 2nd April, 1982" अभी तो यह ऐवीडेन्ट नहीं कि सुप्रीम कोर्ट ने उनको बौंडिड लेबर माना भी है या नहीं। मैं तो उसी हद तक जवाब दूंगा जिस हद तक सुप्रीम कोर्ट का आर्डर है .....

स्वामी अग्निवेश: आन ए प्वायंट आफ आर्डर। अध्यक्ष महोदय, ये हाउस को मिसलीड करने की कोशिश कर रहे हैं। मेरे पास 5 मार्च का सुप्रीम कोर्ट का जजमैंट है। ये हाउस को मिसलीड करने की कोशिश न करें। इनके खिलाफ प्रिविलिज बनता है। (शोर एवं व्यवधान)।

श्री अध्यक्ष: यह कोई प्वायंट आफर आर्डर नहीं है। अगर प्रिविलिज बनता है .....(शोर एवं व्यवधान)।

स्वामी अग्निवेश: अध्यक्ष महोदय, बौंडिड लेबर रिलीज की गई है (शोर एवं व्यवधान) यह गल्त कह रहे हैं। इनके खिलाफ प्रिविलिज बनता है .....

श्री अध्यक्ष: अगर प्रिविलिंज बनता है तो बनाकर दीजिए I will examine it.

डा. मंगल सैन: स्पीकर साहब, मैं आपकी रूलिंग चाहता हूं कि सुप्रीम कोर्ट का आर्डर चाहे अन्तरिम हो या फाइनल हो, क्या अन्तरिम आर्डर को इनको औनर नहीं करना चाहिए?

13.00 बजे

श्री अध्यक्ष: जो अन्तरिम आर्डर इन्होंने पाया है I have neither read the interim order of the Supreme Court not it has been put up to me. I will be the last person to give ruling on Supreme Court Order. (interruptions by Dr. Mangal Sein) This is n point of order please.

चौ. खुरशीद अहमद: स्पीकर साहब, जब यह केस सुप्रीम कोर्ट में चल रहा था तो इनको यहां पर नहीं लाना चाहिए था। (शोर एवं व्यवधान)।

स्वामी अग्निवेश: अध्यक्ष महोदय, सुप्रीम कोर्ट में कोई ओर मसला था (व्यवधान)

Ch. Khurshid Ahmed: He is trying to mislead the House. He is misleading. (interruptions)

श्री अध्यक्ष: मैम्बर साहेबान, अगर कोई मसला सुप्रीम कोर्ट में है और वह सब–जूडिस है तो उसका जिक्र इस हाउस में कतई नहीं अना चाहिये।

चौ. खुरशीद अहमद: स्पीकर साहब, स्वामी जी ने यहां गुलाबों नामक एक लड़की का जिक्र किया कि उसकी पुलिस की मार के कारण डैथ हो गयी लेकिन जो पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट थी उसके मुताबिक तो यह है "No injuries were found, death was caused due to T.B." स्पीकर साहब, मैं इनको बताना चाहता हूं कि टी.बी. के मरीज की मौत एक दिन में नहीं हो जाती। उन्होंने पिछले दो महीनों से हमारे हरियाणा की धरती पर कदम रखा था और वह कई सालों से बीमार आ रही थी जिसके कारण उसकी डैथ हो गई। It is a slow consuming death.

स्वामी अग्निवेश: अध्यक्ष महोदय, इनसे पूछा जाए कि उसकी जांच के लिय क्या प्रबन्ध किया गया था? (शोर एवं व्यवधान)।

Mr. Speaker: I would request the Hon. Minister not to devote any time on a subject which has not relevancy to the Budget before the House.

चौ. खुरशीद अहमद: इसी वजह से स्पीकर साहब, मैं इस बात का जिक्र करना चाहता था कि बौंडिड लेबर की प्रोबलम हरियाणा क अन्दर एक ड्रामे के सिवाये और कुछ नहीं है और इन सारी बातों को हरियाणा के बाहर भी ड्रामाटाइज किया गया है। स्पीकर साहब, अगर इस तरह का वाक्या था तो पहले इस मामले की शिकायत डी.एम. के पास जाती ताकि हकीकत देखी जा सकते लेकिन जिस तरीके से ऐसी बात को उछाला गया है, यह कोई उचित बात नहीं है।

स्पीकर साहब, इसी तरह से एक और बात वधवा साहब ने यहां पर कही है और सरकार की डिवेल्पमैंट के कामों पर बडी नुक्ताचीनी की लेकिन उन्होंने कोई ऐसी तजवीज नहीं बतायी कि जिसकी वजह से स्टेट के रिसोर्सिज बढ़ सकते हो, जिससे न ही टैक्स लगाना पड़े और नही सरकार को कज्र लेना पड़े। हालांकि वधवा साहब प्लानिंग बोर्ड के डिप्टी चेयरमैन भी रहे हैं। उन्हें कोई ऐसा तजवीज सरकार को बतानी चाहिये थी कि जिससे कि स्टेट की इन्कम बढ़े और डिवेल्पमेंट के काम भी चलते रहें। इसी

तरह से चौ. रिजक राम जी ने कई एक बातें कही और बार बार एक बात को दोहरा यिदा कि सरकार का कितना एक्सपैन्डीचर प्लान पर और कितना नान–प्लान पर हुआ। उन्होंने कहा कि एडमिनिस्ट्रेटिव खर्चा तकरीबन दुगुना हो गया। इसलिये मैं उनकी जानकारी के लिये यह बताना अपना फर्ज समझता हूं कि दो सालों के अन्दर अन्दर 80 परसैन्ट के करीब हमारा डिवेल्पमेंट पर खर्च हुआ, और दूसरी तरफ 20 से 22 परसैन्ट के दरिम्यान हमारी स्टेट के एडमिनिस्ट्रेशन को मैनेज करने के लिये खर्च किया जाता हैं इसके साथ ही चौधरी साहब ने यह कहा कि सरकार को ईडा से लोन लेना चाहिये था, वर्ल्ड बैंक से क्यों लिया। मैं उनकौ बताना चाहता हूं कि हम बाहर से जो लोन लेते हैं चाहे वह ईडा से हो, चाहे वर्ल्ड बैंक से हो, उस पर रेट आफ इंट्रस्ट यूनीफार्म होता है। सैन्टर्लगवर्नमैंट भी वर्ल्ड बैंक से लोन लेती है और उसी रेट आफ इंट्रैस्ट से हमारे ऊपर इंट्रस्ट लगता है। मैं इनकी जानकारी के लिये यह भी बता देना चाहता हूं कि हम चाहे ईडा से लोन लें, चाहे वर्ल्ड बैंक से लोन लें, हम भारत सरकार द्वारा यह लोन लेते हैं।

इसके बाद हमारे माननीय बुजुर्ग चौ. हुड्डा साहब ने बोलते हुए कई बातों का जिक्र इस हाउस में किया। वे बेसिक चीजों पर ज्यादा जोर दे रहे थे उन्होंने बड़े ऊंचे विचार सदन के सामने रखे हैं जिसकी कि हमारे जैसा आदमी तो समझ नहीं सका। हां एक बात जो उन्होंने ड्रेनों के बारे में कही, वह जरूर

हमारी समझ में आ गयी यह तो वह बात हुई कि लिखे ईसा और उसको पढ़े खुदा इसी तरह कहे हुड्डा और समझे खुदा (शोर एवं व्यवधान)।

चौ. संत कंवर: स्पीकर साहब, यह बहुत बुरी बात है कि हमारे एक माननीय सदस्य, जोकि इस समय हाउस में उपस्थित भी नहीं हैं, के बारे में ऐसा कहा जा रहा है।

श्री अध्यक्ष: संत कंवर जी, वे तो हुड्डा साहब की तारीफ कर रहे हैं।

चौ. खुरशीद अहमद: स्पीकर साहब, मैंने तो उनकी तारीफ ही है कि वे इतनी ऊंची फिलौसफी की बातें यहां पर करते है कि चौ. संत कंवर की समझ में आ जाएं यह तो अगल बात है लेकिन हमारे जैसे आर्डीनरी दिमाग में वह बातें नहीं आई हैं, न ही आ सकती है (हंसी)। हुड्डा साहब, तो भारतवर्श से शुरू होकर एकदम चाईना पहुंच जाते हैं। कुरानशरीफ से एकदम आसमान में आ गये थे (शोर) लेकिन हमारे दिमाग में तो कुछ नहीं आया। जो उनकी ड्रेनों के सम्बन्ध में बात थी, वह जरूर हमारी और हमारे इस सदन के दूसरे सदस्यों की समझ में आ गयी है अगर हुड्डा साहब, यहां पर विराजमान होते तो वे सरकार को पालिसी को जरूर ही ऐप्रीशिएट करते – (शोर एवं व्यवधान)

स्पीकर साहब, हमारे आदरणीय बाबू मूलचन्द जैन जी ने भी अपने भाशण में बोलते हुए काह कि ट्रिब्यून जो अखबार है,

वह बहुत बड़ा अखबार है, उसाके सरकार ने एडवरटाईजमेंट देने कन्द कर दिये, उस अखबार के साथ डिसक्रिमीनेशन बर्ती गई है। स्पीकर साहब, मैं इस बार में आंकड़े आपके सामने यहां पर रखना चाहता हूं कि इंगलिश डेली को, जिनमें ट्रिब्यून अखबार भी है, उसको हमने 12 लाख 2 हजार 992 रूपये की एडवरटाईजमेंटस दी हैं जबकि बाकी टोटल अखबारों को 15 लाख 25 हजार 607 रूपये की एडवरटाईजमेंटस दी हैं अगर बाबू जी इसी को ही डिसक्रिमीनेशन कहते हैं तो हम क्या कह सकते हैं कि अकेले ट्रिब्यून को 12 लाख 2 हजार 992 और बाकी के सारे अखबारों को 15 लाख 25 हजार 607 रूपये का एडवरटाईजमेंट दी गई हैं। बाबू जी खुद ही फिगर्ज को देखकर इस बात का अन्दाजा लगा सकते हैं। यह फिगर्ज अप्रैल, 1981 से फरवरी 1982 तक की हैं।

Sh. Mool Chand Jain: Mr. Speaker, Sir, the hon. Minister is bagging the question.

जब से अखबार में प्लाटस की लिस्ट छापी गयी है तब से सरकार ने ट्रिब्यून अखबार के साथ इस तरह का एक्शन लेना शुरू किया है।

चौ. खुरशीद अहमद: जो लिस्ट मैंने बनायी है, वह जनवरी में ही छप चुकी है। आज अगर चण्डीगढ़ में एक ही पेपर की मानोपली हो तो हम माल लेते कि हमने उसी पेपर्ज को एडवरटाईजमैंट दे दिया लेकिन यहां चण्डीगढ़ से तो कई ओर नेशनल पेपर्ज भी निकलते हैं, दूसरे भी निकलते हैं तो उन सब

को इग्नोर करके हम एक ही अखबार को पैट्रोनाईज करें तो यह बात स्टेट पालिसी के विरूद्ध होगी।

चौ. राम लाल वधवा: स्पीकर साहब, क्या यह बात सच नहीं है कि * * * *

श्री अध्यक्ष: ऐसी कोई बात रिकार्ड न की जाए।

चौ. खुरशीद अहमद: स्पीकर साहब, जिस पेपर की ऐप्रोच इतनी है जो हमारी चीजों को तोड़ मरोड़ कर पेश कर (शोर एवं व्यवधान) आज के अखबार में उसने एक खबर छाप रखी है ..... (शोर एवं व्यवधान)

डा. मंगल सैन: स्पीकर साहब, आप एफ.एम. साहब को रोकिये। उन्हें किसी अखबार के खिलाफ यह नहीं कहना चाहिए कि वह अखबार तोड़ मरोड़ कर खबरे देता है जबकि वे अपने आपको यहां पर डिफेन्ड नहीं कर सकता। उस अखबार ने इनकी सही खबरों को शाया किया है तो इसलिये इस सरकार को परेशानी हुई है (शोर एवं व्यवधान) इनको किसी एक पेपर के बारे में ऐसा नहीं कहना चाहिए।

Ch. Khurshid Ahmed: The hon. Member himself pleaded for that paper and I am only replying to that.

स्पीकर साहब, आज इस अखबार में एक खबर छपी है, उस बारे में, मैं बताना चाहता हूं कि हाई कोर्ट में रिट तो दायर हुई हाउसिंग बोर्ड के खिलाफ ओर उसमें छाप रखा है हुड्डा के

खिलाफ। कितना बायसड पेपर है यह स्पीकर साहब? इस तरह से पेट्रनाइज करके उस पेपर पर डा. मंगल सैन अपना ही रंग चढ़ाते जा रहे हैं (शोर)

श्री अध्यक्षः मंत्री महोदय बहस का जवाब दें, यह सबजैक्ट अन्डर डिस्कशन नहीं है।

चौ. खुरशीद अहमदः स्पीकर साहब, मैं जनाब से बता रहा था कि वह कितना बायसड पेपर है।

चौ. संत कंवरः स्पीकर साहब, इसी ट्रिब्यून अखबार ने आज गंगा राम जी के बारे में एक बात लिखी है। फाइनैंस मिनिस्टर यह ठीक कह रहे हैं कि वह ऐसी वैसी बातें लिखता है।

चौ. खुरशीद अहमदः जनाब, हमारे साथी चौ. जगजीत सिंह पोहलू ने बजट की बहुत सी प्रोपोजल्ज के बारे में कहा कि गैप ज्यादा हे, वह तो हम मीट कर लेंगे। दूसरी बात उन्होंने कही कि यह इलैक्शन बजट है। मैं उनको बताना चाहता हूं कि इलैक्शन के बावजूद भी यह डिवैल्पमैंट का बजट है। पोहलू साहब यह मानेंगे कि कैथल में कोयल के नाम से उनकी सुविधा के लिए हम टूरिस्ट कम्पलैक्स बना रहे हैं। इसके बाद एक सवाल मेरे साथी कैप्टन मांगे राम जी ने फौजियों के बारे में उठाया।

बैठक का समय बढ़ाना

श्री अध्यक्ष: अगर हाउस सहमत हो तो सदन की बैठक का समय दस मिनट के लिए बढ़ा दिया जाए?

आवाजें: ठीक है जी बढ़ा दो।

श्री अध्यक्ष: बैठक का समय दस मिनट के लिये बढ़ाया जाता है।

वर्श 1982–83 के बजट पर सामान्य चर्चा (पुनरारम्भ)

चौ. खरशीद अहमद: जनाब, मैं कैप्टन साहब की जानकारी के लिए बताना चाहता हूं कि जो ऐक्स सर्विसमैन 70 साल के ऊपर की उम्र के हैं उनको हमारी तरफ से 50 रू. महीना फाईनैंशियल असिस्टैंस दी जाती है लेकिन हम यह समझते हैं कि यह राशि कम है इसलिये हमने 1.12.81 को गवर्नमैंट आफ इंडिया को लिखा कि यह राशि 50 रू. से बढ़ाकर 100 रू. कर दे ताकि हम हरियाणा के सैनिक बोर्ड की रिलीफ कमेटी की तरफ से उनको यह राशि दे सकें। जिस वक्त भी यह मंजूरी आ जायेगी, हम उसी वक्त ऐसा कर देंगे। हम तो यह चाहते हैं कि हमारे फौजियों को आखिर तक बढ़िया से बढ़िया सहूलियतें मिलें। हरियाणा का सैनिक बोर्ड फौजियों को जितनी सहूलियत देता है उसको देखकर गवर्नमैंट आफ इंडिया के रिप्रजैटैटिवज ने सैनिक बोर्ड की मीटिंग में हमारी बहुत प्रशंसा की है that ex-servicemen are being looked after better than in any other State. कैप्टन

मांगे राम जी न एक यह भी मांग की कि फौजियों के लिये डिफैंस कालोनीज बनाई जाएं। जहां पर ऐसी ज्यादा मांग है हमने फौजियों के लिए अलग से कलौनीयां बनाई हैं। जैसे गुड़गांव में हमने उनके लिए अलग से कालोनी बनाई है ओर इसका एक सैक्टर अब फरीदाबाद में बनाने जा रहे हैं। रोहतक के फौजियों ने हमसे कहा था कि हम कालोनी को खुद डिवैल्प करेंगे लेकिन शायद उनसे बात नहीं बनेगी। अगर वे हमें इसके लिए कहेंगे तेा हम रोहतक में भी गवर्नमैंट की तरफ से उनको डिफैंस कालोनी बना कर देंगे। हमें अपने फौजियों पर मान है जिन्होंने अपने जान हथेली पर रखकर हमेशा हमारे मुल्क की हिफाजत की है। रेवाड़ी के अन्दर भी ऐसी कालोनी अन्डर प्रोग्रैस है।

जनाब, उसके बाद जो और बातें हामरे सामने बाकी साथियों ने रखीं, मैं उनके बारे में भी बताना चाहता हूं। श्री देवी दास का प्वायंट था कि जो मंडियां दिल्ली के नजदीक पड़ती हैं, वहां से माल निकल कर दिल्ली चला जाता है और मंडी वालों को इससे नुक्सान होता है। दूसरी तरफ यह बात आई कि गेहूं बाहर नहीं जाने दिया जाता। मैं यह बताना चाहता हूं कि गेहूं बाहर जाने पर आज कोई पाबन्दी नहीं है। देवीदास जी और संत कंवर जी आपस में फैसला करके बता दें कि क्या ठीक है और कया गल्त है। उसके बाद गया लाल जी ने बोलते हुए हमारे सामने कुछ मुश्किलें रखीं कि आर.आई. इंडस्ट्री के लिये बैंको से लोन लैने के लिए मुश्किल पड़ती है और दूसरे लोन भी कम मिलता हैं

एक उन्होंने यह भी कहा कि रूरल सबसिडी कम रखी गई हैं। उन्होंने कहा था कि केवल 10 लाख रू. इस काम के लिए रखे गये हैं। शायद उनको फिग्गर देखने में गलती हुई है। वह रकम 27 लाख रू. के करीब है, जो इस काम के लिये बहुत ज्यादा है। इसके अलावा इस रकम को यूटीलाईज करने का सवाल भी गया लाल जी ने उठाया कि बैंकों में इस तरह की काफी दिक्कत आती है। बैंकों के साथ हमारी तालमेल कमेटी की मीटिंग हुई थी और मुख्यमंत्री जी द्वारा इम्प्रेस करवाने के बाद उन्होंने हमें यकीन दिलाया है कि जितनी भी एप्लीकेशज पैंडिंग पड़ी हैं उनको इस साल के अन्त तक सार्ट आडट कर देंगे। जिनकी एप्लीकेशंज मुकम्मल नहीं हैं उनको मुकम्मल करवा देंगे। जनाब, जहां दूसरे और मसलों का ताल्लुक है उनमें दवाइयों और बाजरे वगैरह की जो तमाम खरीदों फरोख्त होती है उसके बारे में भी बात आई। इसके बारे में मैं कफद नहीं कहना चाहूंगा क्योंकि इस बात का जवाब पहले ही आ चुका है। एक बात रघुनाथ गोयल जी ने वाटर सप्लाई स्कीमों के बारे में कही। उसके बारे में मैं बताना चाहात हूं कि जो स्कीमें उनके हल्के में सैक्शन हुई हैं उनके लिये पैसा भी एलोकेट किया जाएगा और अगले साल में उनको पूरा भी किया जाएगा। उसके लिये बजट में बहुत पैसा रखा हुआ है। गोयल सहाब बहुत बढ़िया आदमी है और बैठे भी आल इण्डिया लीडर के साथ है इसलिये उनकी बात तो हमें माननी ही पड़ेगी। जनाब, एक बात मेरे साथी राजेन्द्र सिंह जी ने कही कि फरीदाबाद में जुडिशियल कम्पलैक्स की तामीर जल्द की जाए। उसके सारे नक्शे

वगैरह बन चुके हैं और हम उस पर बहुत जल्द काम शुरू करेंगे। एस.वाई.एल. का जो फैसला हुआ है उसके बारे में भी उन्होंने हमें एप्रीशिएट किया है, मैं इसके लिये उनका धन्यवाद करता हूं कि वे बजट को बहुत अच्छी तरह से समझ पाए हैं। एक उनका प्वायंट यह था कि यू.पी. बार्डर के साथ जो जमना लगती है उस पर यू. पी. साइड से बांध बनने शुरू हो गये हैं, हमारी तरफ से भी बांध बनने चाहिएं। कमेटी की तरफ से हमारे सामने यह मामला रखा गया है। एक लम्बा बांध हमारी मुहब्बत पुर के सापा उनके पैरलल जाएगा। उस पर हमारे काम चालू कर दिया है ताकि हमारे लोगों को भी किसी तरह की डिफीकल्टी न आए।

जनाब, उसके बाद कामरेड शंकर लाल जी ने एक बात कही कि जो प्रोमोशन का मामला था उसमें कुछ आदमियों की रिवर्शन का खतरा बन गया है। यह बात चौ. लहरी सिंह जी ने भी रखी थी। मैं उनको बताना चाहता हूं कि कुछ रिट पैटीशंज की वजह से जोकि अभी कोर्ट में पैडिंग हैं और जिनकी मैरिटस में मैं नहीं जाना चाहूंगा के कारण यह दिककत आई है। गवर्नमैंट इस प्वायंट पर लड़ रही है और हरिजन व बैकवर्ड क्लासिज की डिफीकल्टी को दूर करने की कोशिश करेगी, उनकी प्रोमोशन को बरकरार रखा जाएगा। जो प्रोमोशन दी गई हैं, सबको डील करेंगे।

इस बजट के बारे में मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि जिन माननीय सदस्यों ने स्पैसीफिक प्वायंटस रखे थे उनको मैं

एक–एक करके डील कर चुका हूं। मैं जनरल बजट के बारे में यही कहूंगा कि इसकी तमाम कंसैटस को देखते हुए नचुरल क्लायमिटीज की ओर दूसरी तमाम चीजों के बावजूद हम अपनी सेविंग प्रोसैस पर हैं। मैं बाबू जी की कथनी से सौ फीसदी यकीन करता हूं कि बहुत अच्छा बजट पेश किया है। बाबू जी ने यह भी कहा है कि यह बजट हरियाणा स्टेट की तरक्की के लिय निहायत शानदार बजट साबित होगा। इसलिये मैं सारे हाउस से प्रार्थना करता हूं कि इस बजट को पास किया जाए।

श्री अध्यक्ष: अब सदन सोमवार 29 मार्च, 1982 प्रातः 11 बजे तक के लिये स्थगित किया जाता है।

13.30 बजे

(तत्पश्चात् सदन सोमवार 29 मार्च, 1982 प्रातः 11.00 बजे तक के लिये स्थगित हुआ)